रीति – शृंगार

सम्पादक

डा० नगेन्द्र, एम० ए०, डी० लिट्

प्रकाशक

गौतम बुक डिपो
नई सड़क, दिल्ली

प्रकाशक
गौतम बुक डिपो
नई सड़क, दिल्ली

१९५४
प्रथम बार

मूल्य पाँच रुपया

मुद्रक
यूनिवर्सिटी प्रेस
दिल्ली यूनिवर्सिटी दिल्ली

आमुख

रीति-शृंगार रीति परम्परा के शृंगार मुक्तकों का संकलन है। हिन्दी काव्य में रीति की परम्परा रस की अजस्र निर्झरिणी के समान प्रवाहित है। अभी तक उसका कोई प्रतिनिधि संकलन न होना वास्तव में हमारे साहित्य का एक बड़ा अभाव था—प्रस्तुत ग्रंथ के सम्पादन द्वारा इसी अभाव की पूर्ति का विनम्र प्रयत्न किया गया है। इन छन्दों का चयन रीति-काव्य के प्रायः सभी मुद्रित अमुद्रित ग्रंथों से किया गया है, और यथा-सम्भव रीति-शृंगार को रीति-शृंगार-विशिष्ट रीति-परम्परा का प्रतिनिधि संकलन बनाने का प्रयत्न किया गया है। रीतिग्रंथों का हिन्दी में आज घोर दुर्भिक्ष है—यहाँ की उपेक्षा के कारण मुद्रित ग्रंथ भी अप्राप्य हैं, अमुद्रित ग्रंथों के विषय में तो कहना ही क्या! ऐसी स्थिति में इस संकलन को तैयार करने में और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। इन छन्दों के चयन में मैंने रस को या यह कहना चाहिए कि शृंगार को ही प्रमाण माना है क्योंकि रीति काल पर उसका ही एकच्छत्र साम्राज्य था। सम्भव है इस संग्रह के कुछ छन्द शृंगार की परिभाषा में न बँध सकते हों, परन्तु उनका काव्य चमत्कार लक्षण की अपेक्षा अधिक प्रबल है। पारिभाषिक दृष्टि से आलम, घनानन्द, बोधा तथा ठाकुर की रचनाएँ भी रीति परम्परा के अन्तर्गत नहीं आतीं, किन्तु केवल इस शास्त्रीय कल्पना के आधार पर प्रमाता को इतनी अमूल्य काव्य-निधियों से वंचित करने का अपराध मेरी सहृदयता न कर सकी। ये कवि तो रीति-शृंगार के शृंगार हैं।

अन्त में, एक दुःख-भावना मुझे खटकती है और वह यह कि प्रस्तुत संग्रह में पाठ-शोधन पर मैं विशेष ध्यान नहीं दे सका। विभिन्न मुद्रित अथवा हस्तलिखित प्रतियों में पाठ-भेदों के भिन्न-भिन्न वैकल्पिक रूपों का प्रयोग होने से उनके विश्लेषण का प्रश्न भी सामने आता, परन्तु मेरे पास पाठानुसन्धान के लिए अपेक्षित साधन, समय तथा क्षमता तीनों का अभाव था, उधर इस कार्य के लिए समर्थ युक्त सहायक भी उपलब्ध नहीं था—परिणामतः मैंने इस प्रश्न का समाधान करने का प्रयत्न ही नहीं किया और इन प्रतियों में प्रयुक्त विकल्पों को यथावत् रख लिया है। इसका

आचार्यों ने वेद्यान्तर-स्पर्श-शून्य कहा है—अत मेरा विश्वास है कि सहृदय पाठक को छन्दों के रसास्वादन में इन छोटी-मोटी त्रुटियों का ज्ञान भी नहीं रहेगा।

इस ग्रंथ का आरम्भ गौतम बुक डिपो के स्वामी स्वर्गीय श्री दिलावर सिंह के जीवन-काल में ही हो गया था—दैव के विधान से इसकी समाप्ति से पूर्व ही उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई। आज यह आमुख लिखते हुए उनका वह हँसमुख चेहरा अनेक बार मेरी कल्पना में साकार हो गया है। उनकी दिवगता आत्मा को सजल स्नेहाञ्जलि अर्पित करता हुआ मैं यह रीति-शृंगार सहृदय पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करता हूँ।

दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली नगेन्द्र

विषय-सूची

क्रम संख्या	*विषय*	*पृष्ठ संख्या*

उत्तर-रीति

पूर्व-रीति

कृपाराम

(हित-तरंगिनी से)

अङ्ग अङ्ग जोबन कढ्यौ, नवल बधू के आज।
लघु सिसुता ज्यों देखिए, भोर-तरैयन साज॥

रिझवति हँसति लजाति पुनि, चितवति चमकति हाल।
सिसुता जोबन की ललक, भरे बधू तन ख्याल॥

नवल बधू तन तरुनई, नई रही है छाइ।
दै चसमा चख चतुरई, लघु सिसुता लखि जाइ॥

ऐसो हाँस न कीजिये, जाते रूसै हाल।
नवल बधू की ना मिटी, अजहूँ हिलकी लाल॥

अति प्रवीन यह सुंदरी, मोहन को हित आँकि।
सबरी दीठि बचाइ कै गई झरोखनि झाँकि॥

नाइन पै नाहिन बन्यो, देत महावर पाइ।
निरखि बधू की रूप सखी, हुलसि दियो जदुराइ॥

मोहिं रचै सोई करै, अति उदार प्यो जानि।
मो मनसा पर है सदा, करौं कौन विधि मान॥

खेलति चोर-मिहीचनी, निजु सखि डीठि बचाइ।
स्याम दुरे तिहि कोर में, दुरत लगे उर लाइ॥

छिन रोवै छिन में हँसै, छिन में रहु घबराइ।
गहै मौन छिन में बधू, छिन दृगनन उफनाइ॥

गए रूसि जदुपति सखी, निरखि [illegible]धि सो मान॥
पद्मराग तें विषम उर, उपजा बिरह कृसान॥

इन्द्रधनुष सी पति अधरन की शोभा ।
निरखि वधू-मन उपजो पूरन लोभा ॥

पति आयो परदेश तें, रितु बसंत की मानि ।
झमकि झमकि निजु महल में, टहलैं करै सु रानि ॥

आय माहर गौन ते, सुनि तुलसी उर नारि ॥
परम उदर कमान दृग, तरकस तनी निहारि ॥

लागत पलक पत्रास सर, अनियारे निज परि ।
मन-मृग घये मुनिन के, जाजा महित विसूरि ॥

— ०॥ ॥० —

राग

नल में दुरी हैं, जैसे कमल की कलिका द्वै,
उरजन ऐसे दीन्ही सरुचि दिखाई सी
राग करि साँझ सी सोहाई तरुनाई आई,
लरिकाई साँझ कछु में न लखि पाई सी ।।
स्याम की सलौनो तन, तामें दिन द्वैक माँझ,
फिरी ही चहत मनमथ की दुहाई सी ।
सीसी में सलिल जसे, सुमन पराग तैसे,
सिसुता में झलकति जोबन की झाँई सी ।।

मृगहू न सरस सिराजत बिसाल दृग ,
देखिए न अति दुति नीलहु के दल मैं।
राग घन दुज से लसत तन आभूषन ,
ठाढ़े द्रुम छाँह देख कै गई चिकन मैं ।।
घरा चित चाय भरे शोभा के समुद्र माँझ,
रही ना सभार दशा औरे भइ पल में
मन मेरो गरुआ गयो री बूड़ि मैं न पायो,
नैन मेरे हलुये तिरन रूप-जल मैं ।।

पानी मोहैं सोहै ताँकी तिनन मन माहै,
वारो मोती बेसर अधर पर ढरको ।
कहैं कवि गंग तेरे उरनि उचनि कुच
गति न रहत निरखत भरा भर को ।।
मारा की उपमा तैं मदन नैन मइ ,
मनी सोमा लै रहया तिल कपोल पर को
पंकज के बीच आली अति मो समाइ तहाँ,
मानो री निद्रि छौना बैठ्यो मधुकर को

गर्दन की मुगट बाम बैदही को सेर धार्यो
मुख उर चंद चोर्यो नाग्या चागी कोर का।
निगनि के नैन चार्यो दिशनि के चैन धार्यो,
चाँट अर लाज जोर्यो देन न्दीर ही र्द ।।
यहे करि मग चैना नार तें मुगटें लाई,
भाह ता दमान दम अनु र क तीर जी ।
ना तुम घट हे पुरातत्त क हैया नू पै,
नतनि की चागी रहा ह्रुगनि अहीर की ॥

अग ग अग आँगी भोगी अर अनुराग भीज,
अधर तनार भीज विद्रुम मे अपर ।
गनि भीजी अम्बर सरज गहे माहँ भा री ,
लाज भीनी निरनि प्रेम भीजी दमर्क ॥
आरी लग न गोरि दुरि देरि मगी चीट दन्द ,
आर गेंदिर फ निगि दोम मन मम्मर ।
दमन विदूर भाग पृथि के निलाम गग
गग भीबी आदुन दुमन भीजी अमर्कै ॥

आन्न मन भावने वे विविधि विल्लावने जे,
सकल सुहावने डरावने से कै गया।
फूले फूले फूलनि में सेज क दकूलनि में,
कालिंदी क कूलन निसासी विस वै गयो ॥

धीर न धरति घरी दरस विन जाति मरी,
ऐसी रङ्क ऊरी दीयो घाइनि में नौन है।
सुधि-बुधि टरी मानों साइ उग धरी जीव,
नगी अरवगी न गहति क्यों हूँ मौन है ॥
लाज परहरी खरी उघरी न डरी काह,
कहै नरि गग ममुझहि सखी सा न है।
नौन टेन परी साढ्यो घरी कहै हरी,
पूछ्र सहचरी प्यरी हरी तैरो कौन है ॥

हा हा नेकु आइ लेहु टूट लेति तेरो नेहु,
मेहू हवै दिसाइ देहु डोरू ज्यों दगत है।
कहै नरि गग काह व्याकुल इतर मान,
नाउ की कनाई कहाँ करेजे लगति है ॥
कोयल अजग डार बोलत डहारी लागे,
डहडही जोह जी में डाह सी लगति है।
नृप विनु सूनी गति कारी साँपु न्य है नाति
रति सेज देगि देसि छात उमगति है ॥

बैठी हैं सखिन सग पियको गमन सुन्यो
सुरके मयूह में वियोग आग भरको।,
गग कहै त्रिविध सुगघ लै बह्यो समीर,
लागत ही ताके तन भई व्यथा ज्वर की ॥
प्यारी को परसि पौन गयो मानसर पै सु
लागत ही औरै गति भई मानसर की।
ततर जरे औ सेवार जरि छार भइ,

सेत सरीर हिये बिष स्याम,
कलापन री मन जान जुहाई।
सीप मरीचि दसौ दिसि फैलति,
काटत जाहि बियोगिन ताइ॥
सीस तें पूछ लौं गात गर्‌यो पै
डसे बिन ताहि परै न रहाई।
सेस के गोतके ऐसे हि होत हैं,
चन्द नहीं या फनिन्द है माई॥

घरई निठुरि मिली तू न मिली प्रीतम सौं,
राग करि रहै रता किय मान ठान री।
अथय नछत्र ससि अथई न तेरी रिस,
तू न परसन परसन भया भान री॥
तू न साना सुरस सोला रन औ गुलाब सुरस,
चली सीरी बायु तू न चली, भा बिहान री।
राति सर घटी नाहीं करनी ना घटी तेरी,
दीपक मलीन न मलीन तेरो मान री॥

अधर मधुर जैसे बदन अधिकानी छवि,
बिधि मानो बिधु कीन्हो रूप को उदधि कै।
चाह दगि आवत अजानक सुगन्धि पर्‌यो,
बदन छपाइ मतियान लीन्हीं मधि कै।
मारि गई राग हग लाग बेधि गिरिधर,
आधी निसरी मैं अधीन कीन्हों अधिकै।
धार बधि रुधिर रहे का गोत लेत फेरि,
रुधिर रहु न सोर लीन्हीं फरि बधि कै।

रीति

केशवदास

केशोदास लाख लाख भाँतिन के अभिलाष,
बारि देखी जागी न बारि हिय हारी सी।
राधा हरि के री प्रीति सब ते अधिक जानि,
रति रतिनाह हू में देखी रति थोरी सी।
तिन हूँ में भेद न भवानि हूँ पै पार्यो जाइ,
भारती की भारती है कहिबे को भोरी-सी।
एकै गति एक मति एकै प्राण एकै मन,
देखिबे को देह द्वै हैं नैनन की जारी सी॥

जो हो कहूँ रहिये तो प्रभुता प्रगट होत,
चलन कहौं तो हित हानि नाहीं सहना।
भावै सो करहु तो उदास भाव प्राणनाथ,
साथ लै चलहु कैसे लोकलाज बहनो।
केशौराय की सौं तुम सुनहु छबीले लाल,
चले ही बनत जो पै नाहीं आजु रहना।
जैसिये सिखाओ सीख तुमही सुजान पिय,
तुमही चलत माहि जैसो कछू कहना॥

पूरण कपूर पान खाये कैसी मुखबास,
अधर अरुण रुचि सुधासों सुधारे हैं।
चित्रित कपोल लोल लोचन मुकुर मैन,
अमल कमल अमलनि माहि मारे हैं।
भृकुटी कुटिल जैसी तैसी न किये हू होहि,
आँजी ऐसी आँखें केशौराय हेरि हारे हैं।

काहे को शृंगारि कै निगारति है मेरी आली,
तेरे अङ्ग सहज शृंगार ही शृंगारे हैं ॥

भूषण सकल घनसार ही कै घनश्याम,
कुसुम कलित केसरहि छवि छाई सी।
मोतिन की लरी शिर, कंठ कंठमाल हार,
और रूप ज्योति जात हेरत हेराई सी।
चंदन चढ़ाये चारु सुन्दर शरीर सब,
राखी शुभ शोभा सब बसन बसाई सी।
शारदा सी देखियतु देखौ जाइ केशौराय
ठाढ़ी वह कुँवरि जुन्हाई में अन्हाई सी।

शिशुता-सहित भई मंदगति लोचननि,
गुणनि सों वलित ललित गति पाई है।
भौंहनि की होड़ाहोड़ ह्वै गई कुटिल अति,
तेरी बानी मेरी रानी सुनत सुहाई है।
केशौदास मुखहास ही सिखे ही, कटि तटि—
छिन छिन सूछम छबीली छवि छाई है।
बार बुद्धि बालनि के साथ ही बढ़ी है बीर
कुचन के साथ ही सकुच उर आई है॥

कोमल कमलता की रंगभूमि कैधौं यह,
शामियत आँगन के शोभा के सदन को।
अरुण दलनि पर कीनो कै तरणि कोप,
जीत्यो किधौं रजोगुन रानिन के गन को।
पल पल प्रणय करत किधौं केशौदास,
लागि रहयो पूरवानुराग पिय मन को।
ए री वृषभानु की कुमारी तेरे पाँय सोहैं
जावक को रंग कै सुहाग सौतिजन को॥

कोमल अमल चन चीकने चिकुर चारु
चितये ते चित चकचौंधियत केशौदास ।
सुनहु छबीली राधा छूट त छबि आनि,
कारे कटकारे हैं सुभाव हीं सदा सुबास ॥
सुनिकै प्रकास उपहास निसि-बासर कौ
कीनौ है मुकरान सुबास जाय कै अकास ।
यद्यपि अनेक चन्द्र माथ मोर पच्छ तऊ
जात्यो एक चन्द्र मुख रूप तेरे रूपराम ॥

तन आपने भाये शृंगार नहीं,
ये शृंगार शृंगार शृंगारे वृथा ही ।
मन भूषण नैननि भूल हैं जाकी
मु ता पै शृंगार उतार न जाहीं ॥
सार होत सुगंध नहीं तो सुगंध,
सुगंध में जाति सुगंध वृथा ही ।
मनि ताहि ते हैं मन भूषण भूषित
भूषण तो तुर भूषित नाहीं ॥

लोचन नीर चुभी रति रात की,
कजर कैसे हू जानि न जाती ।
मानहु मेरे गही अनुरागिनि,
कुंकुम पंक अलकनि गाढी ॥
मग चो लागि रही तनुना जनु,
यों धुनि नीन निराव री चारा ।
मर ही मानौ हिय रह मूँघति
यों अरविन्द दिय मुख ठाढी ॥

नैन निरोन दुराइ कहान,
चितोवनि ही चित चालिर नाही ।

जानि परी हसि बोलति, भीतर
माजि गइ अवलोकति मोही ॥
बूझिबे की जक लागी है काहहि,
केशव क रचि रूप लिलोही।
गोरस की सा नना री सों तोहि,
किनार लगी कहि मेरी सों कोही ॥

मोहन मरीचिका सो हास घ स र कैसो,
वास मुख रूप कैसी रेखा अवदात ह।
केशोदास चली तो निसेणी सी बनाइ गुही।
जामे मेरे मनोरथ मुनि से अन्हात हैं ॥
नेह उरझे से नैन देखिबे को विरझे से।
त्रिकुटी सी भौहें उझके से उरजात हे।
दनी सी बनाई निधि कौन की है जाई यह,
तेरे घर जाइ आजु कही कैसी बात हैं ॥

मत्त गयदन साथ सदा इहि,
थावर जंगम जतु बिदार्यो।
ता दिन ते कहि केशव बेधन,
बधन के बहुधा बिधि मार्यो ॥
सो अपराध सुधारन शोधि,
इहै इनि साधन साधु बिचार्यो।
पातक पुंज तिहारे हिये यह
चाहत है अब हार निहार्यो ॥

गाढे सितासित काछनी केशव,
पातुर ज्यों पुतरीन बिचारो।
कोटि कटाक्ष नचै गति भेद,
नचावत नायक नेह निहारो ॥

बाजत है मृदु हास मृदंग सो,
दीपति दीपनि को उजियारो।
देखत हौं हरि देखि तुम्हें यह
होतु है आँखिन बीच अखारो॥

दशन बसन माहिं दरसै दशन-द्युति,
यदपि मदन रस बरसत अनैन हौ।
झाँई झलकति लोल लोचन कपोलन मैं,
मोल लेत मनक्रम वचन समन हौ॥
मोहै यह हँसि भाउ कहा मेरी भावती के,
भोर ते छबीली लाल मौन धरे हत हौ।
केशव प्रकाश हास हसि कहा लहुगे जु,
ऐसे ही हसौ न तौ हिय को हरि लेत हौ॥

ज्यों ज्यों हुलास सों केशवदास,
विलास निवास हिये अवरेख्यो।
त्यों त्यों बढ़्यो उर-कंप कछू,
भ्रम भीत भयो किधौं शीत विशेख्यो॥
मुद्रित होत सखी बरही मरु
नैन सरोजनि सोच कै लेख्यो।
तें जु कह्यो मुख मोहन को
अरविंद सो है सो तो चंद सो देख्यो॥

पैठी सखीन की सोभै सभा,
मन ही कछु नैनन माँझ बसै।
पूछे ते बात बनाइ कहै,
मन ही मन केशवदास हँसै॥
रोमनि है इत राम उतै तिय,
चित्त सिंगारन सों दरसै।

आँसिन सों बाँधे अन्न काहू की न भागी भूख,
पानी की कहानी रानी प्यास क्यों बुझाइ है ॥
येरी मेरी इंदुमुखी इंदीवर-नैन लिखे,
इंदिरा के मंदिर क्यों सम्पति सिधाइ है।
ऐसे दिन ऐसे ही गँवावति गँवार कहा,
चित्र देखे मित्र कि मिले को सुख पाइ है ॥

खेलत ही सतरंज अलिन में आपुहि ते,
तहाँ हरि आये किधौं काहूके बुलाये री।
लागे मिलि खेलन मिलै के मन हरे हरे,
देन लागे दावु आपु आपु मन-भाये री ॥
उठि-उठि गई मिस मिसहा जितैही तित,
केशोराय की सौं दोऊ रहे छवि छाये री।
चौंकि चौंकि तिहि छिन राधाजू के मेरी आली,
जलज-से लोचन जलद-से ह्वै आये री ॥

को लों पीहौ कान-रस रूप की बूझै है प्यास,
केशोदास कैसे नयनन भरि पीजिये।
बीर की सौं मेरी बीर नारी है जुनारी आन,
नेंक हसि हाँ कर बलाइ तेरी लीजिए।
परसक माँझ यह वेस अलबेली बीते,
देहो सुख सखिन क्यों अब ही न दीजिये।
य री लड़बावरी अहीर ऐसी बूझों तोहिं,
नाहीं सों सनेह कीजै नाह सों न कीजिये ॥

नाह लगे सुख सौंनि दहे दुख,
नाहीं लगे दुख देह दहैगो।
नाहीं अर्थ सुख देत है केशव,
नाह लगे सुख देत रहैगो ॥

नाहीं ते नाहिं री नाहिं भलाइ,
भलो सब नाह हिते पे कहैगो।
नाह सो नेह निबाहि चलाइ ल्यो,
नाहीं सों नेह कहा निबहैगो।

गिरे हारी सखी हरपाइ हारी कादम्बिनी,
दामिनी दिखाइ हारी दिशि अधिरात की।
भुकि-भुकि हारी रति,मारि-मारि हार्यो मार,
हारी झकझोरति त्रिविध गति बात की।
दइ निरदई याहि ऐसी काहि मति दई।
जारत जु रैन ऐन दाह ऐसी गात की।
कैसे हूँ न माने ही मनाइ हारी केशोदास,
बोलि हारी कोकिल, बुलाइ हारा चातकी॥

छबिगो छबीली वृषभानु की कुँवरि आज,
रही हुती रूप-मद मान-मद छकि कै।
मारहू ते सुकुमार नंद के कुमार ताहि,
आये री मनावन सयान सब तकि कै॥
हँसि हँसि सौंह करि-करि पाँय परि-परि,
केशोराय की सो जब रहे पिय जकि कै।
ताही समै उठे घन घोर-घोर, दामिनी-सी
लागी लौटि श्याम-घन-उर सों लपकि कै॥

मेघन ज्यों हँसि हंसन हेरत,
हंसन ज्यों घन रूपन पीवें।
खंजन ज्यों चिन चंद न चाहत,
चंद ज्यों कंजनि क्यो हू न छीवें॥
ताल तें बागनि बाग तें तालनि,
ताल तमाल की जालनि सीवें।

नसी है केशव न युगता सुनि,
एसी दशा पिय की पल जीवे ॥

मैं पठइ मति लेन सखी सु
रही मिलि को मिलिने कहँ आन ।
नाय मिले दिन ही हगदूत,
दयाल सा देह दशा न जनाने ॥
प्रेरत पेन किय तन प्राणनि,
योग क और प्रयोग निधान ।
लान ते बोल न पाऊँ न केशन,
ऐसे हीं कोऊ कहा दुख जान ॥

आय त आनेगी आँगिन आगे ही,
डोलि है मानहु मोल लई है ।
माँ न सोवन देय न यो,
तन सौं इनमें उन साग्न दई है ।
मेरिय भूल कहा कहौ केशव,
सौति कहँ ते सहली भइ है
स्वारथ ही हित है सनरे
परदेश गये हरि नींद गइ है ॥

कशन कैसे हू नारि उपायनि,
अन सुता उर लागति है ।
चरचोंधनि सी चितने चितमें,
चित सोवत हूँ मह जागत है ॥
परदश प्रिया पल मोहि पत्यानि,
न जान का याकी कहा गति है ।
ननि नैनन नींद नजान्त बधू
लहू आधिक गन त मागति है ॥

मोरनि ज्यों मगन रहत घन गोधिरान,
हंसिनि ज्यों मृदुल मृणालिका चहति है।
पिउ-पिउ रटत रहत चित चातकी ज्यों,
चन्द चितै चकोर ज्यों चुप ह्वै रहति है।
हरनी ज्यों हेरति न केसरि के कानन को,
केका सुनि ब्याली ज्यों बिलान ही रहति है।
पराग कुँवर बाह बिरह निहारे ऐसी,
सुरति न राधिका की मूरति गहति है॥

गाय दर्शन वसे कुशासदाम रगरी ज्यो,
केसरी को देख रनकरी ज्यों कँपत है।
चागर की संपदा चगार ज्यों न चितवत,
चकरा ज्यों चद ही ते चौगुनी चपत है॥
रस सुनि व्याल ज्यों बिलात जात घनश्याम,
घननि की घोरनि जवासे त्यों तपत है।
मोर ज्यों भगत घन योगी ज्यों जगत निशि,
चातक ज्यों श्याम नाम तेराइ जपत है॥

नहीं नहीं दूरे तहीं जौहरनी जग-मगे,
फँसे हैं न केसर दुगढ़ ल्याउ संग की।
परन का पथ अलि भ्रमित के पीछे अली,
अलिनि ज्यों लागी रहे निरहे साथ संग की।
मिलट अमिल यह तुम्हें मिलिन की जर,
कैसे कै मिलाऊँ गनि मो पै न निरस की।
इत ना हरत दग देति हुनी, दुनि हैं व
पीग रिते निप गात भए धार श्रम की॥

रंगत गम्भीर गार घट-घटैया निहार
ऐसो ही तो कुशादाम हरप हरत है।

फूलनि फैलाइ डारु भारि डारु घनसारु,
चंदन को ढारु चित चौगुनो पिरातु है।
नीरहीन मीन मुरझाइ जीवै नीर ही ते,
छीरते छिरीके कहा धीरज घिरातु है।
पाए है तें पीर निधौं यों ही उपचारु करै,
आगिही को डाढो अग आगि ही सिरातु है॥

खेलत न खेल कछु हाँसी न हँसत हरि,
सुनत न कान गान तान बान-सी वहै।
ओढत न अम्बरनि डोलत दिगम्बर से,
शम्बर-ज्यो शम्बरारि दु ख देह को कहै।
भूलिहू न सूँघे फूल फूलि फूलि कुँभिलात
जात, सात बाराहू न बात काहू सों कहैं
देखि-देखि मुखचन्द केशव चकोर सम
चन्द्रमुखी चन्द्र हू के बिंब-ज्यो चितै रहै॥

फूल न दिखाउ, शूल फूलत हैं हरि बिनु,
दूरि करि माल बाल ब्याल सी लगति है।
चमर चलाउ जिन बीजन हलाउ मति
केशव सुगंध-वायु बाइ री लगति है।
चंदन चढाउ जिन ताप सी चढति तन
कु कुम न लाउ अ ग आगसी लगति है।
बार बार बरजति बावरी है बारो आन
बिरी ना खवाउ बीर बिष-सी लगति है॥

चपला न चमकनि चमक हथ्यारन की
बोलत न मोर बंदी बोलत समाज के।
जहाँ तहाँ गाजत न बाजत दमामे दीह
देन न दिखाई दिनमणि लीने लाज के॥

चलि चलि चद्रमुखी सामरे ससा पै वेगि
शोपक ज्रु कशादास अरि सुत्त साज कें ॥
चढ़ि चढि पवन-तुरगन गगन घन
चाहत फिरत चद याघा यमराज के ॥

अँसियाँनि मिली ससियाँनि मिली,
पतियान मिली यतियाँ तजि भौन।
ध्यान विधान मिली मनही मन
ज्यों मिलें पक मनो मिल सौन।
नगर नैनेहुँ येगि मिलो नतु
ह्वै है वहै हरि जो पन्न हौन।
पुरण प्रेम समाधि मिलें
मिलि जैहै तुम्हैं मिलि हो तन यौने ॥

आतु मिले वृषभानु-कुमारिहि
नन्द कुमार वियोग निते के।
रूप की राशि रम्या रस केशव,
हास विलासनि रोम रिते रे।
नागे क भीतर देखि हिये नस,
नैनन धाइ रही सु इते वे।
इनहि मे भ्रम भूलि मनो
मधुरे सुन्दरीन्ह चँद चिते वे।

कृष्ण ही वह गापी गुपालहि,
आन यह हँसि क गुण गावहिं।
म्मे में यह घां नान मगी कहि
कैसे धौ काड गयो मजनावहि।
गानि - ससासनि हा ज्रु निगी,
सु रही मुग्ध की मुग्ध हाय की हायहि।

आतुर ह्वै उन आँसिन, तें अँसुवा,
निकसे असरानि के साथहिं ॥

गोंह को सोच न सकोच काहू नीच नी को,
पांछो प्यारे पीर लीक लोचन किनारे की ।
माखन की चोरी की है थोरी थोरी मो हूँ सुधि,
जानत कहा किसोरी भोरी है जु बारे की ।
मरी ये कुमति और कहा कहौ केसोदास,
लागत न लाल लाज इहाँ पग धारे की ।
पती है भुठाई चाहि अन ही रठाई,
यह छार ह तो छूटी नहीं पाँइन के पार की ॥

नरा नि मोहि घर जान देहु घनश्याम,
घरिक में लागी उर देगिनी ज्यो दामिनी ।
हाइ कोऊ ऐसी-वैसी आने इत उत हेरे नै,
ने ऊ वृषभानु जू नी नैटी गज-गामिनी ।
आदित का आयो अन्त आनो नि नलि जाउँ,
आनत है वे ऊ वनि आई अर यामिनी ।
काम न डरन तुम कुज गन्यो नेशोदास,
भौरन के भनन भनन गह्या भामिनी ॥

सुन्दर

मानो भुजंगिन रूप चढ़ी
मुख उपर आय रहीं अलकैं त्यों ,
नागी महा सटकारी है सुन्दर ,
भीजि रही मिल सौंधन ही सों ।
लटकी लट या लटकीली तें और
गइ बढ़िकै छवि आनन की यों
और बढ़ै दिये दूजी निकाई कै
होत रुपैयनु तें मुहर ज्यों ॥

दृगनि नैन की कोरन लौं
अधरानि ही में मुसक्यानि की बानी ।
बातनि बोल गरो कंठ ही में,
चलते पग पै न कहूँ अहरानी ॥
सुन्दर रूप नहीं सपने ,
अरु जो भयो तो मन ही में रिसानी ।
हैं बसुधा के सुधार सबै ,
पर याकी सुधाइ सुधार है मानो ॥

कहूँ बनमाल कहूँ गुँजनि की माल कहूँ ,
अंग-अंग साज ऐसे हाल भूलि गये हैं,
कहूँ मोरचंद्रिका लकुट कहूँ पीत-पट
मुरली-मुकुट कहूँ डारि दये हैं ।
कुंजन मझार कहूँ सुन्दर न बोले बोल
लोचन अचान जानी चाह हरि लए हैं ।

घूँघट की ओट द्वै के चितयो कि चोट करी,
लालन तो लोट-पोट तन ही तें भये हू ॥

मधुपी न मलीन सो, सौतिन सो,
सपने हू न सासु की कान नहूँ ।
पुनरात की तीयन सो किहूँ भाँति,
डराए ते हौं न डरी कबहूँ ॥
कहि सुन्दर नन्दकुमार लिए,
तन को तनकौ नहिं चैन कहूँ ।
हरि के हित में तौ करी इतनी,
हरि की हौं जु आए नहीं अजहूँ ॥

प्रीतम गौनु किधौं जियगौनु कि
भौनु कि भारु भयानक भारो,
पानस पानक फूल कि सूल
पुरन्दरचाप कि सुंदर आरो।
सीरी बयारि किधौं तरवारि है
वारिदवारि कि वान निपारो
चातक बोल कि चोट चुभै चित,
इन्द्रवधू कि चकोर को चारो ॥

भोर भये मथुरा को चलेंगे
यो बात चली हरि नन्द-ललाकी,
बोल सकी न सकोचनि तें,
पीरी भई मुरझोति तिया की।
सुनि हाथ टिकाइ ललाट सौं चढ़ी
इहै उपमा कवि सुंदरता की,
देखौ मनो तिय आयुके आखर
औरु चढ्यू है रहे बच जाकी ॥

ताल गो मसारिकै गुलाब माँहि ओस डारि,
सीतल बयारि हूँ सों नार नार नारिये,
चैन न परत छिनु चम्पक ते चन्दन ते,
चन्द्रमा तें चाँदनी तें चौगुनी चै अगिय।
सुन्दर उसीर चीर उतरै ते दूनी पीर,
कमल कपूर कोरि एक ठौर धरिय,
यो मानि विरहागि उठी तन माँझ लागि,
सोइ होति आगि जाइ आगे लाइ धरिय॥

उधानु सहसो नाहि रह्यो जाइ कहा कहैं,
जैसी करी काहू तैसी कोऊ न करतु है,
नीम ता हमारे मन कहाँ लगि रहा परै,
जी में जितो कहौ तितो करोहु ना सरतु है।
द्वारका बसतु हरि सुन्दर समुद्र ही में,
इहाँ परवाह जाइ सिंधु में परतु है,
जानि है ये जमुना के जल ही तें आसी ज्वाल,
जलधि में परयो बड़ानल जरतु है॥

कारे गए धरा पताटि आगे बगन,
सु सता पट्ट बस न रसन उर लाग हो।
मांहि निरखौंहें कवि सुन्दर सुजान साहि,
पद्दू अलसौंहें सौंहें आरु रसपागे हो।
परसों में पाँच हुते परसों में पाय गहि
परसो ये पाय निसि जारे अनुराग हो।
कौन वनिता के हो जू कौन वनिता के हो सु,
कौन वनिता के बनि, तार संग जाग हो?

मुबारक

(अलक शतक—तिल शतक)

अलक छुटी लपटी वदन देखो दुति दृग दौरि ।
चढ़ी भाग ते भाल तिय मनु सिंगार की बौरि ॥

तिय नहात जल अलक तै चुअत नयन की कोर ।
मनु खजन मुख देत अहि अमृत पौंछि निचोर ॥

तिल कपोल पर अलक झुकि झलकत ओप अपार ।
मनो मयन के बीच तें उपजी लता सिंगार ॥

अरुन चीर के घूँघटे झलके अलक सुढार ।
मनु सोहाग-सर में परे रुचि-सेवार-शृँगार ॥

घूँघट प्रीति दुकूल के झलकत अलक सोहाय ।
मनु अनुराग समुद्र में निसहरि विरह नहाय ॥

तिल तरनी के चिबुक में सो आरसी अनूप ।
मन मुख देखे आपनो सूझै स्याम अनूप ।

तन कंचन हीरा हसनि विद्रुम अधर बनाय ।
तिल मनि स्याम जडे तहाँ विधि-जरिया उजराय ॥

बेनी तिरवेनी बनी तहँ मन माघ नहाय ।
इक तिल के आहार तें सब दिन रैन बिहाय ॥

हास सतो गुण रज अधर तिल तम दुति चितरूप ।
मेरे दृग जोगी भये लये समाधि अनूप ॥

मोहन वानर बाम को काम दियो तिल नोहि ।
जब जब अँखियन में परे मोहि लेत मन मोहि ॥

(स्फुट)

कनक-बरन बाल नगन लसन भाल,
मोतिन के माल उर सोहैं भली भाँति है।
चंदन चढ़ाइ चारु चंदमुखी मोहिनी-सी,
प्रात ही अन्हाइ पगु धारे मुसकाति है॥
चूनरी विचित्र स्याम सजि के मुबारक जू,
ढाँकि नख-सिख ते निपट सकुचाति है।
चंद्रमै लपेटि कै समेटि कै नखत मानो,
दिन को प्रणाम किये रात चली जाति है॥

काहू की बाँकी चितौनि चुभी
फुनि काल्हि ही झाँकी है ग्वालि गवाछनि।
देखी है नोखी-सो चोखी-सी कोरनि,
आछे फिरै उभरे चित जा छनि।
मारयो सम्हार हिये में मुबारक,
ये सहनै कजरारे मृगाछनि।
सीख लै काजर दै री गँवारिनि
आँगुरी तेरी कटैगी कटाछनि॥

हमको तुम एक, अनेक तुम्हें,
उनही के विवेक बनाइ बहौ।
इत चाह तिहारी बिहारी,
उतै सरसाइ के नेह सदा निबहौ।
अब पीरी मुनावर भाइ परौ,
अनुराग-रसा निज चाह दहौ।
घनस्याम! सुखी रहौ आनँद सौ
तुम नीके रहौ, उनहीं के रहौ॥

त्रिपुर मार कुसुमनि डारि दै,
मार पसारि परे आ गरागन।

सेनापति

(कवित्त-रत्नाकर)

लाह सों लसति नग सोहत सिगार हार
छाया गोन जरद जुही की अति प्यारी है।
जानी रमनीय रौस नाल है रसाल नवी
रूप माधुरी अनूप रभाउ निनारी है।
जाति है सरस सेनापति वनमाला जाहि
सींचे घन रस फूल भरी म निहारी है।
सोभा सब जोबन की निधि है मृदुलता की
राजै नव नारी मानो मदन की बारी है॥

चाहत सकल जाहि गति क भ्रमर हे जो
पुन्नति होम उरवसी की निसाल है।
भली निधि कीनी रस-भरी नव-नावनी है
सेनापति प्यारे वनमाली की रसाल है।
धरति सुबास पूरे गुन की निवास अब
फूली सब अग ऐसी कौन कलिकाल है।
ज्यो न कुम्हिलाइ कठ लाइ उर लाइ लीन
लाई नव बाल लाल मानो फूल-माल है॥

कम रहैं भारे मित्र कर मो सधारे तेरे
ताही मॉझ पैयत मधुर अनि रस है।
तपति बुझाइबे को हिय सियराइबे को
ऐसा ते सरस तेरे तन कं परस है।
आन धाम धाम पूरइन है कहाया नाम
जाके हिसत मैलो कद को दरस है।
सेनापति प्यारी ते हा भुवन की साभा धारी
तू है पदमिनि तेरो मुख तामरस है।

बिरह हुतासन बरत उर ताके रहै
बाल मही पर परी भूख न गहति है।
सेवती कुसुम हू तें कोमल सकल अंग
सून सेज रत काम केलि कौं करति है।
प्रानपति हेत गेह अंग न सुधारे जाके
धरी है धरम तन में न सरसति है
देखौ चतुराई सेनापति कबिताई की जु
भोगिनि की सरि कौं बियोगिनी लहति है॥

राधिका के उर बढ्यो कान्ह कौं बिरह-ताप
कीने उपचार पै न होति सितलाइयै।
गुरजन देखि कहा सखिन सौं मन में की
सेनापति करी है बचन चतुराइयै।
माधव के बिछुरे तें पल न परति कल
परी है तपनि अति मानौं मन ताइयै।
सौं, हनुमान की न रहै तौ जरनि कहू
छाया घनस्याम की जो पूरे पुन्न पाइयै॥

कुंद से दसन धन, कुंदन बरन तन
कुंद सी उतारि धरी क्यौं बनै बिहरि कै।
सोभा सुखकंद देख्यौ चाहियै बदन-चंद
प्यारी जब मंद मुसक्याति नैक मुरि कै।
सेनापति कमल से फूलि रहैं अंचल मैं,
रहे दृग चंचल दुराए हू न दरि कै।
पलकैं न लागें देखि ललकैं तन-मन
झमकैं कपोल रहीं अलकैं बिथुरि कै॥

चंद दुति मंद कीन, नलिन मलिन तो हीं,
तो पै दग भगनाउ रंभाम्भि तर है।

सेनापति

(कवित्त-रत्नाकर)

लाह सों लसति नग साहत सिंगार हार
छाया सोन जरद जुही की अति प्यारी है।
जाकी रमनीय रौस बाल है रसाल बनी
रूप माधुरी अनूप स्वभाउ निनारी है।
जाति है सरस सेनापति बनमाला जाहि
साचे घन रस फूल भरी म निहारी है।
सोभा सब जोबन की निधि है मृदुलता की
राजै नव नारी मानो मदन की बारी है॥

चाहत सकल जाहि रति के भ्रमर है जो
पुन्नति हौस उरवसी की निसाल है।
भली निधि कीनी रस-भरी नव-जावनी है
सेनापति प्यारे बनमाली की रसाल है।
धरति सुबास पूरे गुन की निवास अब
फूली सब अग गेसी कौन कलिकाल है।
ज्यौं न कुम्हिलाइ कठ लाइ उर लाइ लीन
लाई नव बाल लाल मानो फूल-माल है॥

केम रहे मारे मित्र कर सौं सधार तरे
तोही माँझ पैयत मधुर अति रस है।
तपति बुझावन को हिय सियराइवे को
रंभा ते सरस तेरे तन को परस है।
आन धाम धाम पुरइन है कहायो नाम
जाके विहसत मैलो चंद को दरस है।
सेनापति प्यारी ते ही भवन की सोभा धारी
तू है पदमिनि तेरो मुख तामरस है।

बिरह हुतासन बरत उर ताके रहै
चाल मही पर परी भूख न गहति है।
सेवती कुसुम हू तें कोमल सकल अंग
सून सेज रत काम केलि कौं करति है।
प्रानपति हेत गेह अंग न सुधारे जाके
धरी हैं बरस तन में न सरसति है
देनी चतुराइ सेनापति कविताई की जु
भोगिनि की सरि कौं वियोगिनी लहति है॥

राधिका के उर बढ्यो बिरह कौ बिरह-ताप
कीने उपचार पै न होति सितलाइयै।
गुरजन देखि कहा सखिन सौं मन में की
सेनापति करी है बचन चतुराइयै।
माधव न बिछुरें तें पल न परति कल
परी है तपति अति मानौं मन ताइयै।
सौं, वृषभान की न रहै तो जरनि कहू
छाया घनस्याम की जा पुन्न पाइयै॥

कुंद से दसन धन, कुंदन बरन तन
कुंद सी उतारि धरी क्यों बनै बिछुरि कै।
सोभा सुख कंद देख्यौ चाहिये बदन-चंद
प्यारी जब मंद मुसक्याति नैन मुरि कै।
सेनापति कमल से फूलि रहैं अंचल मैं,
रहै दृग चंचल दुराए हू न दुरि कै।
पलकैं न लागें देखि ललकैं तरुन-मन
झलकैं कपोल रहीं अलकैं बिथुरि कै॥

चंद दुति मंद कीने, नलिन मलिन ते ही,
ता ते देव अंगनाऊ रंभादिक तरु हैं।

तोसी एक तुही, और तोसे तेरे प्रतिबिंब,
सेनापति ऐसे सब कवि कहत रहैं।
समुझैं न बेद, मेरे जान यो कहत जेइ,
प्रतिबिंब वेह, तेरे भेव निरतर हैं।
यातै मैं बिचारी प्यारी परे दरपन बीच,
तेरे प्रतिबिंबौ पै न तेरी पटतर हैं॥

तेरो मुख देखे चंद देखौ न सुहाइ, अरु
चंद के अछत जाको मन तरसत है।
ऐसे तेरे मुख सो कहत सब कवि ऐसे,
देखौ मुख चंद के समान दरसन हैं।
वे तो समझ न कछू, सेनापति मेरे जान,
चंद ते मुखारबिंद तेरो सरसत है।
हँसि हँसि, मीठी मीठी बातें कहि कहि ऐसे
तिरछे कटाच्छ कर चंद बरसत है॥

छूट्यो ऐबौ जैबौ, पेम पाती कौ पठैबो छूट्यो,
छूट्यो दूरि दूरि हू तें देखिबौ दृगन तें।
जेते मधियाती सब तिन सौं मिलाप छूट्यौ,
कहिबौ सँदेस हू कौ छूट्यो सकुचन तें।
एती सब बातें सेनापति लोक-लाज काज
दुरजन त्रास छूटी जतन-जतन तें।
उर अरि रही, चित चुभि रही दसौ एक
प्रीति की लगनि क्यो हूँ छूटति न मन तें

फूलन सौं बाल की बनाइ गुही बेनी लाल,
भाल दीनी बेंदी मृगमद की असित है।
अंग अंग भूषन बनाइ ब्रज-भूषन जू,
बीरी निज कर कै खवाइ अति हित है॥

ऐंचे कै रस-बस जब दीबे को महावर के,
सेनापति स्याम गह्यो चरन ललित है।
चूम हाथ नाथ के लगाइ रही आँखिन सों,
कही प्रानपति यह अति अनुचित है॥

जौते प्रानप्यारे परदेस को पधारे तौते,
बिरह तें भई ऐसी ता तिय की गति है।
करि कर ऊपर कपोलहि कमल नैनी
सेनापति अनमनी बैठ्यै रहति है।
कागहि उड़ावै, कोऊ कोऊ करै सगुनौती,
कोऊ बैठि अवधि के बासर गनति है।
पढ़ि पढ़ि पाती कोऊ फेरि कै पढ़ति, कोऊ
प्रीतम को चित्र में सरूप निरखति है॥

बाल, हरिलाल के वियोग तें बिहाल, रैनि
बासर बरावै बैठि नर की निसानी सों।
काल ? कौन काल ? कब लगन चलावै कौन ?
रहत हैं प्रान प्रानपति की कहानी सों।
लागि रही सेज सों मनोज ज्यों, न जानी जाति,
सेनापति बरनन बनत न बानी सों।
रही इकटक, मानों आतुर चितेर लिय
ऐसी लिखी है कहा कहत न बानी सों॥

लाग हैं कलोल पारावार के अपार, तऊ
जमुना लहरि मर हिय को हरति है।
सेनापति नीरधि पटतर है ते ब्रजराज,
पारिजात हू तें बनलता सरसति है।
मग गुरुनारी कहग ग्यारह सहस गनी,
तऊ छिन एक पै न राधा बिसरति है।

कंचन अटा पर जराऊ परजंक, तऊ
कुंजन की सेनें वे करेजे खरकति हैं ॥

कौनैं निरमाए, कित छाए, अजहूँ न आए,
कैसे सुधि पाऊँ प्यारे मदन गुपाल की।
लोचन जुगल मेरे ता दिन सफल ह्वै हैं,
जा दिन बदन-छबि देखौं नँदलाल की।
सेनापति जीवन अधार गिरिधर बिन,
और कौन हरै बलि बिथा मो निहाल की।
इतनी कहत आँसू बहत, फरकि उठी
लहर लहर दृग बाँई ब्रज बाल की ॥

सरस सुधारी राज-मंदिर में फूलवारी,
मोर करैं सोर, गान कोकिल विराव के।
सेनापति सुखद समीर ह, सुगंध मद,
हरत सुरत-स्रम-सीकर सुभाव के।
प्यारी अनुकूल, कोहू करत करन-फूल,
कोहू सीसफूल, पावडेऊ मृदु पाँव के।
चेत में प्रभात, साथ प्यारी अलसात, लाल
जात मुसकात, फूल बीनत गुलाब के॥

रूप को तरनि तेज सहसौ किरन करि,
ज्वालन के जाल बिकराल बरसत है।
तचति धरनि, जग जरत झरनि, सीरी
छाह को पकरि पंथी-पछी बिरमत है।
सेनापति नैंक दुपहरी के ढरत, होत
धमका बिषम, ज्यो न पात खरकत है।
मेरे जान पौनौ सारी ठौर को पकरि कौनौं,
घरी एक बैठि कहूं घामै बितरत है॥

दूरि जदुराइ, सेनापति सुखदाई देखौ,
आइ रितु पाउस, न पाई प्रेम, पतियाँ।
धीर जलधर की, सुनत धुनि धरकी, है
दरकी सुहागिल की छोह भरी छतियाँ।
आइ सुधि बर की, हिये में आनि खरकी तू
मेरी प्रानप्यारी यह पीतम की बतियाँ।
बीती औधि आवन की, लाल मन-भावन की
डग भई बावन की, सावन की रतियाँ॥

सारग धुनि सुनावै घन रस बरसावै,
मोर मन हरषावै, लागै अति अभिराम है।
जीवन अधार बडी गरज करन हार,
तपति हरनहार देत मन काम है।
सीतल सुभग जाकी छाया जग, सेनापति,
पावत अधिक तन-मन बिसराम है।
संपै संग लीने सनमुख तेरे बरसाऊ,
आयौ घनस्याम सखि मानौ घनस्याम है॥

सूरै तजि भाजी, बात कातिक मैं जब सुनी,
हिम की हिमाचल तै चमू उतरति है।
आए अगहन, कीनै गहन दहन हू कौ,
तिन हू तै चली, कहूँ धीर न धरति है।
हिय मैं परी है हूल दौरि गहि, तजी तूल,
अब निज मूल सेनापति सुमिरति है।
पूस मैं त्रिया के ऊँचे कुच-कनकाचल मैं,
गढ़ै गरम भई, सीत सौ लरति है॥

सिसिर मैं ससि कौ सरूप पावै सविताऊ,
घाम हू मैं चाँदनी की दुति दमकति है।

सेनापति होत सीतलता (?) है सहस गुनी,
रजनी की झाँई बासर (?) मैं झमकति है।
चाहत चकोर, सूर ओर दृग छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
चंद के भरम होत मोद है कमोदनी कौ,
ससि-संक पंकजिनी फूलि न सकति है॥

सिसिर तुषार के बुखार से उखारत है,
पूस बीते होत सून हाथ पाइ ठिरि कै।
द्यौस की छुटाई की बड़ाई बरनी न जाइ,
सेनापति पाई कछू सोचि कै सुमिरि कै
सीत तें सहस कर सहस चरन ह्वै कै,
ऐसे जात भाजि तम आवत है घिरि कै।
जौ लौं कोक कोकी कौं मिलत तौ लौं होति राति,
कोक अधबीच ही तें आवत है फिरि कै॥

अब आयौ माह प्यारे लागत हैं नाह, रवि
करत न दाह, जैसौ अवरेखियत है।
जानिये न जात, बात कहत बिलात दिन,
छिन सौ न तातैं तनकौ बिसेखियत है।
कलप सी राति, सो तौ सोए न सिराति क्योंहू
सोइ सोइ जागे पै न प्रीत पेखियत है।
सेनापति मेरे जान दिन हू तैं राति भई,
दिन मेरे जान सपने मैं देखियत है॥

कब दिन दूलह के अरन-चरन पाइ,
पायहौं सुभग, जिनैं पाइ पौर जाति है।
ऐसे मनोरथ, माह मास की रजनि, जिन
ध्यान सौं गवाँइ, आन प्रीति न सुहाति है।

सेनापति ऐसी पदमिनी को दिखाइ नेक,
दूरि ही तें द कै, जात होत इहि भाँति है।
वह मन फूली रही कछू अनफूली, जैसे
तन मन फूलिबे की साध न बुझाति है।

परे त तुसार, भयो झार पतझार, रही
पीरी सब डार, सो वियोग सरसति है।
बोलत न पिक, सोइ मौन ह्वै रही है, आस–
पास निरजास, नैन नीर बरसति है।
सेनापति कैसी निन, सुनरी सहेली! माह
मास न अरुनी यन-चैनी विलसति है।
विरह तें छीन तन, भूषन-विहीन दीन,
मानहुँ बसंत-कन्त आज तरसति है॥

तन न सिधारी साथ, मीडति है अब हाथ
सेनापति जदुनाथ विना दुख ■ सहै।
चले मन-रंजन कै, अंजन की भूलि सुधि,
मंजन की कहा उनही के गूँदे बेग है।
बिछुरे गुपाल, लागे फागुन कराल, तातें
भई है बिहाल, अति मैले तन-भेस है।
फूल्यो है रसाल, सो तौ भयो उर साल, सखी
डार न गुलाल, प्यारे लाल परदेस हैं।

नवल किसोरी मोरी केसरि तें गोरी, छैल
होरी में रही है मद जोबन के छकि कै।
चंपे कैसी ओज, अति उन्नत उरोज पीन,
जाके बोझ खीन कटि जाति है लचकि कै।
लाल है चलायो, ललचाई ललना को देखि,
उघरयो उर, उरबसी ओर तकि कै।

सेनापति सोभा को समूह कैसे कह्यो जात,
रह्यो है गुलाल अनुराग सो झलकि कै।

सीता अरु राम, जुआ खेलत जनक धाम
सेनापति देखि नैन नैकहू न मटके।
रूप देखि देखि रानी, वारि फेरि पियैं पानी,
प्रीति सौ बलाइ लेत कैयो कर चटके।
पहुँची के हीरन में दंपति की झाँईं परी,
चंद रिवि मानो मध्य मुकुट निकट के।
भूलि गयो खेल, दोऊ देखत परसपर,
दुहुन के दृग प्रतिबिम्ब सो अटके॥

— ० —

चिंतामणि त्रिपाठी

इक आजु मैं कुंदन बेलि लखी,
मनिमंदिर की रुचि वृंद भरै।
कुरविंद के पल्लव इंदु तहाँ,
अरविंदन तें मकरंद झरै।
उत बुंदन के मुकुतागन ह्वै,
फल सुन्दर द्वै पर आनि परै।
लखि यों दुति-कंद अनंद-कला,
नदनंद सिलाद्रव रूप धरै॥

राधा जू के अंग-अंग रंग त्यों रुचिर तासु
गुलाबन के रंग रंग सौरभनि सों भरी।
नितहि चुरावति सु कान्ति की तानी लगी
आनन चितौनि प्रेम-मदकी मनौ झिरी।
चिन्तामनि सो ही है रसाल भार कुंजनि मैं
अलिन के पुंजन सु मानौ मुनिका गिरी॥
आनन पै नीर तरुनाई आर सिसिर में
माघ सुदी पंचमी में ज्यों नमत की सिरी॥

कातिक कृस सुन उमग मनि
और सुभाव भया अब ही का।
फूली लता द्रुम कुंज सुहान
लगे अलि गुंजन भावन जी को॥
फागुन फौन भया जननी यह
रस लगे गुड़ियान को फीका।
माह ते भौंरा भग छूटी नौ
लगे निज दूवर ते नैनानि नीका॥

बाँकी भई भृकुटी बिन कारन,
लोचन कानन आनि रहे हैं।
छाती कछु उचकी बिन दौर,
बंकी चितौं इक भाउ लहे है।
पाँइ उपाइ धरे गरुए मनि,
बैन सकोच न जात कहे हैं।
मौनहि मौन बिचार करै
मेरे अगनि कौन सुभाव गहे हैं॥

काहू को पूरब पुण्य लता सु तौ
बेलि अपूरब तू उलही है।
सोने सो जाको स्वरूप सबै
कर-पल्लव काति कहा उमही है।
फूल हँसी फल हैं कुच जाहि के
हाथ लगै सुकृती सो सही है।
आली की यौ सुनिकै बतिया,
मुसक्याइ तिया मुख नाइ रही है॥

केसरि बारहि बार उतारत,
केसरि अ ग लगावनि लागी।
आई है नैननि चंचलता
दग अ चल बाम छुपावनि लागी।
दूलह के अवलोकन को
वा अटानि झरोखन आवनि लागी।
द्योस दो तीनक ते बतिया,
मन-भावन की मन भावन लागी।

कहूँ किंसुक-फूल-फलानि सो पूजत
संभु, लसे वृषभान हरी।

मुसक्याति नद्दू मनि डीठि सखी की,
सुनाल उरोजन बीच परी।
अँसुवान विलोचन पूरि रही,
सु निमूरति सी कछु आप धरी।
तन कौंल-कली से दुश्रो कर जोरि,
तिया निज शंकर ओर करी॥

मोही है ग्वाल गुपाल लखे
धृगपाल कछूक न भेदन पावै।
बोलै न बोल ठगी-सी लखै मनि
मैन के बानहि यो अकुलावै।
रोमन अ ग कदंब कली,
मन मैं घनस्याम की यो छवि छावै।
सारति मंद कपोल हँसी
उमगैं अँसुश्रौं अँखियाँ भरि आवै॥

देखे न क्यों सुख मानि घनी मन,
जा सुख मान को सोर भयो है।
साँवरो सुन्दर ज . सिगरी
मन-नारिन को चित चोर लयो है।
आपुरो आइ अटा में अटू,
घनघोर घटान को मोर भयो है।
नंद-किसोर झरोखे की ओर
सु तो मुख चंद-चकोर भयो है॥

बाल के मिलन आस गण चित्र-साल लाल
ललकन पल एक धीरज न ठहरै।
गरी मन त्याइ मदना को छम-छम,
लगि छरीलो छरीली के मरम अ ग हहरै।

करी जारातरी प्यारी सग्गी सेज ऊपर,
सु आँसिन के ऊपर ह्व ऑस थों ढरहरे ।
न्गरु कास मन्य मधुकर अकुलाने मानौ
ब्लकी सरोजन के उपर है लहरे ॥

नैस नी उठौन ठौन रूप की अनूप, का ह,
अ ग अ ग औरै कछ ओप उलहति है ।
चिंतामनि चचना विलास वो रसाल नेन
मदन के मद और आभा उमहति है।
कु दन की वेली-सी नवेली अलवेली बाल
केतिक गरन की सों गौरता गहति है ।
उमकि भरोखे तुम्हें चाहिने कों चदमुखी
धौमहू में चंद्रिका पसारति रहति है ॥

गस की विलास देखि, चिंतामनि धुनि मुनि–
मेखला की, भनक नूपुर विछियन की ।
चद्रमुखी चन्द्रिका पसारी आनि अगनि में
देखत जो धन्य दसा ताही के जियन की ।
तुम्हें दखि प्यारी ऐसी मगन भई है, जाते
दरकि गई है तनी अ गिया सियन की ।
दखौ लला ललित छबीली ऐसी नीकी बनी
आनति जु फीकी करै दीपति दियन की ॥

नाज जब बाजे महा मधुर नगर बीच
नागरि निखिल ललकनि अकनाई है।
चिंतामनि कहैं अति परम ललित रूप
अटा पर दूलह विलोकन को आई है।
फैलि महलनि मनि-मेखला भनक महा
[illegible]

पहिले उज्यारी तन-भूषन-मयूखन की
पाछे ते मयंकमुखी सखीगन आई हैं ॥

अवलोकनि मैं पलकैं न लगैं,
पलकौ अवलोकि बिना ललकै।
पति के परिपूरन प्रेम पगी,
मन और सुभाय लगै न लकै।
तियकी तिरछौंही बिलोकनि में
मनि आनद आँसुनि यों झलकै।
रसवंत कवित्तन को रसु ज्यों
अखरान के ऊपर ह्वै छलकै ॥

चैत की चाँदनी कैधौं चंद अवलोकन ते
छीरनिधि छीर के पूरन-पूर उमगे।
चिंतामनि कहै मन आनद मगन ह्वै कै
बिहरत दंपती परम प्रेम सौं पगे।
अधखुली अँखियाँ सुरति सुख रसरन
मानौ भौंर अधखुले कमलनि में खगे।
प्यारी के सरस तन स्रम जल-बिन्दु सोहैं
कनक-लता मै मुकता-फल मनो लगे ॥

तुही धन, तुही प्रान, तोही में हरो या मन
तेरे ही रिझायबे की रीति में प्रवीन है।
चिंतामनि दिना दिन रहै लगी तेरी रहै
तेरे ही बिरह छिन छिन छीन दीन है।
ईस जू न कीजै ठकुराइनि ऐसी हठ,
छोड़ि दीजै, तेरे उनहार अधीन है।
तू है पी के नैन कमलनि की इंदिरा
सो पीय तेरे पदपानिप के मीन है ॥

गूँधति है मानौ मुक्ताहल के हार वह
चारु नीर-नैननि की धार यों ढरति है।
अरुन अधर चहि काहे को दुखित करै
कौन हेतु आजु ऊची सॉसन भरति है।
अचल ह्व रही केलि-मदिर में चितामनि
सघन वदन चद चद्रिका परति है।
बैठी इत आजु कर कमल कपोल धरि
ध्यान तू कमल-नैनी कौन को करति है॥

या मनि मदिर की छवि-वृ द
छपाकर की छवि पु जनि पर
पाइ के स्वच्छ मनोहर चाँदनी,
चापु लै मैन महा बल रोस्यो।
सु दरि के मुख-चंद को छाँड़ि,
चकोरन चद मयूषन चोस्यो।
चद सिलानि तैं नीर भरयो,
सु सनै तिय को विरहागिनि सोस्यो॥

कहाँ जागे रैन आये निपट उनींदे हौ जू,
सोइ रहौ प्यारे निकयो आछो परजक है।
खेलत हे चाँद नी में ग्वालन के सग कहू,
काहू ग्वाल ही को नाम लीनै कहा सक है।
यों ही भलेमानसे लगावती कलक हौ
यो देख्यो कहूँ चितामनि रतिहू को अ क है।
पीत रग अम्बर सो भयो नील रंग, लाल,
भूटी हौं गोपाल तुम्हें काहे को कलंक है॥

राति रहे मनि लाल कहूँ रमि
ह्याँ दुरा वाल वियोग लहे है।

आए घरै अरुनोदय होत,
सरोष तिया इमि नैन रहे हैं।
लाल भये दृग-कोरनि आनि कै
यों अँसुवान के बुन्द रहे हैं।
रोचन चोप मनो सिथिलै
निज स्वत्त दाडिम-बीज गहे हैं॥

आन-बधू रति-चिह्न धरै इत,
प्रातहि प्रीतम आगम कीन्हो।
आरसी के हाथ में आरसी दै मनि
लाल बधू भनि भीतर लीन्हो।
बोली सखी यह रूप की रासि
कहाँ यह वेष उपद्रव कीन्हो।
या मृग-नैनी पखानी मृगी को
कहा चित लाभ यों व्याकुल कीन्हो॥

साँझ तें चन्द उगाऊ उयो,
मन मेरो लै साथ रहे तुम न्यारे।
रैनि पची मनि-मंदिर भीतर,
लगे तन दीप-प्रकास अँध्यारे॥
प्रातहि पाइ सुधामय पानी,
नैन-चकोर छके, भे सुखारे।
क्यों न अनूप कला प्रगटो,
अकलंक कलानिधि मोहन प्यारे॥

बोलत काहे न बोल सुनै,
मधुरी बतियाँ मनमोहन भाखै।
बोलै कहा, कछु चित्त में ह्वै दुख,
दिये चढ़ कछु लागी दाखै॥

ठाढे हैं लाल, निलोकै न लाल क्यों,
तेरी निलोकनि कों अभिलासें।
लाल भई निन काजहि आजु ए,
देखों कहा मेरी दूखती आँखें॥

सरद समी ते अधससी ह्वै वची हों,
पनि चिंतामनि तिमि हिमि सिसिर झमक तैं।
मारत मरूके वची वधिक वसत ह तें,
पावक प्रचार वची, ग्रीषम तमक त।
आयौ पापी पावस ये, प्रान अकुलान लाग्यौ,
भयो री असान घोर घन के घमक तैं।
ताप तें तचौंगी, जो पै अमिय अचौंगी आली।
अब न बचौंगी चपलान की चमक तें॥

ओढे नील सारी घन-घटा कारी चिंतामनि,
कंचुकी किनारी चारु चपला सुहाई है।
इन्द्रवधू जुगुनू जवाहिर की जगी जोति,
बग-मुक्तान माल कैसी छवि छाई है।
लाल पीत सेत बर चादर वसन तन,
बोलत सु भृंगी, धुनि-नूपुर बजाई है।
देखिन को मोहन नवल नट-नागर को,
बरषा नवेली अलबेली बनि आई है॥

यो मन वैठी निमूरति ह्वी मधु मैं
अब हौं न बचौंगी अनंग सो।
पीउ अचानक आइ गयो,
सु पराय गयो सिगरो दुख अंग सो।
बाहिर भीतर पूरन ऐसो
भयो घट मेरो अनंद-उमंग सो।

पूर उमंग भगीरथ के नग
जैसे निरंचि-कमंडल गंग सों ॥

को महा मूढ छनली के अगन
आय पर्यो ज्यों ससारो वहीर मैं ।
ठौ अथान अधीन जो आपते
ताहि को आनि सकै पुनि तीर मैं ।
जोबन पूर निन्नामन रंग
उठै मन मोद उमंग समीर मैं ।
सैल-उरोज तैं कूदि पर्यो मनु
जाइ प्रभा-नदि-भौंर गँभीर मैं ॥

फूलि रहे बनबाग सबै लखि,
फूलनि फूलि गयो मन मेरा।
फूलनि ही को बिछावनो कै,
गहनो कियो फूलनि ही को घनेरो।
लाल पलाशन में चहुँ ओर तें,
मैन प्रताप कियो बन घेरो।
ऐसेहि फूल फैलाइ फैलाइ,
भयो ऋतुराज को मानहु डेरो॥

कालिदास त्रिवेदी

कुंदन की कूरी आननम की छुरी सो मिली,
सोनजुही माल किधौं कुवलय हार सा।
कैधौं चंद चंद्रिका कनक सी कलित भई,
कैधौं रति ललित चलित भई मार सौं।
कालिदास मन मोहि दामिनी मिली है कैधौं,
अनल की ज्वाल मिली कैधौं धूम धार सौं।
केलि समै कामिनी कन्हैया सों लपटि रही,
कैधौं लपटानी है जुन्हैया अंधकार सों॥

प्यारी सेज तीसर रसाली रंग रावटी में,
तकि ताकी ओर छकि रह्यो नंद-नन्द है।
कालिदास बीचिन दरीचिन ह्वै झलकत
ज्योति की मरीचिन की झलक अमन्द है।
लाग देखि भरम कहा धौं है या घर में,
सु रंगमग्यो जगमग्यो जोतिन को कंद है।
लालन को चाव है कि ज्वालनि की माल है कि,
चामीकर चपला कि रति है कि चंद है॥

भारी भैस इन्दुमुखी साँकरी गली में मिली
सुन्दर गोविन्द को अचानक ही आयकै।
कालिदास लगे जन अंगनि जवाहिरनी,
बाहिर ह्वै फैली चाँदनी सी छवि छाय कै।
नैरा गह्यो स्याम सौंहैं बिहसि बिलोकी बाम,
हेर्यो तिरछौंहैं नारि नैसुक नवाय कै।
गोरे तन चोरे चित चोरै दृग क न मुख
थोर नीच कारे लागि चली मुसुकाय कै॥

काहू चतुराइ करि द्वार में विछाई सेज,
जानि मनि मंदिर में मनभाए धाम को।
कालिदास रसि काइ जानि कै चुपाइ रह,
आए जब सुंदरि सिधाई निज धाम को॥
चचल चतुर छरकायल छबीली बाम,
अंचल छुवै न दीनो स्याम अभिराम को।
पाटी पग धरि गई, चेटक सो करि गई,
नटी लों उछरि गई, छरि गई स्याम को॥

चूमों कर कज मंजु अमल अनूप तेरो,
रूप के निधान कान्ह मो तन निहारि दै।
कालिदास कहै मेरे पास हरि हेरि हरि,
माथे धरि मुकुट लकुट कर डारि दे॥
कुंवर कन्हैया मुख-चन्द की जुन्हैया चारु,
लोचन चकोरन की प्यासन निवारि दे।
मेरे कर मेहदी लगी है नंदलाल प्यारे,
लट उरझी है नकबेसर सँभारि दे॥

सावन की रैन, मन भावन गोविंद बिन
देत दुख कानन में झिल्लिन के सोर हैं।
कालिदास प्यारी अँधियारी में चकित होत,
उमडि उमडि घन घहरत घोर है।
सून कुंज मंदिर में सुंदरी बिसूर बैठि
दादुर ये दहकि सी लेत चहुँ ओर हैं।
हिए में वियोगिनि के विरह की हूक उठी,
कूक उठी कोयल, कुहूँक उठे मोर हैं॥

मधुकर माल नव नलिन के जाल पर,
कान्ति रसाल पर कुहुँक अमंद की।
मंद पौन सीतल सुबास भई बागन,
बिलास मई कालिदास रासि मकरंद की॥

दच्छिन मयान, दच्छिनाय मे पयान करै
काहू को दशा न होति गोपिन कै फंद की ॥
कैसे देखि लीन्हें चढ़ि चाँदनी महल पर
सुधा की चहल, बसुधा की, चारु चंद की ।

हिलि मिलि जोन्हनि मे, झाँकत झरोखनि मे
हियरा में हलकी हगन अनुसार में ।
कालिदास कहै आप कामिनि कुरंगनैनी,
दामिनी ज्यों दमकी आन चमक दुआर मे ॥
नाह मे रहगी, दुख ऐसे क्यों सहगी,
जैसे सीता पार सागर के रघुबर नार में ।
नंद के कुँवर काहू जैसे कहो दै हौ जान,
छाँड़ि वृषभानु जू की कुँवरि कुमार मे ॥

गागरी की सोंही माही गोरस की जाई जात
आये लाल पामरी रंगी पहरि कंध ।
कहै कालिदास पास भये हैं चकित चित,
लीजिए लपट लपटाय अंक भरि कै ॥
रैन में नगर बीस जन के नगर कानै,
अगर मगर बन भूमि कलि करि कै ।
फूल में कलाधर ये घन को न छाट मग
तातें रंग भीज, हिए प्रेम याल धरि कै ॥

हाथ हँसि दीन्हो भीति अन्तर परसि प्यारे,
देखत ही छकी मति नाहर प्रवीन की ।
निकस्यो झरोखे माँझ बिगस्यो कमल सम,
ललित अँगूठी तामें चमक चुनीन की ॥
कालिदास तैसी लाल मेंहदी के बुंदन की
चारु नख चंदन की लाल अँगुरीन की ।
कैसी छबि छाजति है छाप औ छलान की, सु
कंकन कुरीन की, जराऊ पहुँचीन की ॥

आलम और शेख

मुक्ता मनि पीत हरी बनमाल सु,
तौ सुर चापु प्रकासु कियो तनु।
भूषन दामिनि दीपति है,
धुरवा सित चंदन खौरि कियै तनु।
'आलम' धार सुधा मुरली बरषा,
पपिहा ब्रज नारिन को पनु।
आवत है बन ते घन से लखि री,
सजनी घनस्याम सदा-धनु॥

त्रुटि आइ भौहैं भुरि चढ़ी हैं उचौ है,
मैना मैन मद-माते पलकन चपलई है।
कटि गई छूटि पै सिमटि आई छाती ठौर,
ठौर तैं सबारी देह और कछु भई है।
'आलम' उमगि रूप सोना सरवर भर्यो,
पानिप ते काइ लरिकाई मिटि गई है
झलक सी भई पियरस पियरइ किधौं,
कछु तरुनई अरु नई अरुनई है

अंग नई जोति ले तरंगना विचित्र एक,
आँगन में अंगना अनंग की सी ठाढ़ी है।
उजरइ की उज्यारी गोरे तन सेत सारी,
मोतिन की जोति सौं जुन्हैया मानो गाढ़ी है।
आलम सु आली बनमाली देखि चली दुति,
सुगढ कनक की सी रूप-गुन गाढ़ी है।
देह की चनक वाके चीर में चमक छाई
छीरनिधि मथि किधौं चाँद चीरि काढ़ी है॥

नरह जमुन न्हैहै सुधि बिसराइ ऐहैं,
घरा डारि औरनि के संग धाइ आई है।
राम भरी रात सगी सौंदै गरहरै खरी,
जड ह्वै रहति कछू जूटियो जनाइ है।
'आलम' कहै हा अनही त रिझवार भई,
दुरै न दुरा' मैं तो अन लौं दुराइ है।
रूप रस प्यासी भर काहू, तन डीठि दइ,
गागरि भरन गइ नैना भरि लाइ हैं॥

हमें हँसि दइ बोले बोलैं औ न खोलै पम,
यातें पहिचानी कछु पीरी पीरी है भई।
'आलम' कहै हा याके हिये की पीडाइ देखौ
कैसे के दुराई माई प्रीति काहू सों नई।
अनै अनमनी हुती अँसुवा भरति ठाढ़ी,
औचक ही धाइ धाइ भुज भरि है लई।
पूछे तिहि अँसुवा कहू हो ? कहे कैसे आँसू
पलकैं पसारि दइ पुतरीनु पी गई॥

मया करि चितै चितु चोरी लीनो हितु करि,
हित बिनु चितै नही सोह सोच नित हैं।
'आलम' कहै हो पुर बास में जो बसी तिन्हैं,
नेकुक न चाउ निसु बासर चकित हैं।
देख टक लागे अनदेखे पलकौ न लागे,
देखे अनदेखे नैना निमिष रहित हैं।
सुखी तुम काहू हो जु आन को न चिन्ता,
हम देखे हू दुखित अनदेखे दुखित हैं॥

काकी लाज राखौ डरु कौन आपु कैसो घरु,
कौन घरबसी कछू बातें घर की कहे।

सास लत हिये म मलास्म ऐसी सात्वनि हैं,
काह चितर्वान [मा, नित चित को दहैं ।
आलम वहै हा परवस न वसात क्छू
भाग हू न छूटे दुस अति साथ ही गहैं ।
पलक ते न्यारी कीनी नीदऊ विडारि दीनी,
निसि दिन नेननि में बरी चैठाई रहैं ॥

लाज तजी जिहि कानु सखी,
इन लागन म नसि आपु हमाऊँ ।
आलम' आतुरता अति ही,
तिहि लालचु हो तुम्हरे सँग आऊ ।
का ह मिलै तो मया करि चाहत,
हो न कछू जिय हू की सुनाऊ ।
ऐसन का अँखियान महा सरस,
जो अँसवानि सा देसन पाऊ ॥

जहा तें निसारो जाय तहाँ उठि परे धाइ,
हियो अति अकुलाइ लाज न करत है ।
ऐसी चाह नार भुरि नन्द के कुमार,
अति ही नसी निहार प्रानति हरत है ।
देसे तें है मुरझात निन देसे निललात,
दुःस देत दुहूँ भाँति व्याकुल करत है ।
मारि मारि मींजि के मरूरन मरोरि डारी
मेरे नेना मेरी माई माही सों अरत हैं ॥

सखिन बुलावै काह मुसहि न लावै झुकि,
दूतियौ निकारी कीनि वेगि ही बगर तें ।
हा न भइ हाती कहाँ चाही की सुहाती ऐसी,
मान रस माती हो न गोली डोली डर तें ।

चौंको कहूँ मुरली की घोर मनी कान 'सेख',
नरी ही म देहली दूहली भइ घर तें।
परी तिहि काल हुती पीरी पीरी नाल जनु,
सीरी भ सुनि छुटि नीरी भर कर ते ॥

किंकिनि कङ्कन बजान मिलै
जग दादुर झींगुर की झनकारहि।
भूषन की मनि गन भइ
जुगनू घर की मनि जोति अपारहि।
'आलम कामिनि को तन कुन्दन,
जाइ मिल्यो नग बीजु उजारहि।
काम क जातनि स्याम निसा,
नर नैरी महाइ भये अभिसारहि ॥

सरद उज्यारी निसि सीतल समीर धीर,
सानत पियारी पिय पाये सुख सैन के।
आलम मुकनि आगे जाग व रसाल लाल,
बालहि नचानै लग लाभ जल नैन क।
चिलक सरीर रोमराजी राजै पिय पानि,
पल्लव उठे है जैसे चदन में चैन के।
सकुची पनच उतरें तें चाप चारु साहै,
धरे वे निचित मानो पाँचो बान मैन क ॥

बे ।न भई रजनी रसिक रितुराज की,
न छीन भयो भानु, याते लालच न डोली री।
प्राचियो रची पै तू न रची मेरे बचननु,
अलि माला चोली पै तू बोलहू न चोली री।
द्रुमबेली हली तू न हली अली चलिबे को,
चकई मिली पै तू न हियो खोलि बोली री।

उये रवि कौन काज उठ न रूठन तरो,
'आलम', न बचि काल सरति कलोली री ॥

काम रस माते ह्वै करेरी केलि की ही काह,
फूलनि की मानिका हू मींटि मुरझाई है ।
'आलम' सुकवि याहि और सी न जानो चलि,
ऐसी नारि सुकुमारि कहो कौने पाई है ।
कमल को पात लै लै हाथु याको गात छूजे
हाथ लाये मैली होय गात की निकाई है ।
अचर द मुख सनमुख तासो बात कीजे,
ना तरु उसाँस लागे मुकुर की हाई है ॥

राती होति छाती छिनु जूडियो न्है जाति कबू,
ताती सीरी राती पीरी बूझि न परनि है ।
'आलम' कहै हो काह कौन विथा जाना का को,
मौन भई काहू की न कानि हू करति है ।
आगि सी झरति है जू ओरो सी बिलाती है जू,
छिनु हू न देरो सुधि बुधि बिसरति है ।
अँसुवननि भीजी औ पसीजे त्यो त्यों आजे लाल,
साने ऐसी लानी देह लोन ज्यो गरति है ।

गोन के सुनत रही मौन भूली मौन सधि,
पीरी परि आई थकि नीरी रही हाथ ही ॥
चौंकति चपति पछिताति मुरझाति तन
ताही छन आय उर लाय लई नाथ ही ।
रही ही नवाय नारि पूछति पियारे के स,
कैसे हू कैने हू के उपाय उत माथ ही ।
मुख तन चितै हरबरै गहवरै गरे,
उतरु उसाँसु आँसु आये एक साथ ही ॥

भली भई भोर भये पौर धारे भावते जू,
हम अनभावती हैं भावतिनु भाय हो।
रास ने रहत हैं न रिस कीजे रस कीसु,
चार रस-रसे तिन रस करि पाये हौ।
ऐसो परिहासु हिया तरकि मरीगे पै न
'आलम' पतीजै पुनि पिय जानि पाये हौ।
अंग नय चिन्ह रतिरंग न दुरत नया,
आँगन में अंग मग अंगना लै आये हौ ॥

कैधौं मोर सोर तजि गये री अनत भाजि
कैधौं उत दादुर न बोलत हैं ए दई।
कैधौं पिक चातक महीप काहू मारि डारे
कैधौं बगपाँति उत अंतगत ह्वै गई।
'आलम' कहै हो आली अजहू न आये प्यारे
कैधौं उत रीति बिपरीत बिधि ने ठई।
मदन महीप की दोहाई फिरन तें रही,
जूझि गये मेघ कैधौं दामिनी सती भई ॥

जा थल कीन्हें बिहार अनेकन,
ता थल काँकरी बैठि चुन्यो करैं।
जा रसना सो करी बहु बातनु
ता रसना सो चरित्र गुन्यो करैं।
'आलम' जौन-से कुंजन में करी केलि,
तहाँ अब सीस धुन्या करैं।
नैनन में जो सदा रहते,
तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करैं।

जब कहूँ या दरसि मित्र हौ तौ भयो देखि चित्र,
अजहू लौ चित्र की अचेत चतुराई है

रीझ्यौ हौं तिहारो इन नैननि की रीझि कों जू,
कौन मृदु मूरति ~नय मुरझ' है।
घूंघट की ढिग चॉपि भृकुटी उचइ 'सेख'
मन्द मुसुकाइ चपला सी कोंधि गइ है।
तुम सोध वाही के सिधारे कुञ्ज सुधापुंज,
मोहि काहू घरी एक पाछे सुधि भई है॥

निधरक भइ अनुगनति है नंद घर,
और ठौर कहूँ टोहे हू न अहटाति है।
पौरि पाखे पिछवार कौरे कौरे लागी रहै,
आँगन देहली याही बीच मटराति है।
हरि रस राती 'सेख' नेकहू न होइ हाती,
प्रेम-मद-माती न गनति दिन राति है।
जब जब आवति है तब कछू भूलि जाति
भूल्यो लेन आवति है और भूलि जाति है।

बिथा की बिचार कै सकानी हू न जान्यो नेकु
पीरी होत जाति अरु तातो सीरो गातु है।
सुमन सहात न तो हिये हूँ ते हाते करि,
नैननि सों चाँद नेकु हूर न हितातु है।
तुम्हरे बियोग कवि आलम बिरह बढ्या,
तुम बिनु प्यारे हरि कछु न समात है।
आठहू की ओर आय ऐसी गति होति भई,
ओरती से नैना आगु ओरो सो ओरात है॥

रसनिधि

(रतन हजारा)

रसनिधि मन-मधुकर रमौ या चरनाम्बुज माहि
नरस अनुगुनो गुनत है गुनी गुनाइ नाहि ।

बाल बदन का मदन-नृप रूप-खजाना दान ।
नैने गवन पर मोह जनु मीनकेतन पर लान ॥

मदन-सरोवर तें भरे सरस रूप रस मन ।
डीठ डोर सो बाधिक डोलत सुन्दर नैन ॥

जब तें दीन्हों है इन्हें मैन-महीपति मान ।
चित चुगली लाग रंग नैन, लगि-लागि कान ॥

नागर सागर रूप को चाहन तरल तरंग ।
मगत न तर छबि-भवर पर मन बूडत सब अंग ॥

रूप-समुद्र छबि-रस भरौ अतिही सरसै सुजान ।
तामै तें भर लेत दृग आनें घट उनमान ॥

लाल भाल पै लसत है सुन्दर बिंदा लाल ।
दियो तिलक अनराग ज्यों लग्न कै रूप रसाल ॥

रूप सिंधु में चाह के जन तें परस्यो नेह ।
तब तें रैयो रंग सो रूप दिखाइ न्ह ॥

तो कैसे तन पालते नैंही नैन मराल ।
जो न चुगते रूपसर छबि मुक्ताहल लाल ॥

रूप-दीप जतो धरो मन फानूस दुराई ।
तऊ जोत वाकी दृगन होत प्रकासित आइ ॥

सुन्दर जोबन रूप जो बसुधा में न समाइ ।
दृग-तारन तिल निच तिहैं नैंही धरत लुकाइ ॥

ज्यो उत रूप अपार है त्यौ इत चाह ~ ॥
नैन रिचौंही दुहुन कौ पाइ सकै नहि पार ॥

जौ भावै सो कर लला इन्हें बाँध वा छोर।
हैं नुव सुघरन रूप के ये मेरे दृग चोर ॥

नुव वन में रख्यौ गयौ मन मानिक ब्रजराज।
लगे संगही फिरत हैं नैना पावन काज ॥

सरस रूप को भार पल सहि न सकैं सुकुमार।
याही तें ये पलक जनु झुकि आवें हर बार ॥

रूप सिरिस्टी पर गई जब तें दृगन सँभार।
लाल भये तब तें रहत बरषत अँसुवन धार

सुमन सहित आसू-उदक पल-अँजुरिन भरि लेत।
नैन भती तब चन्द-मुख देखि अरघ कौं देत ॥

रसनिधि सुन्दर मीत के रंग चुचौहैं नैन।
मन पट कौ फर देत हैं तुरत सुरँग य नैन ॥

कजरारे दृग की घटा जब उनवै जिहि ओर।
बरसि सिरावैं पुहुमि-उर रूप झलान झकोर ॥

प्रेम नगर दृग-जोगिया निस दिन फेरी देत।
दरस-भीख नँदलाल पै पल झोरिन भरि लेत ॥

रूप ठगौरी डारि के मोहन गौ चित चोरि।
अंजन मिस जन नैन ये पियत हलाहल घोरि ॥

दृग-द्विज ये उठि प्रातही करि अँसुवन असनान।
रूप-भूप पर जाचही छवि-मुकताहल दान ॥

दृग-दुस्सासन लाल के ज्यों ज्यों खैंचत जात।
त्यों त्यों द्रोपदिचीर लौ मन पट बाढत जात ॥

लघु मिलनो निकरा घनो वा निच बैरिन लाज।
दृग अनुरागी भावते कहु कह करें इलाज ॥

तीन पैंड जाके लखौ त्रिभुवन में न समाँइ।
घन राधे राखत तिन्हें तू दृग आधिन माँइ॥

मेरे नैननि ह्वै लखौ लाल आपनौ रूप।
भावत है गो भावतो कैसी भाँति अनूप॥

तनिक तिरछिटी के परै पल पल में अकुलाय।
क्यो सोवे सुख नींद दृग मीत बसै चर आय॥

तिल चुन लालच लाग के दृग-खञ्जन चल जाइ।
जुलफ-फंदा तें जो रचे दृग फन्दन परि जाइ॥

रिस-रस दधि, सक्कर जहाँ मधु मधुरी मुसक्यान।
घृतहूँ सनेह, छवि पय करैं दृग पंचामृत पान।

यातें पल पलना लगत हेरत आनदकन्द।
पियत मधुर छवि दृगन के जात ओठ ह्वै बंद॥

रुकत न सजन नैन ये जतन कीजियत जोर।
प्रीतम मन तन चलत हैं पल-पिंजरन को तोर॥

मचल जात हैं नैन ये समुझाये समुझै न।
बदन-चंद के लखत को सिसु ज्यो रिझत नैन॥

और रसनि लै जानहीं रसना हू अभिराम।
चाखत जे ये रूपरस यातें हैं चख नाम॥

उपजत जीवनमूर जहं मीत दृगन में आई।
तिनके हेर तुरत ही अतन सतन ह्वै जाइ॥

अद्भुत रचना बिधि रची यामें नहीं बिवाद।
बिना जीभ के लेत दृग रूप सलौनी स्वाद॥

भरत ढरत जलकन पलन पलहू ठहर सकै न।
भये कौन के नेह सौं तेरे चिक्कन नैन॥

छवि धन दे नदलाल ये किये अयाची आइ,
पल कर तन तै और पै दृग न पसारत जाइ॥

जाकी सुंदरता अधिक हरिहर अंग अनेक।
कितै कितै हेरें अरी डीठ बिचारी येक॥

मदन-मदन कौ पाइकै जुरी रूप की जात।
दृग मन धन कौ देत है छवि सौदा लै जात॥

प्रीतम कहि यह बात कौं जानो जात न हेत।
मो दृग तारन कौन बिधि बदनचंद भर देत॥

जिन नैनन का है सही मोहन रूप अहार।
तिन, को बैंद बतावही लंघन कौ उपचार॥

यह अचरज नैन में हियो कछु बिहसी अनखाइ।
चार दृगन में दुहुन की मूरत चार दिखाइ॥

घट बढ इन में कौन है, तुहीं साँवरे ऐन।
तुम गिरि लै नख पै धरयौ इन गिरधर लै नैन॥

या अखियाँ बौराइही लगे बिरह की बाइ।
प्रीतम पगरज कौ तिहै आँजन देहु लगाइ॥

पलक पानि बुस बरुनिका जल अँसुवा दुज मैन।
पियहिं चलत सुख नींद को करत संकलप नैन॥

दरसन की चलतो कहूँ जा सुमरन सौ काज।
दृग चकोर होते नहीं ससिमुख के मुँहताज॥

श्रवन सुनाग होत हैं सुने सँदेसन बैन।
त्रिपित होइ क्या दरस बिन रूप अहारी नैन॥

जलभरन तिलभरन पलक में कहु आली केहिं हेत।
मानता लखि बिरह कौ नैन तिलांजुलि देत॥

जिन नैनन में बसत है रसनिधि मोहन लाल।
तिन में क्यो घालत अरी तू भर मूठ गुलाल॥

अब लग बेधत मन हते दृग अनियारे बान।
अब बसी बेधनि लगी ससमुख सौ प्रान॥

बिछुरत सुन्दर अधर तैं रहत न जिहि घट साँस।
मुरली सम पाइ न हय प्रेम प्रीत की श्वाँस ॥

यह विधुवदनी के लसैं खुले छबीले बार।
बस्यो मनो तम आइ के ससिपुरा के पिछुवार ॥

पुरयन बिच कंचुक अरी ता बिच कच्ची उरोज।
गुंजत अलि सम चाइ नहि उर सरसाइ सरोज ॥

मोह तोह मेहदी कहूँ कैसे बनें बनाइ।
जिन चरननि सौं में रची तहाँ रची तूँ जाइ ॥

औरै लतन सों हित लता अद्भुत गति सरसाइ।
सुमन लगैं पहिले इहै पाछे कै हरियाइ ॥

राखे हैं हिय सेज मैं चुन के सुमन बिछाइ।
प्यार गुमानी पलक लौ इहाँ पाँर धर आइ ॥

अधियारी निस की जनम, वारे वाहू गुपाल।
चितचारी जो करत हो कहा अचभो लाल ॥

त्यों तू उत मुर जात है त्यौं गिरधर मुरजाइ।
तेरी या मुर जान पै मेरा मन मुर जाइ ॥

नेह कनर छबि अरगजा भर गुलाल अनुराग।
खेलत भरी उछाह सौं पिय संग हागी फाग ॥

भार होत पीरी लगी याते ससिपुरा जोत।
सरसन दरद चकोर की आइ हिये सधि होत ॥

याके जल वह लेत है पावक चिनगी खाइ।
चदहि जौ जारन लगो तो चकोर कित जाइ ॥

जिहि बाह्मण पिय-गमन की सगुन दियो ठहराइ।
स्यानी ताहि बुलाइ दै प्रान दान लै जाइ ॥

देव

पायनि नूपुर मंजु बजैं,
कटिकिंकिनि के धुनि की मधुराई ।
साँवरे अंग लसै पट पीत,
हिये हुलसै बनमाल सुहाई ॥
माथे किरीट बड़े दृग चंचल,
मन्द हँसी मुखचन्द-जुन्हाई ।
जै जग मंदिर दीपक सुन्दर,
श्री ब्रजदूलह देव सुहाई ॥

देव सबै सुखदायक संपति,
संपति-सो दंपति दंपति जोरी ।
दंपति सोई जु प्रेम प्रतीति,
प्रतीति की रीति सनेह निचोरी ।
प्रीति महागुन गीत विचार,
विचार की बानी सुधारस बोरी ।
बानी को सार बखान्यो सिंगार,
सिंगार को सार किसोर किशोरी ॥

जागत सोवत हू सपने,
अपनेई अयानपने को अँध्यारो ।
केहू छिपै न छिपो न दिपो,
निसि दीपति देह सदेह उज्यारो ।
नैनन ते निचुर्यो परै नेह,
सु रोकत बैनन प्रेम-पत्यारो ॥
दूरि रहे कित जीवन मूरि जु,
पूरि रहयो प्रतिबिंब ज्यौं प्यारो ॥

जाकै न काम न क्रोध निरोध,
लोभ छुवै नहिं छोभ को छाहौ।
मोह न जाहिं रहै जग बाहिर,
मोल जवाहिर ता अति चाहौ।
बानी पुनीत ज्यों देव धुनी,
रस आरद सारद के गुन गाहौ।
सील ससी सविता छविता,
कविताहि रचै कवि ताहि सराहौ॥

औचक अगाध सिंधु स्याही को उमडि आयो,
तामें तीनों लोक बूडि गए एक सग में।
कारे कारे आखर लिखे जु कारे कागद,
सुन्यारे करि बाँचे कौन बाँचे चित भग में।
आँखिन में तिमिर अमावस की रैनि जिमि,
जम्बूनद बुन्द जमुनाजल तरग में।
यों ही मन मेरो मेरे काम को न रहयो माई,
स्याम रंग ह्वै करि समान्यो स्याम-रग में॥

देव मैं सीस बसायो सनेह कै,
भाल मृगम्मद बिंदु कै भाख्यो।
कंचुकी में चुपरयो करि चोवा
लगाय लियो उर सों अभिलाख्यो।
कै मखतूल गुहे गहने,
रस मूरतिवत सिंगार कै चाख्यो।
साँवरे लाल को साँवरो रूप
मैं नैननि को कजरा करि राख्यो॥

राधे कही है कि तैं छमिया,
ब्रजनाथ किते अपराध छिन में।

ञानन तान न भूलत ना रिन,
ऑखिन रूप अनूप पिये मे ।।
आपने ओछे हिये में दुराइ,
दयानिधि त्यें नसाय लिये मैं ।
हौं हो असाध वसी न कहूँ,
पल आध अगाध तिहारे हिये में ।।

धार में धाइ धँसी निरधार ह्वै,
जाय फसी उकसीं न अधेरी ।
री अँगराइ गिरीं गहिरी,
गहि फेरे फिरी न घिरी नहिं घेरी ।
देव कछू अपनो नस ना,
रस लालच लाल चितै भइ चेरी ।
नेगही बूडि गई पखियॉं,
अँखियॉं मधु की मखियॉं भई मेरी ।।

रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठैं
सॉंसैं भरि आँसू भरि कहत दइ दइ ।
चौंकि चौंकि चकि चकि औचकि उचकि देव,
जकि जकि बकि बकि परत नई नई ।
दुहुन को रूप गुन दोऊ बरनत फिरैं,
घर न थिरात रीति नेह की नई नई ।
मोहि मोहि मोहन को मन भयो राधा मय,
राधा मन मोहि मोहि मोहन मई-मई ।।

कोइ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ,
कोई कहो रंकिनि कलंकिनि कुनारी हौं ।
कैसा परलोक नरलोक नर लोकन में
लीन्हो मैं अलोक लोक लीकन तें न्यारी हौं ।।

तन जाहि मन जाहि टन गुरजन जाहि
चीर क्यो न जाहि टेक टेरत न टारी हौं ।
टू दासनगारी ननगारी के मुकुट-चारा
पीन-पटवारी ताहि मुरति पै गारी हौ ।

चानि क चपक चरन भरि चारनी छवि छातो,
मन म्हत छितिधरी पीर छतिया की हौं ।
गानुम न छैन ढूँढि ढूँढि बन सैल हौं,
अकली यहि गैल तो को ऐल करि थाकी हौं ।
मंद मुसक्याय ले समाय ची में ज्याय लै र,
प्याइलै पियुप यासी अधर-सुधा की हो ।
मर मुसदाट दै र नजू दिसाइ नेकु,
ग रे मज भूप तेरे रूप-रस छाकी हो ॥

मोहि तुम्हैं अ तुम गनै न गुरजन तुम मरे,
हा तुम्हारी पै तऊ न पघिलत हो ।
दुरि रहे या तन में मन में न आवत हो
पच पूँछि देखे कहूँ काहू ना हिलत हौं ।
ऊचे चढि रोइ धोई देत न दिसाइ नेन,
गातनि की ओट बैठ बातन गिलत हौं ।
ऐसे निरमोही सदा मोही में बसत अरु
मोही ते निकरि फेरि माही न मिलत हो ।

गावरो रूप रह्यो भरि नैननि,
नैननि के रस सौ श्रुति साना ।
गान में देखत गात तुम्हार इ,
नात तुम्हारिये बात बखाना ।
उभा हहा हरि सों कहियो,
तम हो न इहाँ यह हो नहि माना ।

या तन ते बिछुर तो कहा
मन ते अनतै जु बसौ तब जाना ॥

जौ न जोमें प्रेम तब कीजै व्रतनेम,
कंजमुख रजै नज सजम बिसेखिये ।
आस नहीं पीकी तब आसन ही बाँधियत,
सासन के मासन का मृदि पनि पखिय ।
नख ते शिखा लौं सब स्याममई बाम भर
बाहिर वा भीतर न दूजो देव देखिए ।
जोग करि मिलें जा वियोग हाय जालम,
जु ह्याँ न हरि हायँ तब ध्यान धरे देखिय ॥

फलि फलि फूलि फूलि फलि फैलि भुकि भुकि,
भपकि झपकि आइ कुंजे चहूँ कोद ते ।
हिलि मिलि हेलिन पै केलिन करन गई
बेलिन बिलोकि वधू ब्रज की बिनोद ते ।
नंदजू की पौरि पर ठाढ़े हैं रसिक देव,
मोहन जू माह लीनी मोहनी ने मोदत ।
गाथन सुनन भूली साथन के फूल गिरे
हाथन के हाथन ते गादन के गोद ते ॥

घोर तर नीजन विपिन तरुनीजन ह्वै,
निकसीं निसंक निसि आतुर अतंक में ।
गनै न कलक मृदु लङ्कनि मयक मुखी
पकज पगन धाए भागि निसिपक में ।
भूपननि भूलि पैन्हे उलटे दुकूल देव,
खुले भुजमूल प्रतिकूल विधि बंक में ।
चूल्ह चढ़े छाँडे उफनात दूध भाँड़े उन,
सुत छाँडे अक पति छाँडे परजक में ॥

कालिंदी के कूलनि तरुनि तर-मूलनि
निहारि हरि श्रम के दुकूलनि उरमना।
मल्ली मलै मालती नेवारी बारी जूही दल
अंबकुल सपुन कदम्बन मे हरना॥
ता न देंद नालनि तमालनि मिलत फिरैं
गोपि गानि गाल मुख माँह मद भरना।
ललकि पुलकि पुननानि मे पुलाइमा सी,
निरखि निहारि गाह गाह गहि के टरती॥

रागिनि बीर्थी अनुरागिनि सोहागिनि तू,
देव बड़भागिनी लजाति औ लरति क्या।
मोहति जगति अरसाति हरखाति,
अनखाति बिलखाति दुख मानति डरति क्या।
चौंकति चकति उचकति औ थकति,
नियकति औ थकनि ध्यान धीरज धरति क्या।
मोहनि मुरति सतराति इतराति,
साहचरज सराहि आहचरज मरति क्यौं॥

जबते कुँवर कान्ह रावरी कलानिधान,
कान परी वाके कहूँ सुजस कहानी-सी।
तबही ते देव देखी देवता सी हँसति सी
खीझति सी रीझति-सी रूसति रिसानी सी
छाही-सी - छली-सी छीनि लीनी सी छकी सी छीन
जकी सी टकी सी लगी थकी थहरानी सी।
बाँधी सी बँधी सी विषबूटी सी बिमोहित-सी,
बैठी वह बकति बिलोकति बिकानी सी॥

बंसी गुन बाँधि चित चंग सो चढ़ायो मुनि,
तानन की तुंग धुनि चंग मुहचंग की।

मधुर मृदंग सुर उपज उपंग भई,
पगु परवीन बीन बोलनि अभंग की।
बधिक विहग बधू व्याध ज्यो कुरंग
ताहि हनि है कुरंगनैनी पारधी अनग की।
सग संग डोलति मसीनि के उमंग भरा,
अ ग अ ग उठति तरंग स्यामरंग की॥

राधिका का'ह को ध्यान धरै,
तन का'ह ह्वै राधिका क गन गावै
त्यौ अ सुवा बरसै बरसाने का
पाती लिखे लिखि राधिकै ध्यावै।
राध ह्वै जात तह छिन म,
नह प्रेम की पाती लै छाती लगावै।
आप म आपुन ही उरझै—
सुरझै निरुझै समुझै समुझावै॥

बरुनी बघम्बर म गूदरी पलक दोऊ
कोए राते बसन भगौहैं भेष रखियाँ।
बूड़ी जल ही म दिन जामिनि हूँ जाग,
भौहि धूम सिर छायो विरहानल विलखियाँ॥
अँसुवा फटिक-माल लाल डोरे सेली पेहि
भई हे अकेली तजि चेली सग-सखियाँ।
दीजिय दरस दव कीजिये सँयोगिनि य
जोगिनि ह्वै बैठी हैं वियोगिनिक की अँखियाँ॥

प्रानन प्रानपती सो निरतर,
अ तर अ तर पारत ह री।
दर कहुँ कहौ नाहर हूँ,
घर नाहर हूँ रहै भौंह तरी॥

लाज न लागत लाल अह,
नोहि जानी मैं आजु अकाजिनि री।
दरसन दै हरि का भरि नैन,
घग छिन एक सरीकिनि मग॥

स्याम को नाम सुनो जब ते,
इन कानन आनि कहूँ ते बमाय।
दरि उहै दुरि ढूँढि रहूँ,
दृग पूरि रही पहिले दुसहाय।
दव कहूँ तो मिलौगो गोपालहि
हैं अब आँसिन न उरझाइ।
न्याव चुके तो चुकै ब्रजराज सो,
आजु तो लाज सो मा सो लगाइ॥

दर अचान भई पहिचान,
चितौत ही स्याम सुजान के मौहें।
लालच लाज चितौत लग्यो,
ललचात लोचन लाज लजौहें।
प्रेम पुराने का नाम उग्यो,
जमि छीजि पसीजि हिये हुलसौहिं।
लाज कमी उकमी न, उतै,
हुलसीओं।लया निकमी कब भौहैं।

जगमग जाय जगाऊ तरिवन कान,
ओठन अनूठे रस हाँसी उमड़े परत।
कँचुकी में कसे आवें उकसे उरोज,
बिंदु वन्दन लिलार नटे नाग घुमड़े परत।
गोर मुग सेन सारी कंचन किनारीदार,
देव मनि झुमका झुमनि झुमड़े परत।

बड बडे नैन कजरारे बडे मोती नथ,
बडी बरनीन होड़ा होडी हुमड़ परत ॥

आई बरसाने ते बुलाई वृषभानसुता,
निरखि प्रभात प्रभा भानु की अथै गई ।
चक चकवानि के चकाये चकचोटन सौ
चौंकत चकोर चकचौंधि सी चकै गई ।
दव नँदनंद जू के नैननि अनदमई ।
नँद जू के मंदिरनि चदमई छै गई ।
कुजनि कलिन मई गुजनि अलिन मई,
गोकुल की गलिन नलिन-मई कै गई ॥

दव सुनरन गुन बीयाँ है मधुर महा,
अधर अरुार के ई सुघर घटार में ।
मंद मुसुकानि पटु तानि पटुता निपट,
न थको ये नथ को निरत निराधार में ।
घूँघट निनान तान तोरत तरयोननि सों,
तिलक कपोल बेंदी तूल के लिलार म ।
मानी लटकन को ननल नटु नाचे सदा,
नैन-नटवानि की चटुल चटसार म ॥

लागत समीर लक लहकै समूल अग,
फूल से दुकूलनि सुगध निथुरो परै ।
इदु-सो बदन मंद हाँसी सुधा बिंदु,
अरविंद ज्यो मुदित मकरंदनि मुरयो परै ।
ललित लिलार रंगमहल के आँगन के,
मग में धरत पग जावक घुरयो परै ।
देव मनि नूपुर पदुमपद हू पर है,
भू पर अनूप रग रूप निथुरयो पर ।

नन्दलला वृषभानलली मये,
साम्हे देव सयोग मुभे कै।
लायन लायन लागे अनूप,
द ै क दहूँ रसरूप लुभे कै।
मन्द हँसी अगनि ज्यौ निन्द
अचै गय दीठि में दाठि लुभे कै।
क न भा मंजिम खजन मानौ,
उडे चुनि चचुनि चखु चुभे कै॥

हौ सपन गई देखन का,
उहूँ नाचत नन्द जसोमति को नट।
वा मुसकाइ के भाव रगाइ कै,
मेरा ै खैचि रसा पकरा पट।
तौ लगि गा जगाइ उठी कहि,
ेव नधूनि मथ्यौ दधि का घट।
जागि परी ना न काहू कहूँ
न कदम्ब न कु न न कालिदी का तट॥

भहरि भहरि भीनी बूँ है परति मानौ,
घहरि-घहरि घटा घेरी है गगन म।
आनि कह्यो स्याम मो सों चलौ झूलिबे कों आज,
फूली ना समानी भइ ऐसी हौं मगन में।
चाहत उठाई उठि गई सो निगोटी नींद,
सोय गए भाग मेरे जागि वा जगन में।
आँख खोलि देखौ तौ न घन हैं, न घनस्याम,
वेइ छाइ बूँदें मेरे आँसु ह्वै दृगन में॥

रूप के मन्दिर साँवरो सुन्दर,
चाल चले गुन गर्व-गहीली।

जोबन के बलसानी हसै,
अलसानी हँसै अँसियाँ रनमीली।
देव मुन छवि सीस धुनै,
अरसाजन जे अन लाज-लजीली।
रहै क्यों उजरी गोकुल में,
मजगूजरी गोकुल की गरबीली॥

मंजुल मजूरी पंजरी सी है
मनोज के ओज सँवारति चीर न।
भूख न प्यास न नींद पर
परी प्रेम अजीरन के जुर जीरन॥
देव घरी पल जाति घुरी,
अँसुवानि के नीर उसास-समीरन।
आहन जाति अहीर अहे तुमैं,
काहू कहा कहौं काहू की पीर न॥

दोऊ किवार दुहूँ भुज दावे,
कछू बिच पैनी चितौनि छुरी है।
इंदु ते सुंदर आनन में मृदु,
मंद हसी हरि हेरि दुरी है।
नेमर खोरि दिय उमरै,
गृहपौरि के भीतर दौरि दुरी है।
मैन मनो तिरछी बरछी करै,
देव नचावत नैन-तुरी है॥

रैटी कहा उत्रि देखो मद्,
रँगभौन तुम्हैं बिन लागत सूनो।
चातक लौं रटि देव तुम्हैं,
स दफेर भयो चिनगी करि सूनो।

साँझ सुहाग की माँझ उदै करि,
सौति सरोजनि को बन ऊनो।
पावस ते उठि कीजिये चैत,
अमावस ते उठि कीजिये पूनो॥

ग्वालि गई इक ह्याँ की वहाँ,
मग रोकी सु तो मिसु कै दधिदानि को।
या तौ भट्ठ यह भेटी भुजा भरि,
नातौ निकासि कछू पहिचानि कौ।
आइ निछावर कै मन-मानिक,
गोरस दै रस लै अधरान कौ।
वाही दिना ते हिये मे गड़ो,
वहै ढीठ बड़ो री बड़ी अँखियान को॥

सखिन को सुख सुनै सौतिनि को महादुख,
होत गुरजननि के गुन को गरूर है।
देव कहै लाख-लाख भाँति अभिलाष पूरि,
पी के उर उमगति प्रेमरस पूर है।
तेरो कल बोल कल भावन को स्वाति बुंद,
जहाँ जाइ परयौ तहाँ तैसोइ समूर है।
व्यालमुख विष ज्यौं पियूष ज्यौ पपीहा मुख,
सीप मुख मोती कदली मुख कपूर है॥

भौन भरे सिगरे ब्रज सौंह,
सराहत तेर ई सील-सुभाइन।
छाती सिरात सुनै सबकी,
चहूँ ओर तै चोप चढी चित चाइन।
म री बलाइ ल्यौ मेरी भट्ठ,
सुनि तेरी हौ चेरी परौ इनि पायन।

सौतहू की अँखियाँ सुख पावति,
तो मुख देखि सखी-सुखदाइन ॥

तेइ वहू जिनके दृग द्वार,
परी परदा प्रिय प्रेम की पौढ़ी।
देव पतिव्रत पौरिया के उर,
कीरति की सिर चादरि आढ़ी।
अंतर अंत रमै मरमै नहि
बाहर दूर चलंती कि काढ़ी।
ना तिन डोलि सचे कुल लाज ते,
आँगिन में दिढ लाज की ड्योढ़ी ॥

भोरही भोरही श्री वृषभान के,
आया अकेलोई केलि भुलायो।
देव जू सोवति ही उत भावती,
झीनो महा झलकै पट तान्यो।
आरस ते उघरी इक बाँह,
भरो छवि हेरि हरी अकुलान्यो।
मीडत हाथ फिरे उमटो-सो,
मटो मन बीच फिरे मन्रायो ॥

दूरि धरो दीपक झिलमिलान कीनो तेज,
सेज के समीप छहरायो तमतोम सो।
दूलहे दुराइ आली बलि क महल गइ,
पनि के पठाइ वधू सरद क सोम सो।
अङ्क भरि लीन्ही गहि अंचल का छोर देव,
नोर द्वै जनाई नायो।र म सो।
लाल के अधर लाल अधरनि लागि लागि
उठी मैन आगि पघिलानो मन मोम सो ॥

लगी दुपहरी हरीमरी फूली कुंज मंजु,
गुंज अलि पुंजनि की देव हिया हरि जाति।
सीरे नदनीर तरु सीतल गहीर छाँह,
सोवैं परे पथिक पुकारैं पिकी करि ताति।
ऐसे में बिसारी गोरी भोरी कुम्हिलाने मस
पंकज से पाय धरा धीरज सों धरि जाति।
सोहैं घामस्याम मग हेरति हथेरी ओट,
ऊंचे धाम वाम चढ़ि आवति उतरि जाति।

पीछे परवीनैं जानैं संग की सहेली आगे
भार डर भूषन डगर डार छोरि छोरि।
चौंकति चकोरनि त्यों मोरै मुख मोरनि त्यों,
भौंरनि की ओर भीरु देखै मुख मोरि मोरि॥
एक कर आली-कर ऊपर ही धरे,
हरे हरे पग धरे देव चले चित चोरि चोरि।
दूजे हाथ साथनि सुनावति बचन,
राजहंसनि चुनावति मुकुत माल तोरि तोरि॥

पीतरंग सारी गोरे अंग मिलि गई देव,
श्रीफल उरोज आभा आभासै अधिक सी।
छूटी अलकनि छलकनि जलबूंदन की,
बिना बेंदी बंदन बदन सोभा बिकसी।
तजि तजि कुंज पुंज ऊपर मधुप गुंज गुंजरत,
मंजु रव बोलें बाल पिक सी।
नीवी उकसाइ नेकु नयन हँसाय हँसि,
ससिमुखी सकुचि सरोवर तें निकसी॥

आजु गई हुती कुंजनि लौं,
बरसैं उत बुंद घने घन घोरत

व कहै हरि भीजत देखि,
अचानक आय गए चित चोरत।
पाटि भट तट ओट कुटी के,
लपेटि पटी सों कटीपट छोरत।
चौगुनो रंग चढ्यो चित में,
चुनरी के चुचात लला के निचोरत॥

टूटि परे चुनि लै गई हार,
निवारि के वारनि वार न हारे।
लै मुँह मूँदि मनाइ गई,
निछिया गहि पाँय पुकारनहारे।
जानी न जात जे संग रमे,
रतिरङ्ग रमे के निहारनहारे।
काम कथा सब जानत दीपक
सेज-समीप निहारन हारे॥

आगे धरि अधर पयोधर सधर जानि,
जोरावर जघन सघन लरे लचि के।
बारबार देती बकसीसैं जेवनारनि को,
वारनि को बाँधे जे पिछारे दुरे बचि के।
उरन दुकूल दै उरोजनि को फूलमाल,
ओठनि उठाये पान खाइ खाइ पचि के।
देव कहै आजु मनो जीत्यो है अनंग रिपु
पी के संग संगर सुरति-रंग रचि के॥

प्यारी सँकेत सिधारी सखी संग,
स्याम के धाम सँदेसनि के मुख।
सूनो इतै रँगभौनु चितै,
चित मौन रही चकि चौंक चहूँ रु।

एक ही नार रही नाकि ज्यौं कि त्यौं
मोहनि तानिकै मानि महा दुख।
देव कछू रद नीरी दनी सी,
सु हाथ को हाथ रही मुख की मुख॥

बालम बिरह जिन जान्यो न जनम भरि,
बरि-बरि उठै ज्यौं ज्यौं बरसै बरफ राति।
बीजन डुलावत सखीजन सो सीत हू मैं,
सौतिन-सराप तन-तापनि तरफराति।
देव कहै साँसनि सों अँसुवा सुखात,
मुख निकसै न बात ऐसी सिसकी सरफराति।
लौटि लौटि परति करौंट खटपाटी लैलै,
सूखे जल सफरी लौं सेज पै फरफराति॥

लाल बिदेस बियोगनि बाल,
बियोग की आगि नई सुधि भूरी।
पान सों पानी सो प्रेम कहानी सो,
प्रान ज्यौं प्रानन या मत हूरी।
देव जू आजु हि मेंटे की औधि,
सुबीतति देखि निसेखि बिसूरी।
हाथ उठायो उड़ाइबे को,
उड़ि काग गरे परी चारिक चूरी॥

साँसन ही सौं समीर गयो अरु,
आँसुन ही सब नीर गयो ढरि।
तेज गयो गुन लै अपनो
अरु भूमि गई तन की तनुता करि।
देव जिये मिलिबेई की आस कै,
आस हू पास अकास रह्यो भरि।

मा दिन ते मुख फेरि हरे हँसि,
हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि ॥

लहर लहर सोधों सीतल समीर डोलै,
घहर घहर घन घेरि कै घहरिया।
झहर-झहर झुकि भीनी झरि लायो देव,
छहर छहर छोटी बूदन छहरिया।
हहर हहर हँसि हँसि के हिंडोरे चढ़ी,
थहर थहर तन कोमल थहरिया।
फहर फहर होत पीतम को पीतपट,
लहर-लहर होत प्यारी की लहरिया॥

सूझत न गात बीति आई अधराति,
अरु सोए सब गुरजन जानिकै बगरकै।
छिपिकै छबीली अभिसार को केवार खोलै,
खुलिगे रजाने चारु बदन अगर पै।
देव कहै भौंर गुंजि आए कुंज-कुंजनि तें,
पूछि पूँछि पीछे परे पाहरू डगरकै।
देवता कि दामिनी मसाल किधौं जोतिजाल,
झगरे मचत जागे सिगरे नगरकै॥

हँसत हँसत आई भावते के मन भाई,
देव कहै छबि छाई सोने से सरीर सो।
तैसी चन्दमुखी के चा चंद-मुख चंद्रमा सो,
होड परी चाँदनी औ चाँदनी से चीर सो।
सोंधे की सुबास अंग बास औ उसास नास,
आसपास बासि रही सुखद समीर सो।
कुंज तजि गुंजत गभीर गिरि तीर-नीर,
रह्यो रंगभौन भरि भौंरनि की भीर सो॥

धाइ खोर खोरि ते बधाइ पिय आवन की,
सुनि कारि-कारि रस भामिनि भरनि है।
मोरि-मोरि बदन निहारती बिहार भूमि,
घोरि-घोरि आनँद-घरी सी उघरनि है।
देव कर जोरि जोरि बंदत सुरन,
गुरु लोगनि के लोरि लोरि पाँयन परनि है
तोरि-तोरि माल पूरे मोतिन की चौक
निवछावरि को छोरि छोरि भूषन धरनि है॥

आगमन पीतम बन को सुनि चली स्याम
आगे आँसू चले ते छिपाय छन छंद ही।
सिसकी भरत सिसका न बात बिसकी-सी,
चैन नाही उत्पात हिये दुख दंद ही।
देव लरि लोटि पिय दीनो पग आइवे को,
नास ही को स्याम में हुलास ह्वै अनद ही।
निपट्यो न दुग, उपट्यौ न मुख, घूँघट ही
ससस्यो सकान्यो मुसक्या यो मुख मंद ही॥

सखी के सकोच गुरुसोच मृगलोचनि,
रिसानी पिय सों जु नेकु उन हँसि छुयो गात।
देव वे सुभाय मुसकाय उठि गए,
यहि सिसिकि सिसिकि निसि खोई राय पायो प्रात।
कौन जान नीर निन निरही बिरह बिथा,
हाय हाय करि पछिताय न कछू सोहात।
बड़े बड़े नैननि ते आँसू भरि भरि ढरि,
गोरा गारो मुख आजु ओरो-सो बिलानो जात॥

??? ते गिरत फूल पलटे दुकूल,
अनुराग अनुकूल भाग जाके रटभाग के

अंजन अधर बीच नख रेख लाल,
लाल जावक तिलक भाल सघन सुहाग के।
भौहें अलसौंहैं पल सोहैं पगे पीक-रस,
रगमगे नैन रैनि जागे लगे लाग के।
काहे को लजात जलजात से बदन,
मोहि महा सुख देत आए देत पेंच पाग के॥

प्यारी हमारी सो आवो इतै,
कवि देव कुप्यारी ह्वै कैसे के ऐये।
प्यारी कहो मति मो सो अहो,
कहि प्यारी यों प्यार की प्यारी बुलैये।
कै वह प्यार कै एतो कुप्यार,
औ न्यारी ह्वै बैठि क बात बनैये।
प्यारे पराए तौ कौन परेखो,
गरे परि कौ लगि प्यारी कहैये॥

रावरे पाँयनि ओट लसै,
पग गूजरी बार महावरु ढारे।
सारी असावरी की झलकै,
छलकै छबि घोर महानि घुमारे।
आवो जू आवो दुराहु न मोहु सों,
देवजू चंद दुरै न अँध्यारे।
देखौ हो कौनसी छैल छिपाय
तिरीछे हँसे वह पीछे तिहारे॥

हित की हितू री नहिं तू री समुझावे आनि,
सुख दुख मुख सुखदानि को निहारनो।
लपने कहाँ लो बालपन की बिकल बातें,
अपन जनहिं सपनहू न बिसारनो।

देवजू दरस बिनु तरसि मर्यो है पग,
परसि जियैगो मनसरो अनमारनो।
पतिव्रत व्रती ए उपासी प्यासी अँखियन,
प्रात उठि पीतम पिआयो रूप पारनो ॥

पीक-भरी पलकैं झनकैं,
अलकैं जु गडी सु लसैं सुज खोज की।
छाय रही छवि छैल की छाती मैं,
छाप बनी कहूँ ओछे उरोज की।
ताहि चितौति बडी अँखियान ते,
ती की चितौनि चली अति ओज की।
बालम ओर बिलोकि क बाल,
दई मनो खैंचि सनाल सरोज की ॥

फूले अनारनि पाँडर डारनि,
देखत देव महाउर माचैं।
माधुरी मौरनि अंब के बौरनि,
भौरनि के गन मन ते बाँचैं।
लागि उठै बिरहागिनि की,
कचनारनि की सु अचानक आँचैं।
साँचैं हँकारि पुकारि पिकी कहै,
नाचै नवेगी बसत की पाँचैं ॥

होरी को सोरु परयो मन पौरि,
किसोरी को चित्त निओहनि छीज्यो।
देव दुरी फिरै देखिबे कों,
न दुरै मन ओन मनोज को मीज्यो।
केसरिया चकचौंधत चीर ज्यौं,
केसरि-नीर सरूप लसी ज्यो।

लाल क रग मैं भीनि रही,
सो गुलाल के रग में चाहति भीन्यो ॥

लोग लोगाइन होरी लगाई,
मिला मिली चाउ न मेटत ही बन्यो ।
देवजू चंदन चूर कपूर,
लिलारन लै लै लपेटत ही बन्यो ।
वे यही औसर आये इहाँ,
समुहाय हियो न समेटत ही बन्यो ।
कीनी अनाकिनिया मुख मोरि पै,
जोरि भुजा भटू मेटत ही बन्यो ॥

सुनि के धुनि चातक मोरनि की,
चहुँ ओरनि कोकिल कूकनि सो ।
अनुराग भरे हरि बागनि मैं,
सखि रागत राग अचूकनि सो ।
कवि देव घटा उनई जु नई,
बनभूमि भई दल दूकनि सों ।
रँगराती हरी हहराती लता,
झुकि जाती समीर के झूकनि सो ॥

आली झुलावति झूँकनि सो,
झुकि जाति कटी झननाति झकोरे ।
चचल अ चल की चपला चल,
बेनी बडी सो गटी चित चोरे ।
या निधि झूलत देखि गयो,
तन ते कवि देव सनेह के जोरे ।
झूलत है हियरा हरि का,
हिय माँह तिहारे हरा के हिंडोरे ॥

राजत रजत सैल रच्यो केलि कयलास,
सोन मनि सिरार सुमेरहि समादरै ।
रँग-रँग अगन अनग रँग महल—
उदित र ग राधे रति र मा को निरादरै ।
भाँति भाँति कोरनि अमद चद्रकाति पाँति,
चद को दरस देव बरसति नादरै ।
धरनि सोपाननि ऊपर रह्यो भू पर को,
चारिहू तरफ फहराती रम चादरै ॥

छीर की सी लहरि छहरि गई छिति माँह,
जामिनी की जाति भामिनी को मानु ऐ ठयो है ।
ठौर-ठौर छूटत फुहारे मनो मोतिन के,
देन धनु याको मनु का को न अमेठयो है ।
सुधा के सरोवर सा अ नर उन्ति ससि
मुदित मराल मनु पैरिबे का पैठयो है ।
नैलि के बिमल फूल फूलत समूल मनो,
गगन ते उटि उडगन गन बैठा है ॥

फटिक सिलानि सो सुधारयौ सुधा मन्दिर
उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगै अमद ।
बाहर ते भीतर लौ भीति न दरसि देव,
दूध को सो फेनु फैल्यो आँगन फरसबंद ।
तारा सी तरुनि तामैं ठाढी झिलमिलि होति,
मोतिन की जोति मिली मल्लिका को मकरद ।
आरसी-से अम्बर मे आभासी उज्यारी लागै,
प्यारी राधिका को प्रतिबिंब-सो लगत चद ॥

आसपास पुहुमि प्रकास के पगार सूझै,
बन न अगार डीठि गली औ निबर

पारावार पारद अपार दसौ दिसि बूड़ी,
चंड ब्रह्मंड उतरात बिधुवर ते।
सरद जोन्हाई जन्हुजाइ धार सहस,
सुधाई सोभासिंधु नभ सुभ्र गिरवर ते।
उमड़ो परत जोति मंडल अखंड,
सुधामंडल मही मैं बिधुमंडल बिवरते॥

तेरो कह्यो करि-करि जीव रह्यो जरि-जरि,
हारी पाँय परि परि तऊ तैं न की सँभार।
ललन बिलोकि देव पल न लगाए तब,
यो कल न दीनी तैं छलन उछलनहार।
ऐसे निरमोही सों सनेह बाँधि हौं बँधाई,
आपु विधि बूड्यो माँझ बाधासिंधु निरधार।
ए रे मन मेरे तैं घनेरे दुख दीन्हे अब,
ए केवार दै कै तोहि मूँदि मारौं एक बार॥

ऐसो जो हौं जानतो कि जैहै तू विषै के संग,
ए रे मन मेरे हाथ पाँय तेरे तोरतो।
आजु लौं हौं कत नरनाहन की नाहीं सुनि,
नेह सों निहारि हारि बदन निहोरतो।
चलन न देतो देव चंचल अचल करि
चाबुक-चिताउनीनि मारि मुँह मोरतो।
भारो प्रेम पाथर नगारो दै गरे सों बाँधि,
राधावर बिरद के बारिधि मैं बोरतो॥

—०—

घन आनद

तीछन इछन बान बखान सो,
पैनी दसान लै सान चढावत।
प्रानन प्यारे, भरे अति पानिप,
मायल घायल चोप चटावत।
यौ घनआनँद छावत भावत,
जान सजीवन ओर तें आवत।
लोग हैं लागि कवित्त बनावत,
मोहिं तौ मेरे कवित्त बनावत॥

नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन औ,
सुंदरतानि के भेद को जानै।
जोग वियोग की रीति में कोविद,
भावना भेद-स्वरूप को ठानै।
चाह के रंग में भीज्यो हियो,
बिछुरैं मिलैं प्रीतम साति न मानै।
भाषा प्रवीन, सुछंद सदा रहै,
सो घन जी के कवित्त बखानै॥

प्रेम सदा अति ऊँचो लहै सु,
कहै इहि भाँति की बात छकी।
सुनि कै सब के मन लालच दौरै,
पै बौरे लखैं सब बुद्धि-चकी।
जग की कविताई के धोखैं रहै,
ह्याँ प्रबीनन की मति जाति जकी।

समझै कविता घनआनँद की,
हिय-आँखिन नेह की पीर तकी ॥

निरखि सुजान प्यारे रावरो रुचिर रूप,
बावरो भयो है मन मेरो न सिखै सुन ।
मति अति छाकी गति थाकी रतिरस भीजि,
रीझ की उमझलि घनआनँद रह्यो उनै ।
नैन बैन चित चैन है न मेरे बस, मेरी,
दसा अचिरज दखौ बूडति गहें गुनै ।
नेह लाय कैसे अब रूखे हूजियत हाय,
चंद ही के चाय च्वै चकोर चिनगी चुनै ॥

हीन भएँ जल मीन अधीन,
कहा कछु मो अकुलानि समानै ।
नीर सनेही कौ लाय कलंक,
निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै ।
प्रीति की रीति सु क्यों समझै जड,
मीत के पानि परे कों प्रमानै ।
या मन की जु दसा घनआनँद,
जीव की जीवनि जान ही जानै ॥

पहले घनआनँद सींच सजान,
कही बतियाँ अति प्यार पगी ।
अब लाय वियोग की लाय बलाय,
बढाय बिसास-दगानि दगी ।
अँखियाँ दुखियानि कुबानि परी,
न कहूँ लगैं कौन घरी सु लगी ।
मति दौरि थकी न लहै ठिक ठौर,
अमोही के मोह मिठास ठगी ॥

मन पारद कूप लौं रूप चहैं
उमहै सु रहै नहि जेतो गहौ।
गुन गाड़नि जाय परे अकुलाय,
मनोज के ओजनि सूल सहौ।
घनआनँद चेटक घूम में प्रान घुटैं,
न छुटैं गति कासो कहौं।
उर आवत यों छवि छाँह ज्यौं हौं,
व्रजछैल की गैल सदाई रहौ॥

रससागर नागर स्याम लखें,
अभिलाषनि धार मझार बहौं।
सु न सूझत धीर को तीर कहूँ,
पचि हारि कै लाज सिवार गहौं।
घनआनँद एक अचंभो बड़ो गुन,
हाथ हूँ बूडति कासों कहौ।
उर आवत यों छवि छाँह ज्यों हो,
व्रजछैल की गैल सदाई रहौ॥

तब तौ छवि पीवत जीवत हे,
अब सोचन लोचन जात जरे।
हित पोषके तोष सु प्रान पल,
बिललात महादुख-दोष भरे।
घनआनँद मीतम सुजान बिना,
सबही सुख साज समाज टरे।
तब हार पहार से लागत हे,
अब आनि के बीच पहार परे॥

पहिलें अपनाय सुजान सनेह सों,
क्यों फिरि तेह कै तोरिये जू।

समझै कविता घनआनँद की,
हिय-आँखिन नेह की पीर तकी ॥

निरखि सुजान प्यारे रावरो रुचिर रूप,
बावरो भयौ है मन मेरो न सिखै सुनै ।
मति अति छाकी गति थाकी रतिरस भीजि,
रीझ की उमझलि घनआनद रहयो उनै ।
नैन बैन चित-चैन है न मेरे बस, मेरी,
दसा अचिरज देखौ बूड़ति गहैं गुनै ।
नेह लाय कैसे अब रूसे हूजियत हाय,
चंद ही के चाय ज्यों चकोर चिनगी चुनै ॥

हीन भएँ जल मीन अधीन,
कहा कछु मो अकुलानि समानै ।
नीर सनेही को लाय कलंक,
निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै ।
प्रीति की रीति सु क्यों समझै जड़,
मीत के पानि परे को प्रमानै ।
या मन की जु दसा घनआनँद,
जीव की जीवनि जान ही जानै ॥

पहले घनआनँद सींच सुजान,
कहीं बतियाँ अति प्यार पगी ।
अब लाय बियोग की लाय बलाय,
बढाय बिसास-दगानि दगी ।
अँखियाँ दुखियानि कुबानि परी,
न कहूँ लगै कौन घरी सु लगी ।
मति दौरि थकी न लहै ठिक ठौर,
अमोही के मोह मिठास ठगी ॥

मन पारद कूप लौं रूप चहै
उमहै सु रहै नहि जैनो गहो।
गुन गाड़नि जाय परे अकुलाय,
मनोज के आननि मूल सहो।
घनआनँद चेटक धूम में प्रान घुटैं,
न छुटैं गति कासा कहो।
उर आनत यो छनि छाँह ज्यौं हौं,
मनछैल की गैल सदाई रहौ॥

रससागर नागर स्याम लखैं,
अभिलाषनि धार मझार बहो।
सु न सूझत धीर को तीर कहूँ,
पचि हारि के लाज सिवार गहो।
घनआनँद एक अचंभो बड़ो गुन,
हाथ हूँ बूड़ति कासों कहो।
उर आनत यो छनि छाँह ज्यौं हौ,
मनछैल की गैल सदाई रहौ॥

तब तौ छनि पीवत जीवत हे,
अब सोचन लोचन जात जरे।
हित पोपके ताप सु प्रान पले,
बिललात महादुख-दोष भरे।
घनआनँद मीतसु जान बिना,
सनही सुख साज समाज टरे।
तब हार पहार से लागत हे,
अब आनि के बीच पहार परे॥

पहिलें अपनाय सुजान सनेह सौं,
क्यौं फिरि तेह के तोरिये जू।

निरधार अधार दै धार मँझार,
दई गहि बाँह न बोरिये जू।
घनआनँद आपने चातक कों,
गुन-बाँधिलैं मोह न छोरिये जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस,
बिलास में यौ बिष घोरिये जू।

रावरे रूप की रीति अनूप,
नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारिये।
त्यौ इन आँखिन बानि अनोखी
अघानि कहूँ नहिं आन तिहारिये।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ,
सुजान सकोच औ सोच सहारिये।
रोकि रहै न, दहै घनआनँद,
बावरी रीझ के हाथनि हारिये॥

तब तौ छुरि दूरहि तें मुसकाय,
बचाय कै और कि दीठि हँसे।
दरसाय मनोज की मूरति ऐसी,
रचाय कै नैननि मैं सरसे।
अब तौ उर'माहि बसाय कै मारत,
ए जू बिसासि कहाँ धौ बसे।
कुछ नेह निबाह न जानत है तौ,
सनेह की धार मैं काहें धसे॥

रूप चमूप सज्यौ दल देखि,
भज्यौ तजि देसहि धीर मवासी।
नैन मिलै उर के पुर पैठते,
लाज लुटी न छुटी तिनका सी।

प्रेम दुहाई फिरी घनआनंद,
बाँधि लिये कुल-नेम गुढासी।
रीझ सजान सची पटरानी,
बची बुधि बापुरी ह्वै करि दासी ॥

जोरि कै कोरिक प्राननि भावते,
सग लिये अँसियानि मैं आवत।
भीजे स्नेहन सों घनआनँद,
छाय महारस कौ बरसावत।
ओट भएँ फिरि या जिय की गति,
जानत जीवनि पै जु जनावत।
मीत सुजान अनूठिये रीति,
जिवाय कै मारत मारि जिवावत ॥

फैलि रही घर अबर पूरि,
मरीचिनि-बीचिनि-सग हिलोरति।
भौंर-भरी उफनाति खरी सु,
उपाव की नाव तरेरनि तोरति।
क्यौं बचिये मनि हू घनआनँद,
बैठि रहें घर पैठि ढढोरति।
जोह प्रलै के पयोनिधि लौ,
बढि बैरिनि आज बियोगिनि बोरति ॥

आई है दिवारी बीते काजनि जिवारी प्यारी,
खेलै मिलि जूरा पैज पूरे दाव पावही।
हारहि उतारि जीतें मीत घन लच्छनि सों,
चोप-चढ़े बैन चैन चहल मचावही।
रग सरसावें बरसावें घनआनद,
उमग ओपे अगनि अनग दरसावही।

हियरा जगाय जागें पिय पास तिय रागें,
हियरा जगाय रूप जोगहि जगावहीं ।।

लालसनि भाँति भरे अभिलाषनि,
कै पल पाँवडे पंथ निहारैं ।
लाडिली आननि लालसा लागि,
न लागत हैं मन मैं पन धारैं ।
यौं रस भीजे रहैं घनआनंद,
रीझे सुजान सरूप निहारैं ।
चायनि बावरे नैन करैं,
अँसुवान सौं रावरे पाय पखारैं

आ ए कहूँ मनमोहन मो गली,
पूरन भागनि को मत उज्जै ।
हाय कछू न बस्याय तबै,
दुरि दर्सिगो दूभर, छाँह क्यों छुजै ।
माँगति हौं विधिना पै बड़े स्रम,
जौ कबहूँ जिय आसहि पूजै ।
चौथि को चंद लख्यौ ब्रजचंद सौं,
लागै कलंक तौ ऊपरै हूजै ।।

बरसत-लालसा-ललक झलकनि पूरि,
पलकनि लागी लगि आननि अरबरी ।
सुंदर सुजान मुखचंद को उदै बिलोकैं,
लोचन चकोर सेवैं आरति परब री ।
अंग अंग अंतर उमंग-रंग भरि भारी,
बाढ़ी चोप चुहल की हिय मैं हरबरी ।
बूँदि बूँदि तरैं ओपि याह घनआनंद यौ
जीव सूख्यौ जाय ज्यौं ज्यौं भीजत सरबरी ।।

रावरे गुननि बाँधि लियौ हियो जान प्यारे
इतै पै अचमा छोरि दीनी उ सुरति है
उघरि नचाय आपु चाय मैं रचाय हाय,
क्यों करि बचाय दीठि यों करि दुरति है।
तुम हूँ तें न्यारी है तिहारी प्रीति रीति जानी,
ढीले हू परे तें गरें गाँठि सी घुरति है।
कैसे घनआनँद अदोपनि लगैय सोरि,
लेखनि लिखार की परेखनि मुरति है॥

घेरयो पट आय अंतराय पटनि-पट पै,
ता मधि उजारे प्यारे पानस के दीप हौ।
लोचन पतंग संग तजैं न तऊ सुजान,
प्रान हंस राखिबे कौं धरे ध्यान सीप हौ।
ऐसे कहौ कैसे घनआनँद बताऊ दूरि,
मन सिंहासन बैठे सरस-महीप हौ।
दीठि आगे डोलौ जो न बोलौ कहा बस लागै,
मोहि तो नियोग हू मैं दीसत समीप हौ॥

जब तैं निहारे इन आँखिन सजान प्यारे,
तब तें गही है उर आन दसिबे की आन।
रस भीजे बैननि लुभाय के रचे है तहाँ,
मधु मकरंद सधा नारो न सनत कान।
प्रानप्यारी न्यारी घनआनँद गुननि कथा,
रसनो रसीली निसिबासर करत गान।
अंग अंग मेरे उन ही के संग रंग रँगे,
मन सिंहासन पै बिराजै तिन ही को ध्यान॥

ढिग बैठे हू पैठि रहै उर मैं,
घर कै सुरस को दुरस दोहत है।

दृग आगे तैं बैरी टरै न कहूँ,
जगि जोहन अंतर जोहत है।
घनआनँद मीत सुजान मिलैं,
बसि बीच तऊ मन मोहत है।
यह कैसो सँजोग न बूझि परै,
जु वियोग न क्यौं हूँ बिछोहत है।

नैन कहै सुनि रे मन! कान दै,
क्यों इतनो गुन मेटि दयौ है।
सुन्दर प्यारे सुजान को मंदिर,
आनरे तू हमहीं तें भयौ है।
लोभी तिहै तनकौ न दिखावत,
ऐसो महा मद छाकि गयौ है।
कीजिये तू घनआनँद आय कै,
पाय परौं यह याग नयौ है॥

लै ही रहे हौ सदा मन और को,
दैबो न जानत जान दुलारे।
देख्यो न है सपने हूँ कहू दुख,
त्यागे सकोच औ सोच सुखारे।
कैसो सँजोग वियोग धौं आहि!
फिरौ घनआनँद ह्वै मतवारे।
मो गति बूझि परै तब हो,
जब होहु घरीक हू आप तें न्यारे॥

डगमगी, डगनि धरनि छवि ही के भार,
ढरनि छबीले उर आछी बनमाल की।
सुंदर बदन पर कोटिक मदन वारौ,
चित चुभी चितवनि लोचन बिसाल की।

काल्हि इहि गली अली निरख्यो अचानक हौं,
कहा कहौं अटक भटक तिहि काल की।
भिजई हौं रोम रोम आनँद के घन छाय,
बसी मेरी आँखिन मैं आवनि गुपाल क

मुरस दर्स गोहन लगेइ फिरैं मोर कीर,
छूटे धार हेरि कै पपीहा-पुंज आनहीं।
गति रीझे चायनि सों पायन-परस-काज,
रसलोभी नित्त मराल-जाल धावहीं।
यातैं मन होय प्रान-सपुट मैं गोय राखौं,
ऐसे हूँ निगोड़े नैन कैसे बन पावहीं।
सींचिये आनँदघन जान प्यारी जैसे जानौ,
दुसह दसा की बातैं बरनी न आवहीं

मोर चन्द्रिका सी सर दरसन को धरे रहैं,
सूछम अगाध रूप-साध उर आनहीं।
ताहि सूझ तिनहूँ सों दग्नि भूली ऐसी दसा,
ताहि ते बिचारे जड़ कैसें पहचानहीं।
जान प्रानप्यारे के बिलोके अनिलोकिनें को,
हरष बिषाद-स्वाद-बाद अनुमानहीं।
चाह मीठी पीर जिन्हैं उठति अनँदघन,
तेइ आँखैं सारैं और पारा कहा जानहीं॥

रति-सुख स्वेद ओप्यौ आनँद बिलोकि प्यारे,
प्राननि सिहाय मोह-मादिक महा छकै।
पीतपट छोर लै लै ढोरत समीर धीर,
चुरनि की चाटनि लुभाय रही बासरै।
परसि सरस विधि रुचिर चिबुक त्यों ही,
कपति करनि केलि-भाव-दाँव ही तकै।

लाजनि लसोंही चितवनि चाहि जान प्यारी,
सींचति अनंदघन हाँसी सों भरीन कै।

जौ उहि ओर पटा घनघोर सो,
चातक मोर उछाहनि फूलते।
त्यौं घनआनँद औसर साजि,
सँजोगिनि झुंड हिंडोरनि भूलते।
पीपम तें हतई जु लता,
द्रुम अंकनि लागती ह्वै रसमूल ते।
तौ सजनी! जिय ज्यावन जान सु,
क्यों इत की हित की सुधि भूलते॥

अति सूधो सनेह को मारग है,
जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपुनपौ,
झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ,
यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढे हौ कहौ,
मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

चूर भयौ चित पूरि परेखनि,
एहो कठोर अजौं दुख पीसत।
सौंत हियैं न समाय सकोचनि
हाय इतै पर जान न्सीसत।
ओटनि चोट करौ घनआनँद
नीके रहौ निसद्यौस असीसत।
प्राननि बीच बसे हौ सुजान पै
आँखिन दाप कहा जु न दीसत॥

ज्यौं नहरै न कहूँ ठहरै मन,
दह सो आहि विरह को ले ।
दरसति ना दखिया अँखियाँ निन,
बैरियों की सुपने सों ।
हौं तौ सुजान महा घनआनँद,
पै पहिचानि की रास न रसौं ।
हाय दई यह कौन भइ गति,
प्रीति मिटै हूँ मिटै न परैसो ॥

दृग-नीर सा दीठिहि देहु बहाय पै
वा मुख कों अभिलाखि रही ।
रसना विष बोरि गिराहि गसो,
वह नाम सुधानिधि भाखि रही
घनआनँद जान-सुबैननि त्यों,
रचि कान बचे रुचि साखि रही ।
निज जारन पाय पने करहूँ,
पिय-कारन यौं जिय राखि रही ॥

जिनकी नित नीके निहारनि ही,
तिनको अँखियाँ अब रोवति हैं ।
पल पाँवड़े पायनि चायनि सों,
अँसुवान के धारनि धोवति हैं ।
घनआनँद जान सजीवनि का
सपने बिन पाएँई सोवति हैं ।
न खुली मुँदी जानि परै कछु ,
दुखहाइ जगे पर सोवति हैं ॥

पहिले पहिचानि जु मानि लई,
तो सु भइ देख मूल

इत के हित वैर लिय ै उत ह्वै,
करि ज्योहरि ब्योहरि लोभ महा।
घनआनँद मीत सुनो अरु उतर,
दूरतें देहु न देहु हहा।
तुम्हैं पाय अजू हम सोयो सबै,
हमें सोय कहौ तुम पायो कहा॥

सावन आनन हेरि सखी।
मनभावन आवन चोप विसेखी।
छाए कहूँ घनआनँद पान,
सम्हारि की ठौर लै भूलनि लेखी।
बूँदै लगे सब अंग दगै,
उलटी गति आपने पापनि पेखी॥
पौन सौं जागति आगि सुनीही पै,
पानी तैं लागति आँखिन देखी॥

एरे नीर पौन। तेरो सबै ओर गौन,
बीरी तो सो और कौन मनै ढरकौ ही बानि दै।
जगत के प्रान, ओछे बडे सा समान,
घनआनद निधान सुखदान दुखियानि दै।
जान उजियार गुन-भारे अत माही प्यारे,
अब ह्वै अमोही बैठे, पीठि पहिचानि दै।
बिरह बिथाहि मूरि, आँखिन मैं राखौं पूरि,
धूरि तिनि पायनि की हा हा! नेकु आनि दै॥

परकाजहि देह को धारि फिरो,
परजन्य जथारथ ह्वै दरसो।
निधि-नीर सुधा के समान करो,
सब ही विधि सज्जनता सरसो।

घनआनँद जीवन-दायक हौ,
कछू मेरियौ पीर हिय परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन,
मो अँसुवानहि लै बरसौ॥

राधा नव जोबन बिलास कौ बसत जहाँ
अंग अंग रंगनि निकाम ही की भीर है।
प्यारी बनमाली घनआनँद सुजान सेवैं,
जाहि देखि काम के हिये मैं नाहि धीर है।
सुरनि समाज साज कोकिल कुहूक जानै
साँसन अनेक सुख-सौरभ समीर है।
स्वाद-मकरंद जो मनोरथ मधुप पुंज,
सु बृंदावन देस जमुना के तीर है॥

चाहिये न कछू जाकी चाह नामौ फल पायौ,
यातैं याही बन के सरूप नैन कीनौ घरु।
जहाँ राधा-केलि बेलि कुंज की छबनि छायौ,
लसत सदाइ कूल कालिंदी सुदेस थरु।
महा घनआनँद फुहार सुरस सार सींचैं,
हित उतमगनि लगाय रंग भर्यौ झरु।
प्रेम रस मूल फूल मूरति निराजौ,
मेरे मन आलबाल हरन दया को कलपतरु॥

एकै डोलै बेचत गुपालहि दहेंडी लियें,
नैननि समायौ सोही बैनन बनात है।
और उठि बोलै आगैं लाबरी कहा है मोल,
कैसो धौं जम्यौ है ज्यौ सबादै लजचात है।
आनँद को घन छायौ रहत सदा ही मन,
चोपन पपीहा लौं चहूँगा मँडरात है।

गोकुल रधून की बिकन पै निकाय रह्यौ,
गली गली गोरस ह्वै मोहन निकात है ॥

ब्रज बृंदाबन गिरि गोधन जमुन तीर,
सुरस सुदस पुर बन सुख साधा को।
जाकी भूमि मानहि सिहात हैं गिरीस ईस,
धूरि रसमूरि हरै दुरस सब बाधा को।
एक रह निहरत दोऊ महारस भीनै,
आनँद पयोद प्रीति परम अराधा को।
स्याम के सरूप को कछुक निरधार होय,
तौ कछु कह्यौ परै अगाध प्रेम राधा को।

झलकै अति सुंदर आनन गौर,
छकै दृग राजत कानति ह्वै।
हँसि बोलनि मैं छवि फूलन की,
बरषा उर ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करैं,
कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग अंग तरंग उठै दुति की,
परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ॥

लाजनि लपेटी चितवनि भेद भाय भरी,
लसति ललित लोल चख तिरछानि मैं।
छवि को सदन गोरो बदन, रुचिर भाल,
रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं।
दसन दमकि फैलि हियें मोती माल होति,
पिय सों लड़कि प्रेम पगी बतरानि मैं।
आनँद की निधि जगमगति छबीली बाल
अंगनि अनंग रंग ढुरि मुरि जानि मैं ॥

रस आरस भोय उठी कछु सोय,
लगी लसैं पीक पगी पलकैं।
घनआनँद ओप बढ़ी मुख ओरै सु,
फैलि फबी सुथरी अलकैं।
अगराति जम्हाति लसैं सब अंग,
अनंगहि अंग दिपै झलकैं।
अधरानि मैं आधिय बात धरैं,
लड़कानि की आनि परैं छलकैं॥

बंक बिसाल रंगीले रसाल,
छबीले कटाछ कलानि मैं पंडित।
साँवल सेत निकाई निकेत
हियें हरि लेत हैं आरस मंडित।
बेधि कै प्रान करैं फिरि दान,
सुजान खरे भरे नेह अखंडित।
आनँद आसव घूमरे नैन,
मनोज के चोजनि ओज प्रचंडित॥

जात नए नए नेह के भार,
बिंधे उर ओर घनी बरुनी के।
आनँद मैं मुसक्यानि उदोत मैं,
होत हैं रोता तमोल अमी के।
भोर की आवनि प्रान अँकोर नियै
तित ही चित्रि आए जदी के।
डारियै जू तिन तोरि कै,
लालन और दिनान तें लागत नीके॥

दिवाकर-कुँवरि तमालन की पाँति बीच,
बीचिनि मरीचै जागि लागति

भावना भरीने हिय, गहर भरत परे,
एकरस राग धुनि रंगनि रँगमगी।
चातकी भइ है चाहि आँद के अंबुद का
वन घन ढूँढे रीझि डोलती डगमगी।
प्रेम की पसीजनि प्रवाह रूप देखियत,
सदा स्याम के सिंगार सार सों सगमगी॥

सुंदर सरस लीनो ललित रँगीलो मुख,
जोबन झलक क्यौं हूँ कहीं न परति है।
लोचन चपल चितवनि चाय चोज भरी,
भृकुटी सुठौन भेद-भायनि ढरति है।
नासिका रुचिर अधरनि लाली सहजै ही,
हसनि दसन जोति हियरा हरति है।
नख सिख आनँद उमग की तरंग बढ़ि,
अङ्ग अङ्ग आली छवि छलक्यौ करति है॥

—लत खिलार गुन आगर उदार,
राधा नागरि छबीली फाग राग सरसाति है।
भाग-भरे भावते सौं औसर पर्यो है आनि,
आनँद के घन की घमंड दरसाति है।
औचक निसंक अंक चाँपि खेल धूधरि में,
सखिन त्यौं सैननि ही चैननि सिहाति है।
केसू-रंग बोरि गोरे करि स्याम सुंदर कों,
गोरी स्याम-रंग बीच बूड़ि-बूड़ि जाति है॥

सौंधे सनी अलकैं बगरी मुख
आनन जोन्ह सों चंदहि चोरति।
अंगनि रंग तरंग नदी सु,
क्तिी उपमानि के पानिप ढोरति।

माहन मो रस फाग रची सु,
भली भई हौं कर त हि निहोरति।
आनँद को घन रीझनि भीजि,
भिजे पटई कहा चीर निचारति॥

रति रंग रागे प्रीति पाग रैन जागे नैन,
आवत लगइ घुमि झमि छवि सा छकै।
सहज बिलोल परे केलि की कलोलन में,
कबहूँ उमगि रह रस जक थकै।
नाकी पलकनि पीक-लीक झलकनि माँहै,
रस बलकनि उनमदि न रहै सकै।
सुरत सुजान घनआनँद पावत प्रान,
अचिरजसानि उघरे हू लाज सों ढकै॥

केलि की कलानिधानि सुन्दरि सुजान महा,
आन न समान छवि छाँह पै छिपैये सौनि।
माधुरी मुदित मुख उदित सुसील भाल,
चचल बिसाल नैन लाज भीजिये चितौनि।
पिय अंग-संग घनआनँद उमंग हिय,
सुरति तरंग रस बिबस-उर मिलौनि।
झूलनि अलक, आधी खुलनि पलक,
स्रम स्वेदहि भलक भरि ललक सिथिल हौनि॥

सींचे रस रंग अंग अंग फूलि फैलि छवि दवि,
दवि देखि मालती-लतानि उरझाति है।
आछे राछे मधुप कुमार कोटि ओटि कीजे,
अलक छबीलो मन छूटियो कमति
कहा कहौ राधे घनआनँद पिया के हिय,
बसि रसि जसी मेरी आँखिनि

कौन धौं अनूठी अभी प्यावै जिय ज्यावै भावै,
ए री तेरी हँसनि बसत को हँसति है ॥

देखि धौं आरसी लै बलि नैकु,
लसी है गुराई में कैसी ललाई।
मानौ उदोत दिवाकर की दुति,
पूरन चदहि भेंटन आई।
फूलत कज कुमोद लखें,
घनआनँद रूप अनूप निकाई।
तो मुख लाल गुलालहि लाय कै,
सौतिन के हिय होरी लगाई ॥

रूप के भारन होति है सौंही,
लजौंहियै दीठि सुजानि यौं भूली।
लागियै जाति, न लागि कहूँ निसि,
पागी तहाँ पलकौ गति भूलि।
बैठियै नू हिय पैठत आजु,
कहा उपमा कजयै समतूली।
आए हौ भोर भएँ घनआनँद,
आँखिन माँझ तौ साँझ-सी फूली।

श्रीपति

घूँघट उदय गिरिवर तें निकसि रूप,
सुधा सौं कलित छबि-कीरति नगारा है।
हरिन डिठौना स्याम, सुख सील बरषत,
करषत सोक अति तिमिर बिदारो है।
श्रीपति बिलोकि सौति बारिज मलिन होत,
हरषि कुमुद फूलै नंद को दुलारो है।
रंजन मदन तन गंजन बिरह, बिबि
खंजन सहित चंदबदन तिहारो है ॥

हारिजात पारिजात मालती बिदारि जात,
पारि जात पारिजात सोभन मैं करी सी।
माखन सी मैन-सी मुरारी मखमल सम,
कोमल सरस तन फूलन की छरी-सी।
गहगही गरबी गुराई गोरी गोरे गात,
श्रीपति बिलोर-सीसी ईंगुर सों भरी-सी।
बिज्जु थिर धरी-सी कनक-रेख करी सी,
प्रवाल छबि हरी सी लसत लाल लरी-सी ॥

जैसे रतिरानी के सिधारे कवि श्रीपति जू,
जैसे कलधौत के सरोरुह सवारे हैं।
वैसे कलधौत के सरोरुह सवारे कहि,
जैसे रूपनट के चटा से छबि ढारे हैं।
वैसे रूपनट के चटा से छबि ढारे कहु,
जैसे काम भूपति के उलटे नगारे हैं।
वैसे काम भूपति के उलटे नगारे कहु,
जैसे प्राणप्यारी ऊचे उरज तिहारे हैं ॥

दराज दरजि हिय, लरजि लरनि करि
अरनि अरनि परें दूत य मदन के।
बरजि बरजि ज्ञाति, तरजि तरजि मोपै
गरजि गरजि उठै बादर गगन के॥

तेरेई ने झमक लसिकै,
जुगुनून की जे तन खुकै लगीं।
घर की सुधि कै दरकी छतियाँ,
जब सीरी बयारिकी झूकै लगीं।
भनै श्रीपति आप घटा घहरै,
हहरै हियरा अति ह्वै कै लगी।
अब कैसे बनाव बनैगो पिया बिज,
पापिनी कोकिल कूकै लगीं॥

छायौ नभमंडल घुमडि घन श्रीपति जू,
आनँद अथोर चारो ओर उमँगत है।
पायौ मद मालती को, कुंज कुंज गंजत है—
भौंर दुरस-पुंज गेह गेह ते भगत है।
आयौ देस देस तें बिदेसी सब कंठ लायौ,
निज निज ती को, भरो मोदहि जगत है।
आयौ सखी सावन, सोहावन सही,
पै मोहि बिन मनभावन भयावन लगत है॥

तम की जमक, चक्रपाँति की चमक,
ज्योति जींगन झमक, चमकन चपलान की।
पैहर झकोरें, मोरें रोरें चहुँ ओरें सोरें,
प्रेम के हलारें घोरें धुनि धुरवान की।
रतियाँ जमकि आईं, छतियाँ उमँगि आइ,
पतियाँ न आइ प्यारे श्रीपति सुजान की।

नेह तरजन बिरहा के सरजन सुनि,
मान मरदन, गरजन बदरान की ॥

पपिहा की पुकार परी है चहूँ,
बन में गन मोरन गावन के।
कहि श्रीपति सागर से उमगे,
तरु तोरत तीर सुहावन के।
बिरहानल ज्वाल दहै तन को,
छिन होत सखी पग पावन के।
दिन में मनभावन आवन के,
घहरान लगे घन सावन के ॥

आढ आढ करत असाढ आयो मेरी आली
डर सी लगति देखि तम के तनाक ते।
श्रीपति ये मैन माने मारन के वैनु सुनि,
परत न चैन बुंदियान के भनाक तें।
झिल्ली-गन भाक झनकारें न सँभारें नेक,
दादुर दपट बीज तरसै तमाक तै।
भरकी बिरह आग, करकी कठिन छाती,
दरकी सजन जलधर की धमाक तै ॥

जलभरे भूमें मनो भूमैं परसत आइ,
दस हू दिसान घूमैं, दामिनी लए लए।
धूमधारे धूसर से, धुरवा धधारे कारे,
धुरवान धारे धावें छबि सो छए छए।
श्रीपति सुजान कहै घरी घरी घहरात,
तापत अतन तन ताप सो तए तए।
लाल बिन कैसे लाज चादर रहैगी बीर,
कादर करत मोहि वादर नए-नए।

लाल दुकूल सजै रचि मा
सब ही सों निसक न लाज रही गहै ।
और की ओरहि जात न है,
ससिनाथ किती समुझाइ सखी कहै ।
पोछत स्वेद न अगनि तैं,
सु अनग कला अति ही चित म चहै ।
जानि परै न कछू उर की,
निसि वासर वाम की भौंह चढी रहै ॥

न्हाइबे जाइ तौ सग सखी बनि,
पामरे पामरी के करिबौ करै ।
केसर लाइ सँवारि कै आड
निहारि कै नेह नदी नारिबौ करै ।
जो ससिनाथ न डीठि परै,
कुल कानि तें नारि कछू डरिबौ करै ।
तौ निसि वासर सावरिया,
घर की नित भाँमरिया भरिबौ करै ।

सरसाए दुकूल सुगध सा सानि,
सरै, रति मदिर वास रह्यौ ।
रँग-रँग के अग अनूप सिगार,
सिगार निहारि कै मोद लह्यो ।
पुनि बीरी खवावत है ससिनाथ,
सुजान सो प्यारी कछू न कह्यौ ।
जब लागन लागे महावर पाँइ,
तबै मुसिक्याइ कै हाथ गह्यौ ॥

ठाढी बतरात इतरात ही परौसिन तें,
जैसी तिय दूसरी न प्रेम पञ्चाँह म ।

दीठि परि गए तहाँ सुन्दर सुजान कान्ह,
औचक ही प्रकट छिपति परछाँह में।
सोमनाथ त्यों ही प्रानप्यार सो सुनाइ कह्यो,
तिय ने मसीसो तरुनाई के उछाँह में।
बसीबट निकट हमें तू मिलियो री कालिह,
कातिक में न्हाऊँगी नरैयन की छाँह में॥

खेलि है लाल के संग चलो,
कहिकै उर में मति औरइ ठानी।
यों बहकाइ के नेह बढ़ाइ,
मयङ्कमुखी रति मंदिर आनी।
ह्याँ न लखे ससिनाथ सुजान,
न चूक तहीं ठठकी ठकुरानी।
है न सयान रती भर हू,
अलबेलो तऊ हिय में अकुलानी॥

उज्जल सरद चंद-चंद्रिका अनंद दुति,
त्रिविध समीर की झकोर आनि पहरें।
मुक्ता अनिंद मकरन्द के से बिंदु चारु
बदनारबिंद की छबीली छटा छहरें।
साजि रंग-रंगनि के सुंदर सिंगार प्यारी,
गई केलि धाम दूनी जामनी की पहरें।
ऐनि परजंक नंदनंद बिन सोमनाथ,
लागी अंग उठनि भुजंग की सी लहरें॥

निसि अंत ह्वै आए प्रभात भए,
गति पाँइन औरई पाइ लई।
ससिनाथ उनीदी झुकैं अँखियाँ,
पगिया उन फेरि बनाइ लई।

रति चिन्ह न पूछति जानि सुजान,
हँसी मिस बाल भुलाइ लई।
फेर घन अमोल कपोलन चूमि,
भुजा भर कंठ लगाइ लई॥

उतै है मन, यातें सूधे न परत पाग,
अंग अरसात मुरहरैं उठि आए हौ।
रंगमगी अंखियाँ अनूप रूप चोरैं लेत,
सोमनाथ आछे यहि रूप सखि पाग हौ।
हम सों तौ निहसि बिलोकिबौ बिसार्यो पिय,
सब निधि उनई के हाथन बिकाए हौ।
साह सो नटत, नेई वैनन प्रकट होत,
अनुराग जिनको लिलार धरि आए हौ॥

हरि तौ मनुहार मनाइ गए,
जिनपै जियरा रति वारति है।
ससिनाथ मनोज की ज्वालनि सों,
अब कुंदन सौ तन जारति है।
उठि लेटनि सेज पै चंद्रमुखी,
पछिताइ कै पौरि निहारति है।
न रहे मुख तैं दुख अंतर कौ,
अँसुआनि सों आँखि पखारति है॥

सासु के त्रास निसारे सबै,
उपसाहन हू तें निसंकिन ह्वै भई।
लीक अलीक न जानी कछू,
ठकुरानी रहाइ सु रंकिन ह्वै भई।
जा ससिनाथ सुजान के काज,
तजे सुख साज अलंकिन ह्वै भई।

री, तिन सों हित तोरि कै हाय !
वृथा मन माँहि कलपनि हौं भए ॥

कान्ह निहारि तरैयन की द्युति,
लाग्यौ महा बिरहा तन तावन ।
है सनिपात सदा बहिये
चित सौं लगि नैन ही कान मे पावन ।
बीच द्रुमन के फूलन लै,
अलबेली के, प्रेम को सिंधु बढ़ावन ।
कान्ह दिवारी की रैन चले
गरमाल मनावन को मन भावन ॥

आली, ए बहु नागर बिदेस ध्यान धरि धार,
तिनको सुरूप नैन दरसन पावैंगे ।
हात हैं री सगुन सुहावने प्रभात ही तें,
आगन में अधिक बिनोद सरसावैंगे ।
सोमनाथ हेरे हेरि बतियाँ अनूठी कहि,
गूढ़ बिरहानल की तपनि बुझावैंगे ।
सबही तें प्यारे प्रान, प्रानन तें प्यारे पति,
पति हू तें प्यारे प्रानपति आज आवैंगे ॥

दिसि बिदिसनि ते उमड़ि मढ़ि लीन्हो नभ,
छेड़ि दीनो धुरवा जवासे जूथ जरिगे ।
डहडहे भये द्रुम रंचक हवा के गुन
कहूँ कहूँ मुरवा पुकारि मोद भरिगे ।
रहि गये चातक जहाँ के तहाँ देखत ही,
सोमनाथ कहै बूँदाबूँदी हू न करिगे ।
सोर भयो घोर, चहूँ ओर महिमंडल में,
आए घन, आए घन, आइ कै उघरिगे ॥

बादर उतंग अंग डोलत अनंग भरे,
बगन कतार दंत दीरघ सवार- हैं।
चपला चमक, तरक्क औ गरज गूंज,
बरषै मदन निसि नीर के पनार हैं॥
सोमनाथ प्यारे नंदनंद के बिरह जानि,
ब्रज में कुमग्गन न्ररोर हनकारे हैं।
आए घन भारे मैं निहारि उर धारे डरी!
कारे रंग बारे ए मतंग मतवारे हैं॥

रसलीन

(रस प्रबोध से)

चित चाहत अलि भृंग तुव लहि दीपक परिमान ।
लै लै जनम पतंग को सदा त्यागिये प्रान ॥

नैन चहैं मुख देखिये मन सों कछू दुराइ ।
मन चाहत दृग मूँदि कै लीने हिये लगाइ ॥

गिरजा सिर तन मैं रही कमला हरि हिय पाय ।
तू तन हरि पिय हिय बसी हिय हरि प्रानन चाय ॥

मुख ससि निरखि चकोर अरु तन-पानिप लखि मीन ।
पद पंकज देखत भँवर, होत नयन रस लीन ॥

मौतिन मुख ससि-कमल सो पिय चख भये चकोर ।
गुन्जन मा सागर भये लखि दुलहिन मुख ओर ॥

जब तैं आइ तड़ित लौ नीलाम्बर मैं कौंधि ।
तब त हरि चकृत भये लगी चखनि चकचौंधि ॥

मोहन लखि यह सखन त ह्वै उदास दिन रात ।
उमहति हँसति जकति डरति बिगचति बिलखि रिसाति ॥

यौं बाला जोबन झलक झलकनि उर में आइ ।
ज्यौं प्रगटत मन को बचन निज पुतरिन दरसाइ ॥

तिय सैसव-जोबन मिले भेद न जान्यो जात ।
प्रात समै निसि द्यौस के दोउ भाव दरसात ॥

ज्यौं नव-तिथि बाढति कला जौबन ससि अधिकात ।
त्यौं मिथुना निसि तिमिर घट छबि कर ठेलनि जात ॥

सखी गुनति जौ तिय गुनन रुच तकि निहसि लजात ।
मानहु कमल कलीन बिच अली निहसि रहि जात ॥

पिय चितवत तिय मुरि गई कुल हित पट मुख लाइ ।
अमी चकोरन के पियत घन लीनो ससि छाइ ॥

दीपक लौं झाँपति दुती ललन होति यह बात ।
ताहि चलत अरु फूल लौं बिगसन लाग्यो गात ॥

कहूँ ठगे कतहूँ खगे अति सगबगे सनेह ।
लाज-पगे दृग रगमगे जगे कौन के गेह ॥

तुम अवसेरत मो दृगन गई नींद जु हिराइ ।
साइ लाल लगी मनो दृगन तिहरे आइ ॥

लाल एक दृग अग्नि ते जारि दियो सिव मैन ।
धरि ल्याये मो दहन को तुम द्वै पावक नैन ॥

राधा तन फूलन मिलो पातन हरि को गात ।
नूपुर धुनि राग धुनि मिली भले बने सब सात ॥

नैन चकोरन चंद्रिका प्यारो आजु निसंक ।
श्वास-बास आवत नरत लीने बीच ससंक ॥

पिय के रंग भये बिना मिलन होत नहिं बाम ।
याते तू रँग स्याम ह्वै मिलन चली है स्याम ॥

अंग छपावति सुरति सा चली जाति यो नारि ।
खोलति बिज्जुछटा चितै ढाँपति घटा निहारि ॥

स्वेत-बसन जुत जाह मैं यो तिय दुति दरसाइ ।
मनो चन्ना छीरधि सुता छीर सिंधु मैं जाइ ॥

पिय बिनती करि फिरि गये सो कलेस सरसाइ ।
तिय मुख अंबुज ते निकसि मधुप गीति दुरिजाइ ॥

राम नन फरकन भया वामा आनद आइ।
गिनि उनगनि सिनि मुदति है नादर धूप सुभाइ॥

लाचनती परदस ते पिय आया सुधि पाइ।
निसि-दिन मधु के कमल लौं विकसत सकुचत जाइ॥

कहाँ गये वे जलद जे नित उठि गाजत जाइ।
गाइ मलार बुलाइए तऊ न परत लखाइ॥

— ॥❀॥ —

कविंद उदयनाथ

तिय तन अरुन दिनेस उदयौ है आनि
साँझ सिसुताई के तिमिर सब भागे हैं।
फैलि रही अंबर में चहुँ ओर अरुनाई,
फूले नैन कंज मकरंद रस-पागे हैं।
उदैनाथ कन के मनोरथ द्विज पथै चले,
चित चतुराई तजि आरस को जागे हैं।
रूप के सरोवर में नाह-नैन हौन लाग,
सौतिन के मान तेऊ दीन होन लागे हैं॥

चंद सो बदन, चंद्रिका सी चारु सेत सारी,
तैतिए गुराई गसी उरज उतंग री।
हरि के हिए नै हार हारिनी हरिन-नैनी,
हेरैं हिय हरषे सखी त्यौं सैन संग की।
भनत कविंद सोहै बासक सजैनी नारि,
बाढ़ी चित चाह, जाके आगम उमंग की।
जगर मगर बैठी सेज पै नगर बाल,
आली लाल मानिके की माला ज्यों अनंग की।

अरसौंहे नैन करि, सरसौंहे मुसकाति,
त्यौं त्यौं अकुलाति ज्यों ज्यों होत आली प्रात री।
दाऊ वे परसपर पीवत अधर रस
चूमि चूमि चटकीलो मुरा-जलजात री।
भनत कविंद भरि भरि अंक ह्वै निसंक,
नेह-भरे फिरि फिरि दोऊ सतरात री।
निधुवन करत दुहूँ के गात ही तें दुवौ—
लपटि-लपटि जात, नैकु न अघात री॥

गहरी गराइ त प्रथम चूर चामीकर,
चपक कै उपरि नर्गर पाम गौप्यो है।
तीमरे अखिल अरविंद आभा नस करि,
हसे छुड़िता सो हाट तो पद में ना यौ है।
भनत कविंद तेरे मान समै सौतें कहा,
सुर-वनितान कौ गुमान जान लाप्यो है।
आली! आज मेरे चानि ते ठ भरो मुरत—
भौंहैं तान, सौहैं री, कृपानिधि पै कोप्यो है॥

गुजरत भौन के पुजक निकुंजन तें,
आए हो, भयो है रूम आरत औ जान की।
आँखि न त उलटी ललाइ परैं आलस सी,
अंगन तें ढेंमगे थके-लौं अगरात की।
भनत कविंद घाम ग्रीषम दुपहरी सी,
तीखन लग्यो है तन परिमित बात की।
कुंज के पातन की पौन करों प्रानप्यारे,
पौढो परजंक पै, पसीना मिटै गात कौ।

कैसी ही लगत, जामैं लगन लगाए तुम,
प्रेम की पगनि के परेसे हिए कसक।
केतिको छिपाइ के उपाय उपजाए प्यारे,
तुम तें मिलाप के बढ़ाए चोप चमक।
भनत कविंद हमैं कुंज में बुलाए करि,
बसे कित जाय दुख दूसर असम के।
पगन में छाले परे नाघिवे को नाल परे
तऊ लाल! लाले परे, राउरे दरस के॥

राजैं रसमैं री तैसी बरषा समै री चढ़ी
चंचला नचै री चकचौंधा कौंधा वारै री

१५४

बनी ब्रन हार हिए परत फुहारें,
कछू छोरें कछू धार जलधर जलधारें री।
भनत कविंद कुंजभौन पौन सौरभ सों,
काहू न कपाय प्रान परहथ पारैं री।
काम कटुका से फूल डोलि डालि डारें,
मन औरें किए डार ये कदंबन की डारैं री॥

दास

बरै दास दया वह जानी सदा,
जि आनन नील तु बैठी लसै ।
महिमा जग छाइ रह्यो रस जी,
तन पोषक नाम धरे छै रसै ।
जग जाके प्रसाद लता पर शैल,
ससी पर पक्त-पत्र वसै ।
गरि भाँति अनेकन यों रचना,
चो बिरचिहु की रचना को हँसै ॥

है रति को सुखदायक मोहन,
यो मकराकृत कुंडल साजै ।
चित्रित फूलन को धनुबान,
तन्यो गुन भौरकी पाँति को भ्राजै ।
सुभ स्वरूपन में मनो एक,
निरेक हनै तिय सैन समाजै ।
दास जू आज बने मन में,
मनराज सन्देह अदेह निराजै ॥

ससि धारी अगे छनजोति छटा,
त पीट पटा दिन रैन मढ़ो ।
यह नीर कहूँ बरसै सरसै,
यह तो रस-जाल सदाही अड़ो ।
यह सेत कै जातो अपानिप है
एहि रंग अलौकिक रूप गड़ो ।
कह दास बराबरि कौन करै,
घन सो घनस्याम सो बीच बड़ो ॥

आनन मे मुसुकानि सुहावनि,
बंकता नैनन माँझ छई है।
बैन खुले मुकुले उरजात,
जकी थिथकी गति ठौनि ठई है।
दास प्रभा उछलै सब अग
सुरग सुवासता फैलि गई है।
चन्दमुखी तन पाइ नवीनो,
भई तरुनाई अनन्द मई है॥

आनन है अरविंद न फूले,
अलीगन भूले कहा मडरात हौ।
कीर तुम्हें कहा वाय लगी,
भ्रम बिम्ब के ओठन को ललचात हो।
दास जू व्याली न बेनी बनाव है,
पापी कलापी कहा इतरात हौ।
बोलती बाल न बाजती बीन,
कहा सिगरे मृग घेरत जात हौ॥

कंचन के सम्पुट है ये सखे,
हिय मै गडिजात ज्यो कुत की कोर हैं।
मेरु हैं पै हरि हाथ मे आवत
चक्रवती पै बडेई कठोर हैं।
भावती तेरे उरोजनि मे गुन—
दास लख्यो सब औरई ओर है।
सभु हैं पै उपजावे मनोज,
सुवृत्त है पै परचित के चोर हैं॥

भावी भूत वर्तमान मानवी न होइ ऐसी,
देवी दानवीन हूँ सो न्यारी एक डौर है।

या निधि की वनिता जो निघना वनायो चहै,
दास तो समुझिय प्रकासै निन गौरई।
कैसे लिखे चित्र को चितेरो चकि जात लखि,
दिन द्वैक जीने दुति औरै और गौरई।
आन भोर औरइ पहर होत औरइ है,
दुपहर औरई रजनि होत औरइ॥

आरभ आइयो आनी वधा
मजि सासुहे तें गइ ओट मैं प्यारी।
नखहि एटी महावर दै श्रम,
त दुहुँ पैनी रारी अरुनारी।
दास न जाने धौं कौन है दीवा,
चिते दुहुँ पायन नाइनि हारी।
आप रयो अरी दाहिन है,
मोहि जानि परै पग वाम है भारी॥

भावना आवतो जानि नवेली,
चमेली के कुज जा बठन जाइ के।
दास प्रसूनन सोनजुही परै,
कंचन सी तन जाति मिलाइ के।
चौंकि मनोरथ ह हँसि लेन,
चले पगु लाल प्रभा महि छाइ के।
नीर दरै कन्बीर भरै
निरखै हरखै रुचि आपनि पाइ कै

पना सग पना है प्रगामत छनक,
लै कनक रग पुनि पै तुरगन पलत है।
अधर ललाई लावै लाल की ललक पाये,
अलक झलक मरकत सो हलत है।

उदौ अरुनौहैं पीत पाटल हरौहैं द्वै कै,
दुति लै दुहूँधा दास नैनन छकत है।
समरथ नीके बहुरूपिया लौं थानही में,
मोती नथुनी के अब मानो बदलत है॥

आरसी सी आँगन सुहायो मनभायो,
नहरन में भरायो जल उज्जल सुमन माल।
चाँदनी विचित्र लखि चाँदनी बिछौने पर,
दूरि कै सहेलिन को विलसै अकेली बाल।
दास आस पास बहु भाँतिन बिराजै धरे,
पन्ना पुखराज मोती मानिक पदिक लाल।
चन्द्र प्रतिबिम्ब तें न न्यारो होत मुख, औ न
तारे प्रतिबिम्बन तें न्यारो होत नगजाल॥

बातें स्यामा स्याम की न कैसी अब आली,
स्याम स्यामा तकि भाजै स्यामा स्याम सों जकी रहै।
अब ता लखौई करै स्यामा को बदन स्याम,
स्याम के बदन लागी स्यामा की टकी रहै।
दास अब स्यामा के सुभाय मद छाके स्याम,
स्यामा स्याम सोभन के आसव छकी रहै।
स्यामा के विलोचन के हैं री स्याम तारे अरु,
स्यामा स्याम लोचन की लोहित लकीर है॥

कान सिंगार है मोरपखा यह,
लाल छुटे कच काँति की जोटी।
गुंज क माल कहा यह तो,
अनुराग गरे परयो लै निज खोटी।
दास बड़ी बड़ी बातें कहा करो,
आपने अंग की देखो करोटी।

जाना नही यह वचन स,
तिय के तन क कसिबे की कपाटी ।

ननन गो तरसैय कहाँ लौ,
कहाँ लौ हिये बिरहागि मैं तैये ।
एक घरी न कहूँ कल पैये
कहाँ लगि प्रानन को कलपैये ।
आवै यही अब जी मे बिचार,
सखी चल सौतिहुँ के घर जैये ।
मान घट त कहा घटिहै जु पै,
प्रानपियारे को देखन पैये ॥

चन्द चढ़ि देखै चाह आनन प्रवीन
गति लीन होत माते गजराजनि को ठिलि ठिलि ।
गरिधर धारन तै धारन पै है रहै,
पयोधरन छ्वै रहै पहारनि को पिलि-पिलि ।
दइ निरदइ दास दीन्हा है बिदेस तऊ
करो न अँदेस तुव ध्यान ही मे हिलि हिलि ।
एक दुख तेर हो दुखारी न तु प्रानप्यारी,
मेरो मन तोसो नित आवत है मिलि मिलि ॥

नार अप्यारनि मे मटक्यो सु,
निकार यो, मैं नीठि सु बुद्धिनि सो घिरि ।
बूडत आनन पानिप - नीर,
पटीर की आड सों तीर लग्यो तिरि ।
मा मन बावरो योही हुत्यो,
अधरा-मधु पानकै मूढ़ भयो फिरि ।
दास मनै अब कैसे कढ़ै,
निज चाह सो ठोढ़ी की

भाल में नाम के ह्वै के चली,
निघो चाँकी सुनै नरुनीन में आइ कै।
ह्वै के अचेत कपोलन छुवै,
बिहुरे अधरा की सुधा पियो धाइ कै।
दास भू हास छटा मन चौंकि,
परीक लो ठोढी के बीच निकाइ कै।
जाइ उरोज सिरे चढि कूदा,
गयो कटि सों त्रिवली में नहाइ कै॥

देखे दुरजन सग गुरुजन-संकनि सा,
हियो अकुलात दृग होत न तृपित हैं।
अनदेखे हू ते मुसुकानि बतरानि मृदु
जानिबे तिहारो दुखदानि बिसुरित हैं।
दास धनि ते हैं जे वियोग ही में दुख पावें,
देखे प्रान पी के होति जिय में मुदित हैं।
हमैं तो तिहारे नेह कहूँ न सुख लाहु
देखेहू दुखित अनदेखेहू दुखित हैं॥

अँखिया हमारी दईमारी सुधि बुधि हारीं,
भाहू ते नियारी दास रहैं सब काल में।
कौन गहै ज्ञान काहि सौंपत सयाने कौन
लोक ओक जानैं ये नहीं हैं निज हाल में।
प्रेम पगि रहीं महामोह में उमगि रहीं,
ठीक ठगि रहीं लागे रहीं बनमाल में।
लाज को अचै कै कुल धरम पचै कै,
बिथा-बृध न सचै कै भई मगन गोपाल में॥

मिस सोइबो लाल को मानि सही
हरुए उठि मौन महा धरिकै।

पट टारि रसीलो निहारि रही,
मुख की रुचि को रुचि की करिकै।
पुलकावलि पेखि कपोलन में,
खिसिआई लजाई मुरि आरिकै।
लखि प्यारे विनोद सो गोद गह्यो,
उमह्यो मुख-मोद हिया भारिकै॥

चंद में ओप अनूप नई लगी,
रागन की उमटी अधिकाई।
साती कलिन्दजा की कछु हाति है
कोकन के दरम्यान लराई।
दास जू कैसी चमेली मिलै लगी,
फैली सुगासहु की रुचिराई।
ग्वैजन कानन आर चले,
अवलोकन ही हरि माँझ मोहाई॥

जेहि मोहिबे काज सिगार सज्यो,
तेहि देखत मोह में आय गई।
न चितौनि चलाय सकी,
उनहीं की चितौनि के भाय अघाय गई।
वृषभानलली की दसा यह दास जू
देत ठगौरी ठगाय गई।
बरसाने गई दधि बेचन को,
तहँ आपुहि आपु बिकाय गई॥

नैन रहैं जल कज्जल युत
पी अधरामृत की अरुनाई।
दास गई सुधि-बुद्धि हरी,
लखि केसरिया पट साम सोहाई।

कौन अचम्भो कहूँ अनुरागी,
भया हियरो जम उज्जलताई।
सॉवर रावर नेह पग ही,
परो तिय अ गन म पियराइ॥

हुती बाग में लेत प्रसून अली,
मनमोहनऊ तहँ आइ परया।
मनभायो घरांऊ भयो पुनि गेह,
चवाइन म मन जाइ परया।
इ त दारि गई गृह दास
तहाँ न बनाइबे नकु उपाइ परयो।
घर स्वद उसास सरोटन का,
कछु भेद न काहू लखाइ परय

जाति हो जो गोकुल गापाल हू पै जैयो नकु,
आपनी जो चेरी मोहि जानती तू सही है।
पाय परि आपुही सी बूझियो कुशल छेम,
मा पै निन ओर ते न जात कछु कही है।
दासजू बसत हू के आगमन आयो तो 1,
तिनसो सॅदसहू की बात रुहा रही है।
एता सखी कीनी यह अम्ब नीर दीनी,
अरु कहिनी वा अमरैया राम राम कही है॥

तरी रीझने की रुचि रीझ मनमोहन की,
याते वहै स्वाँग सजि-सजि नित आवते।
आपही तै कुकुम की छाप नराछन गात,
अ जन अधर भाल जावक लगावत।
ज्या ज्यों त स्यानी अनखानी दरसावै त्या त्यों।
स्याम इन आपने लह को सुख पावत।

उन्हें सिसिआने दास हास जो सुनावें तुम्हें,
नाह मन-भावने हमार मन भावने ॥

लाल ये लोचन काहे प्रिया हैं,
दिये ह्वे हैं मोहन-रंग मजीठी।
मान उठी है जु बैठी अरौनि नी,
सीठी क्यों नालै मिलाइ त्यों मीठी।
चूरि कहौ छिमि चूरति सा,
जिन्हें लागी रहै उपदेस रसीठी।
भूठी सनै तुम मोंचे लला,
यह भूख तिहारउ पाग नी चीठी ॥

लाहु कहा नर नैनी दिये,
औ कहा है तरोना के नाहु गटाय।
कंकन पीठि हिये ससिरेख की,
नात रने बलि माहि बताये।
दास कहा गुन ओठ में अंजन,
भाल में जावक लीक लगाय।
नाह सुभायहीं नूमत हो मैं
कहा फल नैन ह पान खवाये

फूलन के सँग फूलि हे रोम,
परागन के सँग लाज उड़ाइहै।
पल्लव पुंज के संग अली
हियरो अनुराग के रंग रंगाइ है।
आयो नमत न नंत हितू,
अब नीर वदौंगी जो धीर धराइहै।
साथ तरून के पातन के,
तरुनीन को कोप निपात ह्वै जाइहै ॥

तेरे हास बेसन ज्यों सुन्दर सुकसन लौं,
छीनि छबि लीहीं दास चपला घनन की।
जानि कै कलापी की कुचाली तें मिलापी मोहि,
लागे बैर लेन क्रोध मदन मनन की।
कहियो सँदेसो चन्द्रबदनी सो चन्द्रावलि,
अजहूँ मिले तौ बात जानिये बनन की।
ता निदु बिलोकै खीन बलहीन साजै सब
बरषा समाजै ये इलाजै मो हनन की॥

अबतो निहारी के वे बानक गये री,
तेरी तनदुति केसरि को नैन कसमीर भो।
श्रौन तुव बानी स्वातिबुन्दन को चातक भो,
स्वासन को भरिबो द्रुपदजा को चीर भो।
हिय को हरष मरु धरनि को नीर भो री,
जियरो मदन तीर-गन को तुनीर भो।
एरी बेगि करिकै मिलाप थिर थापु नतु,
आप अब चाहत अतन को सरीर भो॥

काहू कह्यो आय कँसराय के मिलाइबे को,
लेन आयो काहू कोऊ मथुरा अलग तें।
त्योंही कह्यो आली सों तो गयो वह अब, देव,
मिलें हम कहाँ ऐसो मूढ निज ढंग तें।
दास कहै ता समै सोहागिनि को कर भयो,
बलयाबिगत दुहूँ बातन प्रसंग तें।
आधिक दरकि गई बिरह की छामता ते,
आधिक तरकि गई आनद-उमग तें॥

जानि-जानि आयो प्यारो प्रीतम बिहार भूमि,
मानि मानि मंगल सिंगारन सिंगारती।

१६५

दाम दृग-तोरन को द्वारन मैं तानि-तानि,
छानि-छानि फूले-फूले सेजहिं सवारती।
ध्यान ही में आनि आनि पीको गहि पानि-पानि,
खेंचि पट तानि-तानि मंद-मंद गारती।
प्रेम-गुन गानि गानि अमृतन सानि-सानि,
बानि-बानि खानि-खानि रैनन निवारती॥

—॥॥—

तोष

(सुधानिधि)

नैननि है अतिकुंडल छुवै,
रल ऊजनि है भुज मूलनि धावत।
गुन की माल ते, काछनी ते,
कहि ताष सुपायन में सुख पावत।
मा मन मोहन के तन मैं,
मन मे मिनतान की फेरी लगावत।
पावरी ते चढ़ि पाग लौ जात,
औ पाग ते पावरी लौ फिरि आवत।

ते घनि ताप आ मोहन का,
मरघंग भर घरि घीर लोगाई।
मे नख ते सिख लौ भरि भाव,
कहो इनते सखि दख न पाइ।
जानहि अग परे पहिले,
नरै ट तिनसो अँखियाँ दुरत होइ।
मैं जकि जाति तकी लगि जाति
दाऊ अँखियाँ थकि जाति बनाइ॥

हैं पग दत कमद भइ
गति मद गयद की हाति है पाछे।
वर्नानि म रस च्वै निकसै,
कहि ताष हँसे मुसकाहट काछे।
दीपति दह ग मोन क्यो,
गुमनोट रा दीप ज्यौं राजत आछे।

ज्यों ज्यों लसैं हरिनाहन ने तिय
त्यौं यौं रसी निरखति स्यार्कै ॥

लोचन लोल लसै अमुनाकुल,
जाइ सो धार मौं चार पुकार।
या रतिया ने भई दुतिया मह
पार नहीं, प लग अति भार।
उतर ताहि दियो कहि नाप
सा नारि उन्यौ मनमाद नगार।
तूँ जनि नेकु डराइ इहे
नलि पार लहैग निलाकननार ॥

लाज निलाकन देति नहीं,
रतिराज निलाकनहीं की दइ मति।
लाज कहै मिलिये न करौ,
रतिराज कहै हित सो मिलिय पति।
लाजहु की रतिराजहुँ की कहि,
ताप नहीं कहि जानि सकू गति।
लाल तिहारिये सौंह कहौ,
वह नाल भइ है दुराज की रैयति ॥

मोर गहैं अलक अहि के भ्रम
बालत कोकिल सोर मचावै।
नाक ते कीर कुरत करै
कहि तोप कराइ के मोहि छुरावै
खंजन जा चनकु जनि को हरि
घरि हंस खग पुंज
मोती की माल मराल चुगै,
मुखचन्द को चोंच चकोर

आनन पखि कलंकित भो ससि,
मा दृग दखि मृगी वन लीनी।
कोकिल स्याम भये बतिया सुनि,
बेनी चितै विष व्यालिनी भैनी।
कुन्दनऊ दुति देखि तजै,
उर लागति तोष दया परवीनी।
हौं पछितांति हहा सजनी,
गचि मोहि कहा विधि पापिनि कीनी॥

जाइ तमाल लतानि क ऊपर
पीहित चंचल कै दृग फेरे।
जैसी भई कहि तोष महा छवि,
तैसी कहा उपमा करि हेरे।
खंजन मीन मृगा से कहूं,
कहु कंजन मोर चकोर सँघेरे।
एक तें होत अनेक भट्ट
करै केते सरूप बिलोचन तेरे॥

घाँघरो सिरिफ मुसुरूका सो हरित रंग
अँगियाँ उरोज ओज हीरन के हार को।
सिर सा क हाइ छवि छाइ ढाढी चौकी पर,
चेत ना रहत चितवत गोनीदार को।
कवि ताप कहैं मुख मोराति मुरकि नेकु,
प्यारी चित चोरति निचारति है आर का।
जान्यो प्रेम ससि को प्रकार नरि तारयो बैर,
मानो कंज पकरि मरोर्यो अधकार का॥

हीरा है दसन अरु विद्रुम अधर तेर,
नग मनि जाहिर गुपुति क्यो न्नरति ना।

कहै कवितोष कलधौत के कलस कुच,
हाथ पाव लाल सो छुवा' क्यों धरति ना।
गननि न काहू कूर के गरूर दौलनि रा
तोला है कुमल जौलो पाल न परान ना।
एतो धन लीहैं काहे गाफिल फिरत गोरी,
करति कहा रे मारे चोर सा डरनि ना॥

मोह न पाइ सकै सुरराज सु,
है रतिराज कला मे जमी न।
क्या करि जान्यौ मिलैगी हमै,
कहि तोष सख्यो करि प्रेम रसी तें।
मोहि परी मिलिबे की प्रतीनि,
वही दिन ते मन मोह जमी तू।
सील सो गीली पगी अँखियाँ
लखि ढीली चितौनि चितै के हसी तें॥

चोप की चतुरता की चातुरि चितौनि ताकी
रीझिबे रिझाइबे की रुचि जो चहत है।
बैयन की नैयन की सैन की की सुसीलता की
भूषन सिंगार अंग-अंग जो गहत है।
कहै कवि तोष मन ती को तोष पावे सुनि,
पीकी बैन रैनि दिन सखियाँ कहत है।
प्यारी निज औलनि जो नैन करि मायौ,
मानो प्यारे को स्वरूप सदा देखत रहत है॥

काहर की छवि दरसिबे को,
यह गोपकुमारि महाछवि '।
सीस धरे मटुकी लट छूटी,
छजै दधि बेचन के

नन्दलला का लख्यो कहि तोष,
हिये उनमाद दशा अधिकाई।
भूलि गया दधि नाम सो ग्वालहि
लेहु रे लहु रे माई कहाइ॥

ये अहीरजार तासों जारि कर कोरि कोरि,
विनय सुनाऊँ वलि बाँसुरी बजावै जिनि।
बाँसुरी बजावै तो नचावै मो नलाइ नानै,
नटे नटे नैननि ते मोहि टक लावै जिनि।
लावै है तो लाउ टक तोष मामो काच कहा,
परिनाम मेरी पोरि दौरि दौरि आवै जिनि।
आवै है ता आउ हम आइबो कबूलै,
पर मेरे गोरे गात मे असित गात लावै जिनि॥

ढापत को पट ? हो घनस्याम
तौ दामिनि को तुम जाइ निहारो।
आली, हूँ मै बनमाली, सरे
चहुँ वेचिय फूलन को रचि हारो।
बसीधरें हम ता भल मारिये
हो हरि, तौ बन कुञ्ज सिधारो।
ग्वालहि दह सिखावत क्यो
कहि तोष मैं का हर दास तिहारो॥

मारक श्रीवृषभान बधू,
गहि कान्ह को मासन चार कै ल्याइ।
आँगनि पौछि कह्यो जसुदा
तुम कैसो लियो जननी जलि जाई।
दौरि गह्यो कर राधिका को
इतनो लिया हम नन्द दोहाइ।

कहै तोप ज्यौं ज्यौं जागिबाग को निहारै दार,
मार के प्रकार ते पुकारती हेरायो सीउ।
ज्यौं ज्यौं पीउ-पीउ करै पातकी पपीहा त्यौं त्यौं,
तीय ताहि पूछति किते है रे किते हं पीउ ॥

तीखी रिसी मर सी गिरिचै करि,
मोहि हनै फिरि पै पहितैहै।
लालच जान अपान यहै,
यहि को मन आनि हमे मिल जैहै।
नद करै कहि तोप महा,
मतिमद र चद न देखन दैहै।
मो मन जो तन छोटिहै तो,
नँदनंद क आनन चद समैहै ॥

पीनो करै दिन रैनि सुधाकर,
भूख तृपा न सताइ सकै जू।
अ क सा अ क लगाये रहैं,
गुर लोग की सक न आइ सकै जू।
तोप कनौ तन न्यागद होत,
नहीं त कहूँ अन जाइ सकें जू।
सोंचो मयाग नियोगही मैं,
हम ऊधौ विभूति न लाइ सकें जू ॥

होत नयो नहि, आयो चल्यो,
रँग साँवरे गोरे को सग सदा तें ॥

हार सवारि अनेकन फूल के,
ल्याइ लै मालिनि भौन भरे में।
काहू को स्वेत दियो यहि,
काहूको पीरो दियो रघुनाथ अरे म।
नीरज नील का लै कर में कहा
राधे सों यो चतुराइ भरे में।
लीजिये हेत तिहारे में ल्याई हौ,
या रग को लगै प्यारो गरे में ॥

पायी ही जावक एक में दैन,
सो आइ गये रघनाथ सुभाइनि।
बेगि दुरी, जब जात रहे,
तब आइके बैठी दबैबे का चाइनि।
दीन्हे हैं कौन मै दीबेहे कौन-सो,
दरयो की दरसि जकी यह नाइनि।
घोभिल सो यह पाँउ लगे,
तब यों मुसक्याद कहा ठकुराइनि ॥

आपने हाथनि सौ करतार,
करे अतिही जग बीच उज्यार।
दरसत ही रहिए रघनाथ,
जुदे नहि कीजे लगे अति प्यार।
सौरभ सो परिपूरण पुष्ट,
पवित्र भर रस आनद धार।
वारि विना उपज अति सुन्दर,
प्यारी के लोचन-वारिज प्यार ॥

फरकन लागी आँखि ढरकन कानन लौ
हरकन लागी लाज पलकैं हुधेनी की।
भार लाग्यो परन उरोजनि में रघुनाथ,
राची रोमराजी भाँति कल अलि सैनी की।
कटि लागी घटन, पटन लागी मुख सोभा,
अटन सुबास आसपास रबस पैनी की।
अ गनि में दुति चारु सोने की जगन लागी,
एडिन लगन लागी बैनी मृगनैनी की॥

अलकैं बिसाल ह्वै के बंक लहरान लागी,
लक तैं परान लागी दुतियन नाल की।
लाली महरेटी के अधर सरसान लागी
अधरन बान लागी बतिया रसाल की।
रघुनाथ छाती कुच रुचि दरसान लागी,
छाती छहरान लागी छबि मनि माल की।
रीझि अँखिआन लागी आसें बढि कान लागी,
कानन सोहान लागी चरचा गोपाल की॥

देखि री देखि ये ग्वालि गँवारिन,
नेक नहीं थिरता गहती है।
आनँद सों रघुनाथ पगी,
पग रगन सो फिरती रहती है।
छोर सौं छोर तरौना को छ्वै करि
ऐसी बडी छवि को लहती है।
जोबन आइने की महिमा,
आँखिया मनो कानन सौं कहती है॥

आजु हरि पकरि कदम की ललित डार
खडे यमुना पै कलानिधि ऐसे वै रहे।

रघुनाथ हाइवे को अलिन के साथ आई,
वृषभान लली पथ सौरभ सौ म्वै रहे।
देखा-देखी होत भयो कौतुक उदोत भट्ट,
राधे के नयन के ऐसी भाँति घरी ह्वै रहे।
कंजन से ह्वै के फेरि खजन से ह्वै के
फेरि मीन ऐसे ह्वै के री चकोर ऐसे ह्वै रहे॥

नित बोल अमीरस पान करै,
यह कान की बान तुम्हारे री को।
शुभ अंग सुगंध जो सूँघति नाक,
सो सूघनि ऐसे बुझावे री को।
रघुनाथ लग्यो मन पाइनि रीझि,
उचाटन सीझि सुझावे री को।
अनियारी गोपाल की आँखिन ते,
उरझी अखिया सुरझावे री को॥

मैं तुम सो कहै रावति हो
रघुनाथ लखो हित के अनगाहे।
प्यारी अनूप दसा तन की,
भई है अति नेह को पथ निबाहे।
देखत ही उठि ठाढ़े भये,
चलि मोसो दुरावति हो अब काहे।
लागन को पिय के हिय सौ
पहले तन ते इन रोमन चाहे॥

जहा जहाँ सुनै तहाँ तहाँ को पठावै मोहि,
देखि आई अब घों सो रूप कैसो धरे हैं।
फिरि आइ जहाँ तहाँ फूलि फूलि भूलि भूलि
बूझति ननक ऐसे नित नेम करे हैं।

कहा कहौं तोहि कहि आई जो तू हरि कथा,
रघुनाथ मोहि ये अँदेसे आनि अरे हैं।
आँसिन पगेग आनि जौ तौ कौन दसा ह्वै है,
कान परे प्राण रासिन के लाने परे हैं॥

जो सुनि कै धुनि ऐसी मई,
तौ तू काहे को और उपाइ को धावै।
न कहीं जो करि सो, रघुनाथ की सौंह,
तिया यह तू सुख पावै।
साँप डसे मैं जो फेरि डसे,
उतरे विष प्रान शरीर में आवै।
तातें सखी कहि मोहन सों,
ओहि टेर सो बाँसुरी फेर बजावै॥

हो अभिलाष भरो अति ही,
नित चाहे सनाथ भयो तनको नैं।
आनि मिल्यो बड भागनि सों,
रघुनाथ भने सोइ आनँद को ध्वै।
हेरत ही हरि को उमग्यो,
गति पारद की भई रोमनि सो म्वै।
नेह भट्ट जिन के मन को,
झलको हिय पै जल को छिनको ह्वै॥

मणिमय भूषण पहिरि नख सिख प्यारी
बैठी पीठि पाछे आमरो के परयंक को।
कहै रघुनाथ पिय प्यारे की बिलोक गैल,
ही मैं कद्धु-कद्धू गेल सौतिहि क सङ्क को।
तानिंरे को निशि दिशि ऊरघ का दरयो ज्योंहि,
त्योंहि फैल्या आनन प्रकाश न्हे अङ्क का।

और लौं उटत तन रहिगो कलंक बाकी,
छपि गयो व्योम वीच मंडल मयंक को।

सौरभ सकल ढारि सुमन सा गूंदे बार,
भूषण मनिन बार माग मुकुतामई।
हीरन के हीरे हार चन्दन चढ़ाये चारु,
सुरसरि ता का धार सुरसरिता रई।
रघुनाथ पियपास धरिने चली है चाल,
मुख की मरीचा-जाल दिसि मदि कै लई।
चार चढे चखनि चकोरन के चकाचौंधी,
चंद गयो चढ़ि चटकीली चाँद ी भई॥

सरद की राका राति राधे को बोलायो माधो,
देखिके को सुगन सखी पाइ नीकी रिधि को।
एहो रघुनाथ कहा रुचि की निकाई कहौं,
हाथ लागे मेरे तो हो चूनों हाथ निधि को।
घघट खुलत मुखजोति को पसार होत
ह्वै गयो छपान सब वैगुन समिधि को।
मगमद अंक लग्या जितनो हो भाल,
एक रहि गयो तितनो कलक कलानिधि को॥

चंद सा आनन चाँदनी सो पट,
तारे सी मोती की माल निमाति सी।
आँखें कुमोदिनि सी हुलसी,
मनिदीपनि दीपकदानि के जाति सी।
ह रघुनाथ कहा कहियै,
पिय की तिय पूरन पुन्य बिसाति सी।
आयी जोन्हाइ के दखिने को,
थनि पून्यो की राति मैं पून्यो की राति सी॥

देखिवे को द्युति पून्यो के चंद्र की
हे रघुनाथ श्रीराधिका रानी।
आइ गोलाइ के चौंतरा ऊपर
ठाढ़ी भइ, सुख सौरभ-सानी।
ऐसी गइ मिलि जोंह की जोति मैं,
रूप की रासि न जानि बखानी।
नारन ते कछु भौंहन ते कछु,
नैनन की छबि ते पहिचानी॥

मृगमद लाय मृगमद रंग अंग कीन्हे,
ढाँपि नख सिख दीन्हे सारी स्याम भाँति है।
इंदीवर कमल के दलकी गरे में माल,
पहिरे निसान ना बनक कही जात है।
केस नगराय लीन्हे आनन छुपाय,
भति कोई लखि जाय रघुनाथ यो सकाति है।
भावतें सो मिलिवे को ऐसे बनि चली प्यारी,
मानो देह धारी भारी भादौंकी राति है॥

रैन चैन लहत में महत बिनोदपागे,
रघुनाथ दंपति ए रहे सुख भरिके।
आगे बहु दिनके औसरके हैं बीते पे ये,
सोये नहिं वाकी राति गइ जब ढरिके।
यह जो बूझति हौ सो तासों यह हेतु सुनो,
निहचै हिये मैं पूरि दूरि भ्रम करिके।
भावती की सखी नींद लाज पाइ टारि गइ,
भावते की नींद गई सौति मान धरिके॥

चौंकि तिरीछे चितै मुसक्याइ,
फिरी पिचकारी लगाइ के अ ग सों ।
रीझि रहे वह भाव चितै,
अरु भीजि रहे वा रँगीली के रग सों

दूलह

सारी की सरौटें सब सारी में मिलाय दीन्हीं
भूषन की जेब जैसे जेब जहियत है।
कहै कवि दूलह छिपाए रदछद मुख—
नेह देखे सौतिन की देह दहियत है।
बाला चित्रसाला तें निकरि गुरुजन आगे,
कीन्हीं चतुराई सो लखाई लहियत है।
सारिका पुकारै 'हम नाहीं हम नाहीं', एजू—
'राम राम' कहौ 'नाहीं' नाहीं कहियत है॥

धरी जब बाहीं तब करी तुम नाहीं,
पाँइ दियो पलिकाहीं नाहीं नाहीं कै सुहाई हौ।
बोलत मैं नाहीं पट खोलत मैं नाहीं,
कवि दूलह उछाही लाख भाँतिन लहाई हौ।
चुम्बन मैं नाहीं परिरम्भन मैं नाहीं,
सब आसन-बिलासन मैं नाहीं ठीक ठाई हौ।
मेलि गलबाहीं केलि कीन्हीं चितचाही,
यह हाँ तैं भली नाहीं सो कहाँ तें सीखि आई हौ॥

उरज उरज धँसे, बसे उर आड़े लसे,
बिन गुन माल गरे धरे छबि छाए हौ।
नैन कवि दूलह हैं गते, तुतराते बैन,
देखे सुने सुख के समूह सरसाए हौ।
जावक सौं लाल भाल, पलकन पीक-लीक,
प्यारे ब्रजचंद सुचि सूरज सुहाए हौ।
होत उरनोद यहि कोद मति बसी आजु,
कौन उरनसी उरनमी करि आए हौ॥

बेनी प्रबीन

चपक सो तनु नैन सरोज से,
इंदुसी आनन जोति सनाई।
बिंबसे ओठ लसै तिल फूल सी,
नासिका स्याम सुबास सुहाई।
बाहै मृनाल-सी बेनी प्रबीन,
उरोज उतग नयी छबि छाई।
ज्यों ज्यों बिलोकिये जू प्रति अंगन,
त्यों त्यों लगै अति सुंदरताई॥

काल्हि ही गूँदी नवा की सौं मैं,
गजमोतिन की पहिरी अति आला।
आई कहाँ ते इहाँ पुपराग की,
संग गई जमुना तट बाला।
न्हात उतारि मैं बेनी प्रबीन,
हसै सुनि नैननि नैन बिसाला।
जानति ना अँग की बदली,
सब सौं बदला बदली कहै माला॥

वहि अंगना माह सखी कोउ संग न
खेलति आनन जोति पसारे।
यह तो नवला कमला कै सुभाय,
उतै ते इतै करे कौतुक भारे।
उनमाह भरी उचकै अचकै गहकै,
भुज बेनी प्रबीन निहारे।
कर कंजन ते गिरे कंदुक गो,
दृग खंजनि ते अँसुवा भरि ढारे॥

होत सबेरर पंकज पाति,
भए पिय के मुख की निसि की सुधि।
सोहै चहूँ दिसि में अवली,
अवलोकनि मालनि में जु रही रुचि।
चूमिबे को चित चाह सों बेनी प्रवीन,
उमाह भरी उमगी सुधि।
जान बने न तितै कपे गात,
इतै पर नैननि लाज रही सुधि॥

बैठी तिया गुरु नारिन मैं
रति ते रमनीय स्वरूप सोहाई।
आयो तहाँ मनमोहन त्यों,
सबकी अँखियान महा छबि छाई।
कैसे लखे पिय बेनी प्रवीन,
नवीन सनेह सकोच सनाइ।
पीठि दै मानत को सजनी,
सजनीन की डीठि मैं डीठि लगाइ॥

खेलिबे के मिस सखी केलिके सदन लैके,
नवलवधू को चली सुगति करिन्द है।
बोलति हँसति मृगनैनी पिकबैनी तहाँ,
देख्यो ना प्रवीन बेनी जदुकुल चंद है।
चुपि रही चहुँधा चितै कै चकई सी चकी,
नैनन में झलक अचल जल बिंद है।
छनिन थनिन मानो कमल के ऊपर ह्वै,
मुख-मकरन्द आली अरनी मलिंद है॥

बैठी यह सोच करि सुंदरि सकोच भरि,
कैसे कै बिलोकौ हरि कगो कौन छलछंद।

दूबरी गइ ह्वै देह कल न परत गेह,
सहित सनेह तो लौं बोली या जेठानी नंद।
आजु दधि बेचन तू जाइ नंदगाउँ मधि,
सुनत प्रबीन बेनी उमगो अनदकंद।
नसि आई कंचुकी उकसि आये दोउ कुच,
गसि आइ बलया सो फसि आय भुजबंद॥

भृकुटी धनु बेसरि मोर मनौ,
मनि मानिक इंद्रबधू जितु है।
दुति दामिनि कार हरी बनबेलि,
घटाघन घघट सो हितु है।
उमगो रस बेनीप्रवीन रसाल,
भगो अब चाजक सो चितु है।
हित रावरे नीलकिसोर लला,
अबला भई पावस की रितु है॥

सकल सिंगार साजि राजिकै प्रबीन बनी,
आगमन जानि पिय प्रेम प्रतिपालिका।
दमकत रदन मदन की उमग अग,
कलि क सदन बैठी बदन विलासिका।
नग जगमगत जगत जोति जोबन की,
सारी जरतारी अग कैसी सग आलिका।
झलक मलक झलकति माँइ झाँझरीन,
मानौ मनिमहल समानी दीपमालिका॥

ठाढ भये आनि ढिग बिहसि प्रबीन बनी,
दरिबे को आतुर बदन नंदलाल है।
कीन्ह मनुहार भरि पीनम त्यो बीरी जब

डारिया की चादरि सों झाँपिति पहँचन लौं,
गसी ततकाल कर कपनि निसाल है।
नीर की लहरि मानौ थहरि छहरि रही,
लागत समीर बीच कमल सनाल है॥

आई रति मंदिर ते रति लैं रसीली अति,
गति ते रसीली अति उपमा अपग है।
मंद-मन्द गति मैं मरू कै मग पग परै,
उमँगी प्रवीन बेनी उर में उमग है।
कम्पत रदन छवि वदन कहै न बैन,
मदन छकाई छाइ छवि की उनग है।
सारी जरतारी मृगमद न अतर टूटी,
पीक टूटी पलक प्रसेद टूटे अग है॥

रुठिके सोइ रहे अँगना पिय,
चौपारि चूकि तिया गहरानी।
सारत बदन बेंदी दइ गुँदि,
नी प्रवीन सखी बहरानी।
भोरही आये उठे अनसात वै,
आरसी सामुहैं लै ठहरानी।
काह कछू सकुचे मुसकाय,
हँसी लखि मंदिर मे महरानी॥

घेरी अँधेरी घनी बदरी अब,
आनन चाहत है अति पाना।
पौन की ऐसी झकोर चली मग
है है है रिगहे कहुँ छप्पर
प्रान लै धाइ निकुंज, अली,
तै भली भई आइ ग

बोधा

(इश्कनामा)

अति छीन मृनाल के तारहु ते,
तेहि ऊपर पाव दे आवनो है।
सुई बेह ते द्वार सकी न तहा,
परतीति को टाडो लदावनो है।
कवि बोधा अनी घनी नेजहूँ ते,
चढ़ि तापे न चित्त डरावनो है।
यह प्रेम को पन्थ कराल महा,
तरवार की धार पै धावनो है।

लोक की लाज औ सोच प्रलोक को,
वारिये प्रीति के ऊपर दोऊ।
गाँव को गेह को देह को नातो,
स्नेह में हांतो करै पुनि सोऊ।
बोधा सुनीति निबाह करै
धर ऊपर जाके नही सिर होऊ।
लोक की भीति डेरात जो मीत,
तो प्रीत के पैंडे परै जनि कोऊ॥

यह प्रेम को पन्थ हलाहल है,
सु तो बेद पुरानउ गावत हैं।
पुनि आसिन देखो सरोजन लै,
नर संभु के सीस चढावत हैं।
बरही पर माथे चढ़ै हरि के,
फल जोग ते एते न पावत हैं।
तुम्हे नीकी लगै ना लगै तो भलै,
हम जान अजान जनावत है॥

कबहू मिलिबो कबहू मिलिबो,
यह धीरज ही मैं धरैबो करै।
उर ते कढ़ि आवै गरै ते फिरै,
मन की मन ही मैं सिरैबो करै।
कवि बोधा न चाउ सरी कबहू,
नित ही हरवा सो हिरैबो करै।
सहते ही बनै कहते न बनै,
मन ही मन पीर पिरैबो करै॥

बोधा किसू सों कहा कहिये,
सो बिथा सुनि पूरि रहै अरगाइ कै।
याते भले मुख मौन धरै,
उपचार करै कहुँ औसर पाइ कै।
ऐसो न कोऊ मिल्यो कबहूँ,
जो कहै कछु रंच दया उर लाइ कै।
आवतु है मुख लौं बढ़ि कै,
फिरि पीर रहै या सरीर समाइ कै॥

दहिये बिरहानल दाहन सों,
निज पापन तापन कों सहिये।
चहियै सुख तौलों रहै दुख कै,
हग बारिये बोधन कै चहिये।
कवि बोधा इते पै हितू न मिलै,
मन की मन ही मैं पचै रहिये।
गहिये मुख मौन भई सो भई,
अपनी करि काहू सों का कहिये॥

ऐसीय नाव धरी वह कौन,
बजाइ कै बाँसुरी मोहन ही हरो।
ता दिन ते ही जकी सी थकी
चकचौंधी फिरौं नहि धीरज ही धरौं।

राधा न मीत सों प्रीत सखी करि,
लाज निगोडिनि बंधन जी अरौं।
प्रेम ते नम कहा निबहै,
अब तौ यह नेह निबाहिबे ही परा॥

छाडि सखीन का सीख सबै,
कुलकानि निगोडी बहाइबेही है।
ह्वै कै लट्टू लपटाइ हिए हरि,
हाथ त वसी छुटाइबेही है।
राधा जरैलनु के उपहास,
अगेजुरु कुजनि जाइबेही है।
लाज सो काज कहा बनिहै,
ब्रजराज सों काज बनाइबेही है॥

छुटि जाँइगे चंत के नेत सबै,
जो कबौं मुरली अधरा धरि है।
मुसकाइ कै बोले तो बाट परै
नरहू शिरस ला विष सों भरिहै।
फिरि राधा तिहारे सयान सबै,
सु तौ सूबेद हेरनि मैं हरि है।
तुमहू भावते जानि मनै को करै,
वह जादूगरी बनि कै करिहै॥

कोटिक देखि फिरी छबि मैं,
पै न कोऊ छबै सम या छवि जूझै।
आँखिन देखी जो बान तिहै निन,
आखिन सो नाजुराँ हय घूझै।
बोधा सुभान को आनन छाडि,
न आनन मो मन आनि अरूझै।
जैसे भये लखि सावन के अधरे
नर को सु हरो हरो सूझै॥

दूरि है भूरि अपूरब सो ससि,
सुन्न हूँ कबहूँक निहारी।
आदर बेली नबेली अरे कहु,
कैसे मिलै वर जोग दियारी।
बाधा सुने हे सुमान हितू,
करि कोटि उपाइ थके उपचारी।
पीर हमारी न्लिन्दर री
हम जानत हैं यह जाननहारी॥

बोधा सुमान हितू सों कही,
या दिलन्दर की रो सही करि मानन।
ता मृगनैनी की चाह चितौनि
चुभी चित में चित सों पहिचानत।
तासों वियोग दइ न दयो तौ
कहो अब कैसे मैं धीरज आनत।
जानत हैं सबही समुझाइये,
भावती के गुन को नहि जानत॥

हार मैं प्यारी खरो कर को,
लसती हियरे सों लगाइ न लीजै।
तू तौ सयानी अनोखी करी,
अब फेरि के एसी न चित्त धरीजै।
बाधा सोहाग औ सोभा सने
उडिजैबे के पंथ पै पाउ न दीजै।
मानि ले मेरी कही तू लली अहे,
नाह के नेह मनाह न कीजै॥

सगी सासु घरी न छमा करिहै,
निसिबासर त्रासन हीं मरनी।
सग भौंहि चढ़ाये रहे ननदी यों,
जेठानी री तीसी सुनै चरनी।

कवि बोधा न सग तिहारो चहैं,
यह नाहक नेह फँदा परवी।
बडी आसे तिहारी लग ये लला,
लगि जैहैं कहू तौ कहा करवी॥

त्याग कों जाग जहान कहै,
हम तो तन हीं चुकी त्यागि जहानें।
मौत कलेस को लेस नहीं,
कवि बोधा गोपाल में चित्त समानें।
गैंचती पौन को मौन गहै,
अरु नींद अहार नहीं उर आने।
ऊधा जु जोग की रीति कहो
हम जोग ना दूजो वियोग ते जानै॥

निन स्वाद पुरानी लता सिगरी,
तिनहूं में कछू गुन ज्ञान नतो।
लखि केतकी और नेवारी जुही,
मनमाने न सेवती बीच रतो।
कवि बोधा न प्रापति आदर को,
दरकार कवी करि येक मतो।
यहि आसरे या बगिया निलम्यौ,
वा चमेली नवेली सों नेह हतो॥

नटपारन बैठि रसालन मैं
यह कोकिलिया जान सरे ररि है।
वन फूलि है पुंज पलासन के,
तिनको लखि धीरज को घरि है।
कवि बोधा मनोज क ओगनि सों,
विरही तन तूल भयो जरि है।
घर कंत नहीं विरतंत भट-

ठाकुर

झूम देइ झूला में झुलावती जसोदा माय,
चूम चूम वदन बलैया लेत प्यारे की।
झीनी सोहै झगुली औ झालर झबूली लसै,
अँगियाँ रसीली नीली ब्रज सी मुरारे की।
ठाकुर कहत चित-चोर चितवन चारु,
रूप में मिलत त्यों खिलौनें खिलवारे की।
ब्रह्म ते कोरी जिन्हें बदत महेस अज,
लाग सबै पैंया या गोविंद गभुवारे की॥

मेंहदी लपेटें लाल लाल अस कीन्हें जिन,
छीगुनी अनौटा नगजटित सँवारे हैं।
दापनि के छीप तरवान का बखान कौन,
पाँचों अगुरिन मैन सर पाँचौ धारे हैं।
ठाकुर कहत ठकुराइ के निकेत,
रस-रूप के भँडार निरधार निरधार हैं।
पदम-चरण असरण के शरण राधे
रानी चरण सुख-सदन हमारे हैं॥

मोतिन कैसी मनोहर माल गुहै,
तुक अच्छर जोरि बनावै।
प्रेम को पंथ कथा हरिनाम की,
बात अनूठी बनाइ सुनावै।
ठाकुर सो कवि भावत मोहि जो,
राज राजसभा में बड़प्पन पावै।
पंडित लोक प्रवीनन को,
जोई चित्त हरै सो कवित्त कहावै॥

काहे अरे मन साहस छाँडत,
काहे उदास ह्वै देह तजै है।
ये सुख ये दुख आये चले गये,
एक सी रीति रही नहिं रैहै।
ठाकुर का को भरोस करैं हम,
या जगजालन भूल न गैहै।
जानैं सयोग में दीन्हों वियोग,
वियोग में सा का सयोग न दैहै॥

का कहिए कोई पीरक नाहिनें,
ताते हिये की जतैयत नाहीं।
भागन भेट भई कबहूँ सु,
घरीक विलोकैं अघैयत नाहीं।
ठाकुर या घर चौचद को डर,
तात घरी घरी ऐयत नाहीं।
भैंटन पैयत कैसे तिन्हे,
जिन्हैं आँखिन देखन पैयत नाहीं॥

सापने हाँ फुलवाइ गइ,
हरि एक भरी भुज कठन मेली।
हो सकुची कोउ सुदरी देखत,
लै जिन बाह सो बाह पछेली।
ठाकुर भोर भये गये नींद वे,
देखहुँ तौ घर माफ अकेली।
आरन खुलो तन पास न साँवरा
बाग न बागरो बृन्द न बेली॥

का कहिये कहिबे की नहीं
मग जोवत जोवत जोगयो है।
उन तोरत बार न लाइ कछू,
तन तैं वृथा जोवन न सागयो है।

कवि ठाकुर कूनरी के वस ह्वै,
रस मैं विस बावरो वो गयो है।
मनमोहन जो हिलियो मिलिनो,
दिन चारिक चाँदनी हो गयो है॥

घिक कान जो दूसरी बात सुनें,
अब एक ही रंग रहो मिलि डारो।
दूसरो नाम कजात कहै
रसना जो कहूँ तो हलाहल बोरो।
ठाकुर यों कहती व्रजबाल,
सा ह्या बनितान को आन है भोरो।
ऊधो तू वे अखियाँ जरि जाँय
जो साँवरो छाँडि तकैं तन गोरो॥

मोही मैं रहत रहे मोही सों उदास सदा,
सीरत न सीस तन सीस निरधारो है।
चौंको सो चको सो कहूँ जक सो जको सो कहूँ,
पाइन थको सो भाँति भाँतिन निहारो है।
ठाकुर अचेत चित चोजवारी बातन मैं,
जानत न हरि सों कहा धौं बोल हारो है।
एसो चित्त चतुर सयानो सावधान मेरो,
ये री इन आँखिन अजान करि डारो है॥

एतो नजमडल नमत तासों काम कौन,
आनँद के भौन तुम्हैं देखि जीजियतु है।
सोऊ तुम इतै उतै अनत पनत हेरो,
याही दुख दाहन सरीर छीजियतु है।
ठाकुर कहत मेरी चाह की अचाह करौ,
चाहते की चाह को निबाह कीजियतु है।
प्रीति निठु प्यारे कोऊ काहे को
प्रीति की प्रतीति

का हौ ? जौतिषी हैं । कछू जातिपै विचारत हौ ?
येही शुभ धाम काम जाहिर हमारो तो ।
आओ बैठ जाओ पानी पिओ पान खावो फेर,
होय कै सुचित्त नेक गणित निकारो तो ।
ठाकुर कहत प्रेम नेम का परेखो देखि,
इच्छा की परिच्छा भली भाँति निरधारो तो ।
मेरो मन मोहन सों लागत है भाँति भाँति,
मोहन को मन मासों लागि है बिचारो तो ॥

अपन अपने निज गेहन में
चढे दाऊ सनेह की नाँव पै री ।
अँगनान में भींजत प्रेम भरे,
समयो लखि मैं बलि जाँव पै री ।
कह ठाकुर दोउन की रुचि सों,
रँग ह्वै उमडे दोउ ठाँव पै री ।
सखी कारी घटा बरसै बरसाने पै,
गोरी घटा नन्दगाँव पै री ॥

आजु यहि कौतुक छको है नद नद वार,
बरनो न जात सो विचित्र चित्र मा पै री ।
चलु बलि तोहि यों दिखाय लाऊ बन घनो,
पायो है निहार बलिहार भयो सो पै री ।
ठाकुर कहत कहाँ नीलमणि सोनवेलि,
सुखमा सकेलि कै न उपमा अरापै री ।
घन को निहारै तन वारै होत आपुन पै,
बीजुरी निहारै तव वारै होत तो पै री ॥

गोरे हैं वे वृषभानुसुता
जिनसों मन मोहन माह करै है ।
कामिनि तो उन सी नहि दूसरि,
दामिनि की दुति को निदरै है ।

ठाकुर कै हम हीं यह जानतीं,
के उनहू को जनाइ परै हैं।
छोटी नथूनी बड़े मुतियान,
बड़ी अँखियान बड़ी सुघरै हैं॥

सुरझा नहिं केतो उपाइ कियो,
उरझी हुती घूँघट खोलन पै।
अधरान पै नेक खगी ही हुती,
अटकी हुती माधुरी बोलन पै।
कवि ठाकुर लोचन नासिका पै,
मँडराइ रहो हुती डोलन पै।
ठहरै नहिं डीठि फिरै ठटकी,
इन गोरे कपोलन गालन पै॥

जब तें बिलोकि गई रावरो बदन बाल,
तब तें अचेत सी वियोग भार भुरई।
हेम की लता सी चपला सी चारु चाँदनी सी,
मदन सताई पै न मैं जनाई भुरई।
ठाकुर कहत भूमि विकल निहाल परी,
देखिये गोपाल ताहि उपमा न जुरई।
रति के भँडार ते दुराय कै चोराय मानो,
काहू आनि मंदिर में रूप रासि कुरई॥

गावैं पिकबैनी मृगनैनी हू बजावे बीन,
नाचै चन्द्रमुखी चारु चाउ की चटक पै।
कीरतिकुमारी वृषभानु की दुलारी राधे,
अटकी बिलोकि लोकलाज की अटक पै।
ठाकुर कहत चीर केसर के रंग रंगो,
अंतर पगो सो मन माहँ पीत पट पै।
देख तो दृगन कैसो रावत रसीलो आजु,
आली री लसत बनमाली के मुकुट पै॥

आग सी धँधाती ताती लपटें सिराय गई,
पौन पुरवाई लागी सीतल सुहान री।
मृदुल अनूप चारु चाँदना मलीन भई,
तापै छाँह छाई छूटौ मानिनी को मान री।
ठाकुर कहत आलो ग्रीषम गवन कीनो,
पावस प्रवेस वेस छवि सरसान री।
सावन सुहावन को आवन निरखि आली,
मेघ बरसन लागे हिय हुलसान री॥

कारे लाल पीरे धौरे धावत धुआँ के रंग,
कितने सुरंग कितै रंग मटमाढे हैं।
कितन मही के रूप माधुरी करत घोर,
सारे चहुँ ओर होत गहगहे गाढे हैं।
ठाकुर कहत थकि बरनि बरनि थाके,
बरने न जात यों बहसि बार बाढे हैं।
मोह लेत मनन जु ऐसी घने बनन जू,
आजु देखो घनन घनेरे रंग काढे हैं॥

दौरि दौरि दमकि दमकि दुरि दामिनि याँ,
दुन्द देत दसहू दिसान दरसतु है।
घूमि घूमि घहरि घहरि घन घहरात,
घेरि घेरि घोर घनो सोर सरसतु है।
ठाकुर कहत पिक पीकि पीकि पी कों रटै,
प्यारो परदेस पापी प्रान तरसतु है।
भूमि भूमि झुकि झुकि झमकि झमकि आली,
रिमझिम झिमकि असाढ बरसतु है॥

पावस में परदेस ते आनि मिले पिय,
औ मनभाई भइ है।
दादुर मोर पपीहरा बोलत,
तापर आनि घटा उनई है।

२०५

दादुर वा सुखकारी सुहावनि,
दामिनि कौंध कितै धौं गई है।
री अब तो घनघोर घटा,
गरजौ बरसौ तुम्हें धूरि दई है॥

— ॥०॥ —

माई-सी भुजा तें भ्रमि आयो गोरी-गारी बाँह,
गोरी बाँहहू तें चापि चूरिन में अरिगो।
हेरेउ हरे हरे हर चूरिन तें चाहौं जौलों,
तौलौं मन मेरो दौरि तेरे हाथ परिगो॥

चाह भर्‌यो चचल हमारो चित्त नौल वधू,
तेरी चल चंचल चितौनि में बसत है।
कहै पदमाकर सु चंचल चितौनि हूँ ते,
औझकि उझकि झझरनि में फँसत है।
औझकि उझकि झझरनि तेँ सुरझि वेश,
बाँहीं की गहनि माहि आइ बिलसत है।
बाँहीं की गहनि तें गुनाहीं की कहनि आयो,
नाहीं की कहनि तें सु नाहीं निरसत है॥

धारत ही वन्यो ये ही मतो,
गुरु लोगन को डर डारत ही वन्यो।
हारत ही वन्यो हेरि हियो,
पदमाकर प्रेम पसारत ही वन्यो।
धारत ही वन्यो काज सबै,
अन यों मुखचद उघारत ही वन्यो।
टारत ही वन्या घूघट को पट,
नँदकुमार निहारत ही वन्यो॥

भेद नि जाने कती वेदन निमाहिबे को,
आज हों गई ही बाट बसीबट वारे की।
कहै पदमाकर लटू ह्वै लोट-पोट भई,
चित्त में चुभी जो चोट चाय चटवारे की।
बावरी लौं बूझति बिलोकति कहा तू बीर,
जाने कहा कोऊ पीर प्रम हटवारे की।
उमडि उमडि बहै बरसै सु आँखिन ह्वै,
घट में बसी जो घटा पीत-पटवारे की॥

जाहिरै जागत सी जमुना,
जब बूड़ै बहै उमहै वह बेनी।
त्यौं पदमाकर हीर के हारन,
गंग तरंगन को सुख देनी।
पाँयन के रँग सों रँगि जात सी,
भाँति ही भाँति सरस्वति सेनी।
पैरै जहाँई जहाँ वह बाल,
तहाँ तहँ ताल में होत त्रिबेनी॥

शोभित स्वकीयगन गुनगनती में जहाँ,
तेरे नाम ही की एक रेखा गनियतु है।
कहै पदमाकर पगी यों पति-प्रेम ही में,
पदमिनि तोसी तिया तूही पेखियतु है।
सुबरन रूप जैसो तैसो शील सौरभ है,
याही ते तिहारो तनु धनि लेखियतु है।
सोने में सुगन्ध नाहि गंध में सुन्यो न सोनो,
सोनो औ सुगंध तामें दोनों देखियतु है॥

ये अलि या बलि के अधरानि में,
आनि चढ़ी कछु माधुरई सी।
ज्यों पदमाकर माधुरी त्यौं,
कुच दोउन की चढ़ती उनई सी।
ज्यों कुच त्यौं ही नितंब चढ़े कछु,
ज्योंही नितंब त्यौं चातुरई सी।
जानि न ऐसी चढ़ाचढ़ि में,
किहि धौं कटि बीच ही लूटि लई सी॥

ये अलि हमें तो बात गात की न जानि परै,
बूझति न काहे यामें कौन कठिनाई है।
कहै पदमाकर क्यों अंग ना समात आँगी,
लागी काह तोहि जागी उर में ऊँचाई है।

तुव तनि पॉयन चली है चचनाई कित,
बानरी निलोके क्यों न आँखिन में आई है।
मेरी कटि मेरी भट्ट कौन धों चुराई,
तेरे कुचन चुराई के नितम्न चुराई है॥

स्वेद को भेद न कोऊ कहै,
म्रत आँखिन ह्वै अँसुवान को धारो।
त्यों पदमाकर देखती हौ,
तन को तन कप न जात सँभारो।
है धों कहा को कहा गयो यों,
दिन द्वैक ही ते कछु ख्याल हमारो।
कानन में बसी बाँसुरी की धुनि,
प्रानन में बसो बाँसुरीवारो॥

जाहि न चाह कहूँ रति की,
सु कछू पति को पतियान लगी है।
त्यों पदमाकर आनन में रुचि,
कानन भौंह कमान लगी है।
देति पिया न छुवै छतियाँ,
बतियाँन मं तो मुसकान लगी है।
पीतमै पान खवाइवे को,
परजंक के पास लौं जान लगी है॥

आरत सों आरत सम्हारत न सीस-पट,
गजब गुजारत गरीबन की धार पर।
कहै पदमाकर सुगध सरसाने सुचि,
निथुरि निरानै वार हीरन के हार पर।
छाजत छबीली छिति छहरि छरा की छोर,
भोर उठि आई केलि-मंदिर के द्वार पर।
एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरे,
एक कर कज एक कर है किवार पर॥

निसि अँधियारी तऊ प्यारी परबीन,
चढ़ि मान के मनोरथ के रथ पै चली गई।
कहै पदमाकर तहाँ न मनमोहन सों,
भेंट भई सटकि सहेट तें अली गई।
चंदन सों चाँदनी सों चंद सों चमेलिन सों,
और सब बेलिन के फूलनि दली गई।
आई हुती छैल के छलै कों छल छंदनि सों,
छैल तौ छल्यो न आपु छल सों छली गई॥

कौन है तू कित जाति चली,
बलि बीती निसा अधराति प्रमानै।
हौं पदमाकर भावति हौं,
निज भावते पै अब हौं मोहि जानै।
तौ अलबेली अकेली डरै किन,
क्यों डरौं मेरी सहाय के लानै।
है सखि संग मनोभव-सो भट,
कान लौं बान-शरासन तानै॥

दोऊ छबि छाजतीं छबीली मिलि आसन पै,
जिनहि बिलोकि रह्यो जात न जितै जितै।
कहै पदमाकर पिछौंहैं आइ आदर सों,
छलिया छबीलो छैल बासर बितै बितै।
मूँदे तहाँ एक अलबेली के अनोखे दृग,
सुदृग मिचावनी के ख्यालनि हितै हितै।
नेसुक नवाइ ग्रीवा धन्य धन्य दूसरी को
औचक अचूक मुख चूमत चितै चितै॥

ख्याल मन-भाये कहूँ करिकै गोपाल,
घरै आये अति आलस मढ़े बड़े तरके।
कहै पदमाकर निहारि गजगामिनी वे
गजमुकतान के हिये पै हार गरके।

येते पै न आनन ह्वै निकसे वधू के बैन,
अधर उरहने सु दीबे काज फरके।
कुचन ते कंचुकी सुजानि ते सु बाजूबंद,
पोंचन ते कंगन हरे हीं हरे सरके॥

'बोलति न काहे' एरी, 'पूछे बिन बोलों कहा',
पूछति हों 'कहा भई भेद अधिकाई है'।
कहै पदमाकर 'सु मारग के गये आये',
'साँची कहु मोसों कहाँ आज गई आई है'।
'गई-आई ही ता साँवरे के पास' 'कौन काज',
'तेरे काज ल्यावन सु तेरी ही दुहाई है'।
'काहे ते न ल्याई फिरि मोहन निहारी तू कों',
'कैसे वाकों ल्याऊं!' जैसे वाको मन ल्याई है'॥

सौ दिन को मारग तहाँ को बेगि माँगि बिदा,
प्यारी पदमाकर प्रभात राति बीते पर।
सो सुनि पियारी पिय गमन बरावन को,
आँसुन अन्हाइ बैठी आसन सु ताते पर।
लालम बिदेस तुम जात हो तो जाउ पर,
साँचो कहि जाउ कब ऐहो भौन रीते पर।
पहर के भीतर कै दो पहर भीतर ही,
तीसरे पहर कै धों साँझ ही बितीते पर॥

रूप रचि गोपी को गोविन्द गो तहाँई जहाँ
काहू बनि बैठी कोऊ गोप की कुमारी है।
कहै पदमाकर यों उलट कहै को कहा,
इसकै कन्हैया कर मसकै जु प्यारी है।
नारी ते न होत नर नर ते न होत नारी,
बिधि के करे हू कहूँ काहू ना निहारी है।
याम करता की करतूत या निहारी जहाँ
नारी नर होत नर होत लख्यो नारी है॥

दोऊ अटान चढ़े पदमाकर,
देखि दुहूँ को दुवौ छवि छाइ।
त्यों ब्रजबाल गोपाल तहाँ
वनमाल तमालहि की दरशाइ।
चंद्रमुखी चतुराई करी तब,
ऐसी वन्दू अपने मन भाइ।
अचल खैंचि उरोजन तें
नंदलाल को मालती माल दिखाइ॥

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलिन कलीन किलकंत है।
कहे पदमाकर परागन में पौन हू में
पानन में पीक में पलाशन पगंत है।
द्वार में दिशान में दुनी में देश-देशन में,
देखौ दीप-दीपन में दिपत दिगंत है।
वीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में
बनन में बागन में बगरो बसंत है॥

औरे भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर-भीर,
औरे डौर भौरन में बौरन के ह्वै गये।
कहे पदमाकर सु औरे भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरे छवि छ्वै गये।
औरे भाँति विहग समाज में अवाज होत
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरे रस औरे रीति औरे राग औरे रंग,
औरे तन औरे मन औरे बन ह्वै गये॥

चालौ सुनि चंदमुखी चित में सुचैन करि,
तित बन बागन घनेरे अलि घूमि रहे।
कहै पदमाकर मयूर मंजु नाचत हैं,
चाइ सों चकोरनि चकोर चूमि-चूमि रहे।

येते पै न आनन ह्वै निकसे वधू के बैन,
अधर उरहने सु दीबे काज फरके।
कधन ते कंचुकी सुजानि ते सु बाजूबंद,
पोंचन ते कंगन हरे ही हरे सरके॥

'बोलति न काहे' एरी, 'पूछे बिन बोलौं कहा',
पूछति हौं 'कहा भई भेद अधिकाई है'।
कहै पदमाकर 'सु मारग के गये आये',
'साँची कहु मोसों कहाँ आज गइ आई है'।
'गई-आई हौं ता साँवरे के पास' 'कौन काज',
'तेरे कान स्यावन सु तेरी ही दुहाइ है'।
'काहे ते न ल्याई फिरि मोहन बिहारी जु कों',
'कैसे वाको ल्याऊ!' 'जैसे वाको मन ल्याई है'॥

सौ दिन को मारग तहाँ को बेगि माँ गिनिदा,
प्यारी पदमाकर प्रभात राति बीते पर।
सो सुन पियारी पिय गमन बराइबे को,
आँसुन अन्हाइ बैठी आसन सु ताते पर।
बालम बिदेस तुम जात हौ तो जाउ पर,
साँची कहि जाउ कब ऐहौ भौन रीते पर।
पहर क भीतर के दो पहर भीतर ही,
तीसरे पहर कै धों साँझ ही बितीते पर॥

रूप रचि गापी को गोविन्द गा तहाँई जहाँ
काहू धनि बैठी कोऊ गोप की कुमारी है।
कहै पदमाकर यों उलट कहे को कहा,
कसकै कन्हैया कर मसके जु प्यारी है।
नारी ते न होत नर नर ते न होत नारी,
विधि के करे हू कहूँ काहू ना निहारी है।
काम कौतुक की करतूत या निहारी जहाँ
नारी नर होत नर होत लख्यो नारी है॥

दोऊ अटान चढ़े पदमाकर,
देखें दुहूँ को दुवौ छवि छाई।
त्यों ब्रजबाल गोपाल तहाँ
बनमाल तमालहि की दरसाई।
चंद्रमुखी चतुराई करी तब,
ऐसी कछू अपने मन भाई।
अंचल ऐंचि उरोजन तैं
नंदलाल को मालती माल दिखाई॥

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलिन कलीन किलकंत है।
कहै पदमाकर परागन में पौन हू में
पानन में पीक में पलाशन पगंत है।
द्वार में दिशान में दुनी में देश देशन में,
देखौ दीप-दीपन में दिपत दिगंत है।
बीथिन में ब्रज में नवेलिन में वेलिन में,
बनन में बागन में बगरो बसंत है॥

और भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर-भीर,
और डौर झौरन में बौरन के ह्वै गये।
कहै पदमाकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरै छवि छ्वै गये।
औरै भाँति बिहग समाज में अवाज होत
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग
औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गये॥

चालो सुनि चंद्रमुखी चित में सुचैन करि,
तित बन बागन घनेरे अलि घूमि रहे।
कहै पदमाकर मयूर मंजु नाचत है,
चाह सों चकोरनि चकोर चूमि-चूमि रहे।

कदम अनार आम अगर अशोक थोक,
लतन समेत लोने-लोने लगि भूमि रहे।
फूलि रहे फलि रहे फैलि रहे फबि रहे
झपि रहे झूलि रहे झुकि रहे झूमि रहे॥

साँझ के सलौने घन सघन सुरङ्गन सों,
कैसे कै अनग अग अंगनि सताउतो।
कहै पदमाकर भकोर झिल्ली सोरन कों,
मोरन कों महत न कोऊ मन ल्याउतो।
काहू बिरही की कही मानि लेतो जो पै दई,
जग मे दई तो दयासागर कहाउतो।
ऐसी विधि बौरी गुनसार घनो होतो, जो पै
बिरह बनायो तो न पावस बनाउतो॥

लागत बसत के सु पाती लिखी प्रीतम कों,
प्यारी परवीन है हमारी सुधि आनवी।
कहै पदमाकर इहाँ को यो हवाल,
बिरहानल को ज्वाल सो दवानल ते मानवी।
उर तो उसासन को पूरो परगास सो तो,
निपट उसास पौन हू ते पहिचानवी।
नैनन की ढग सो अनग-पिचकारिन तें,
गातन को रग पीरे पातन तें जानवी॥

चंचला चमकै यहाँ औरन ते चाह भरी,
चरज गई थी फेर चरजन लागीं री।
कहै पदमाकर लवंगन की लोनी लता,
लरज गई थी फेर लरजन लागीं री।
कैसे धरौं धीर वीर त्रिविध समीरैं
तन तरज गई थीं फेर तरजन लागीं री।
घुमडि घमंड घटा घन की घनेरी अबै,
गरज गई थी फेरि गरजन लागीं री॥

मल्लिकान मंजुल मलिंद मतवारे मिले,
मंद-मन्द मारुत मुहीम मन साकी है।
कहै पदमाकर त्यों नदन नदीन नित,
नागर नवेलिन की नजर नसा की है।
दौरत दरेरो देत दादुर सु दूंदै दीह
दामिनी दमंकत दिशान में दसा का है।
बद्दलनि बुन्दनि बिलोकि बगुलान बाग,
बँगला नवेलिन बहार बरसा की है॥

चार हूँ ओर ते पौन झकोर,
झकोरनि घोर घटा घहरानी।
ऐसे समय पदमाकर काहु की,
आवत पीत पटी फहरानी।
गुंज की माल गोपाल गरे
ब्रजबाल बिलोकि थकी थहरानी।
नीरज ते कढ़ि नीर-नदी,
छबि छीजत छीरज पै छहरानी॥

लालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै,
वृन्दावन बीथिन बहार बंशीवट पै।
कहै पदमाकर अखंड रासमंडल पै
मंडित उमडि महा कालिन्दी के तट पै।
क्षिति पर छान पर छाजत छतान पर,
ललित लतान पर लाडिली के लट पै।
आई भली छाई यह शरद जुन्हाई, जेहि
पाई छबि आजु ही कन्हाई के मुकुट पै॥

सनक चुरीन की त्यों धनक मृदंगन की,
रुनुक-झुनुक सुर नूपुर के जाल को।
कहै पदमाकर त्यों बाँसुरी की धुनि मिलि,
रह्यो बँधि सरस सनाको एक ताल को।

देखत बनत पै न कहत बनै री कछू,
विविध विलास यों हुलास यह ख्याल को।
चंद - छवि - रास चाँदनी को परगास,
राधिका को मंद हास रास-मंडल गोपाल को॥

फाग के भीर अभीरन में गहि,
गोविंदै लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मनकी पदमाकर,
ऊपर नाय अबीर की झोरी।
छीनि पितंबर कमर तें सु,
बिदा दई मीडि कपोलन रोरी।
नैन नचाय कही मुसकाय,
लला फिरि आइयो खेलन होरी॥

गोकुल में गोपिन गोविन्द संग खेली फाग,
राति भरी आलस में ऐसी छवि छलकै।
देह भरी आलस कपोल रस रोरी भरे,
नींद भरे नयन कछूक झपैं झलकैं।
लाली भरे अधर बहाली भरे मुखवर,
कवि पदमाकर बिलोकै कौन सलकै।
भाग भरे लाल औ सुहाग भरे सब अंग,
पीक-भरी पलकैं अबीर भरी अलकैं॥

अधखुली कंचुकी उरोज अध-आधे खुले
अधखुले वेस नख रेखन के झलकैं।
कहै पदमाकर नवीन अध-नीवी खुली,
अधखुले छहरि छराके छोर छलकैं।
भोर जगि प्यारी अध ऊरध इतै की ओर,
झाँकी झिरि झिरकि उघारि अध पलकैं।
आँखें अधखुली अधखुली खिरकी है खुली,
अधखुले आनन पै अधखुली अलकैं॥

एकै संग धाए नंदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि गये जु भरि आनँद मढ़ै नहीं।
धोय धोय हारी पद्माकर तिहारी सौंह,
अब तो उपाय एको चित्त पै चढ़ै नहीं।
कैसी करों कहाँ जाउ कासों कहों कौन सुनै,
कोऊ तो निकासो जा सों दरद बढ़ै नहीं।
ये री मेरी बीर जैसे तैस इन आँखिन तें,
कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं॥

फागुन में फागुन निवारि न दिखाईं दत,
एती बेर लाई उन कानन में जाइ आन।
कहै पद्माकर हितू जो है हमारा तो,
हमारे कह बीर वहि धाम लगि धाइ आव।
जारि जो धरी है बेदरद दुआर होरी
मेरो निरहागि की उलझनि लौं लाइ आव।
एरी इन नयनन के नीर में अबीर घोरि,
बोरि पिचकारी चित्तचोर पै चलाइ आव॥

भाल पै लाल गुलाल गुमान सों,
गोरि गरे गजरा अलबेला।
यों बनि बानिक सों पद्माकर,
आये जु खेलन फाग तो खेलो।
पै इक या छबि देखिबे के लिये,
मो बिनती कै न झारिन झेलो।
रावर रंग रंगी अखियान में,
ए बलबीर अबीर न मेलो॥

प्रतापसाहि

दीप सम दीपति उदीपति अनूप,
निज रूप के सरूप रति रूपहि हरति है।
कहै परताप करि मजन सरस,
मनरजन पिया के दृग अजन धरति है।
ताहि समै दूती दिखायो आनि मोर लिखि,
निपट निरास ह्वै उसासहि भरति है।
सारस विलोचनि विचारि चित्त चेत,
राजहसन के यम की सिपारसि करति है॥

सीख सिखाई न मानति है,
चर ही सन सग सखीन के आवै।
खेलत खेलत नये जल मे,
नित काम वृथा कत जाम वितावै।
छोड के साथ सहेलिन को,
रहि कै कहि कौन सवादहि पावै।
कौन परी यह बानि अरी,
नित नीर भरी गगरी ढरकावै॥

चचलता अपनी तजि कै,
रस ही रस सों रस सुदर पीजियो।
कोऊ किते कहै तुम सों,
तिनकी कही बातन को न पतीजियो।
चौन चवाइन के सुनियो न,
यही इक मेरी कही नित कीजियो।
मंजुल मजरी पहो, मलिंद,
विचारि के भार सँभारि कै पाजियो॥

होत प्रभात अन्हायवे कान,
सरोन के साज तहाँ पग धारे।
मज्जन कै पहिरे पट सुन्दर,
भूपन अगन अग सँवार।
तीर हैं नीर भरी गगरी,
सुविलोकि मग तहँ कौतुक भारे।
आजु सरोवर में सजनी जल,
भीतर पंकज फूल निहारे॥

चाँदनी महल फैल्यो चाँदनी फर्स,
सेज-चाँदनी विछाय छवि चाँदनी रितै रही।
बैठी सजि सुन्दरि सहेलिनि समाज बीच,
बदन पै चारुता चिराक सी नितै रही।
कहै परताप आये मोहन रँगीले श्याम,
नख सिख देखि करि आनन छितै रही।
सुघर निचारि कलानिधि को निहारि,
मनुहारि करि फेरि मुख पीतम चितै रही॥

कोटि उपाय किये हिय को,
रचि नातन सों न सनेह दुर्‌यो परै।
सूधे सुभाय विना वनितान को,
क्यों करि कै मन मान मुर्‌यो परै।
चाखिये तो निख भाखिये साँच,
जो राखिये नम तो प्रेम पुर्‌यो परै।
आजु प्रभात समै लखिये
अरविन्दन तें मकरन्द घुर्‌यो परै॥

खेल न खेलिये ऐसो भटू,
सु परोसिनि कोऊ कहूँ लखि लैहै।
मानहु ना वरजी हमरी,
अब काहे को काऊ सिखावन दैहै।

नद कुमार महा सुकुमार,
विचारि के फेरि हिये पछितैहै।
घालिये ना इन फूलन की पँखुरी
कहूँ अगनि में गडि जैहै॥

ननद जिठानी अनखानी रहैं आठो जाम,
बरबस बातन बनाय आय अरतीं।
रचि-रचि बचन अलीक बहु भाँति के,
करि-करि अनरस पिया के कान भरतीं।
कहै परताप कैसे बसिये निकसिये क्यों,
मौन गहि रहिये तऊ न नेक टरतीं।
निज निज मंदिर म साँझ ते सवेरे दीप,
मेरे केलिमंदिर में दीपकौ न धरतीं॥

रग घने पति-प्रेम सने,
सब रैनि गने मन मैन हिलोरन।
अगनि मोरति भोर उठी,
छिति पूरति अग-सुगध झकोरन।
रूप अनूप निहारि निहारि,
गुमान जनाय कह्यो दृग-कोरन।
नन्दकिशोर अहो चित-चोर,
न जाहुँ मैं न्हान सरोवर ओरन॥

कौन सुभाव री तेरा पर्‌यो,
नहि भूषन चित्र विचित्र बनावै।
चन्दन चूर कपूर मिलै,
घिसि के अँगराग न अग लगावै।
तोन्यौं दुरावति हौं न कछू,
जिहि तें न सुहागिल सौति कहावै।
बेलि चमेलिनि कों तजि कै,
अलि काहे कों कज-कली नित ल्यावै॥

कानि करै गुरु लोगन की न,
सखीन की सीख नहीं मन आनति।
ऐंड भरी अँगिराति खरी कत,
घूँघट में नये नैन नचावति।
मंजन कै दृग अजन आँजति,
अंग-अनंग उमंग बढ़ावति।
कौन सुभाव री तेरो पर्‌यो,
खिन आँगन में खिन पौरि में आवति॥

आजु सखी ननदी करि प्यार,
त्रिभूषन भूषन दै पठए हैं।
मंगल-मूल बनाय विचित्र,
सुफूल दुकूल निहारि नए हैं।
आँनद की सुघरी उघरी,
सिगरे मन वाँछित काज भए हैं।
बूझति तो कहुँ बासर के,
बहुरी अब कैतिक जाम गए हैं॥

मनिमय मंदिर के आँगन अनोखी बाल,
बैठी गुरु लोगन में सोभा सरसाइ कै।
गरक गुलाब नीर, अरक उसीरन के,
राखे उन औरन सुगंध बगराइ कै।
कहै परताप पिय नैन के इसारतनि,
सारति जनाई मुख मृदु मुसक्याइ कै।
बाली नहिं बोल कछु सुंदरि सुजान रही,
पुण्डरीक-सुमन साहायो दिखराइ कै॥

...ै करि सुबास वारि विमल सुबासित कै,
मंजन कियौ है तन अधिक उमाह तें।
...र, कपूर, कसतूरी औ ... लै कै
अंगराग, अंगन ... ि ... तें।

कहै परताप साजि सकल सिंगार तन,
भूपन-विभूपन सकल अवगाहे तें।
पर की निहारति हां नैननि सों कंज-नैनि,
बेसरि बनै न आज पहरति काहे तें॥

अङ्ग-अङ्ग भूपन-विभूपन विरचि,
जाति आनन-जवाहिर की जाहिर जगाई तें।
चहचहे चोवा चारु चदन अरगजा औ,
अङ्गराग हेत रूल केसर मँगाई ते।
कहे परताप दुति देह की दुरङ्ग हात,
सुरंग कुसुभी ऐसी चुनरि रँगाई तै।
रीझिवारी री सुनि सुन्दरि सुजान नारी,
भाल क्यों न बदी मृगमद की लगाई तै॥

केलि के रङ्ग प्रसङ्गन में,
निशि पीतम सङ्ग सबै निशि जागी।
भोर भये अरसाति जम्हाति,
उठी अँगराति दिया उर पागी।
बोली न बोल कछू सखियान सों,
नीर भरे अँखिया बड़भागी।
सुन्दरि बैठि अगार के द्वार,
सुनार निचोल निचोरन लागी॥

सोचति ही नैनजल रैन दिन सोवति ही,
समुझि सकोचन सों मौन मुख धरिबो।
छूटिगो सुमन सैंग छूटिगो सहेलिन को,
भूलि गयो औरै बनितान को निदरिबो।
कहै परताप कौन जानत पराइ पीर,
री मेरी बीर रह्यो जा को एक जरिबो।
वा सों कहौ ही को दुरत प्यारे निज पीकी मोहि—
लागत न नीको नित मिलिबो बिछुरिबो॥

कहाँ जैये कौन भाँति कैसे समुझैये मन,
काहि दरसैये कहि कान निज लेखे को।
आप मनमानै निज हित सोई जानैं सब,
काऊ नहि जानें प्रेम पूरन परेखे को।
रहै परताप कैसे चित्त नहरैये,
सुख पैये किमि चित्त माहि एक हू निमेखे को।
भूँठो सब जानि पर्यो कह्यो मुख बैननि को,
साँचो सब जानि पर्यो नैननि के देखे को॥

बीति गयी सिगरी रजनी,
चहुँ ओर तें फैलि गयी नभ लाली।
घोर वियोग मिट्यो, परिपूर—
उदै भयो सूर महा छवि साली।
बोलि उठी वन बागन में,
अनुरागन सों चहुँधा चटकाली।
सुन्दर स्वच्छ सुगन्ध सन्यो—
मकरन्द भरै अरविन्द त आली॥

नाहक चित्त उदास करै,
सुख मौन धरै मन ही मन सूखती।
प्रेम-प्रसंगन को तजि कै,
निज अंगन में नहि भूषन भूषती।
तापन सों तपती बिरम,
बिन काज वृथा मन माहि बिदूखती।
का कहिये इन सों सजनी,
मकरन्दहि लेत मलिन्दहि दूखती॥

तड़पै तड़िता चहुँ ओरन तें,
छिति छाई समीरन की लहरैं।
मदमाते महा गिरिशृंगन पै,
गन मनु मयूरन के कहरैं।

इनकी करनी वरनी न परै,
मगरूर गुमानन सों गहरै।
घन ये नभ-मंडल में छहरै,
घहरै कहूँ जाय, कहूँ ठहरै॥

चंचल चपला चारु चमकत चारों ओर,
झूमि-झूमि धुरवा धरनि परसत है।
सीतल समीर लगै दुसह वियोगिन्ह,
संयोगिन्ह-समाज सुखसाज सरसत है।
कहै परताप अति निविड़ अँधेरी माँह,
मारग चलत नाहिं नेकु दरसत है।
झुमड़ि झलानि चहुँ कोद तें उमड़ि आज,
धाराधर धारन अपार बरसत है॥

घोर घटा घहरैं नभ-मंडल,
तैसिय दामिनि की दुति जागत।
धावत धूरि भरे धुरवा
गिरि-शृंगन पै अनुरागत।
पैंती नयी सुखमा हरियाइ निहारि,
सुहागिनि के हियरे अनुरागत।
रीति नई रितु पावस मे,
ब्रजराज लखै रितुराज सा लागत॥

मोतिन हार लसैं बकुला,
घन मे चमकारन की छबि छाइ।
इंद्र-वधू बगरी बन में,
तन चूनरी चारु मनो पहिराई।
दामिनि की दुति यों दरसै,
सु भरी घनी चन्दन माग सुहाइ।
आजु पिया बनि बानक सों,
सु नवीन बनी वरषा बनि आइ॥

आइ रितु पावस प्रताप घनघोर भारी,
सघन हरी री वन मंडन चढ़ाए री।
कोकिल कपोत सुक चातक चकोर मोर,
ठौर ठौर कुंजन में पंछी सब आए री।
जमुना के कूल, औ कदंबन की डारन पै,
चारों ओर धार सोर मारन मचाए री।
एरी मेरी बीर! अब कैसे कै में धीर धरों,
आए घन स्याम, घनस्याम नहिं आए री॥

स्वेत स्वेत बक के निसान फहरान लागे
ऐंचि ऐंचि चपल कृपान चमकाए री।
घहर घुमुंडी को अवाज-सी करन लागे,
बुंदन के झरनन झीने झरि लाए री।
भनत प्रताप रतिनायक नरेस जू ने,
धीर गढ तोरिबे को पावस पठाए री।
ए री मेरी बीर! अब कैसे कै मैं धीर धरों,
आए घन स्याम, घनस्याम नहिं आए री॥

बदली दुगुन दुति कदली कदम्बन की,
अदली अतन बर सदली बतन में।
निदपन डोलें करि निनिधि कलोलें,
बोलैं कीर कूज कोकिल गुमान भरे मन में।
कहै परताप सब लखियत औरे और,
गति को गुमान गजराजन के गन में।
सुखनि अतूलें फिरै प्रेम-रस भूले फिरै,
फूले फिरै आज मृगराज मधुवन में॥

पल्लव फूल दुकूल रचे,
दृग अंजन भृङ्ग सरूप सुहायो।
केसर अङ्ग पराग लसै,
मृदु हास त्यों कुंदकली छबि छायो।

गरनि - गरकि प्रेम पारी परजक पर,
घरकि - घरकि हिय हौल सो भभरि जात।
ढरनि-ढरकि जुग जघन जुटन देइ,
तरकि-तरकि बद कचुरी के करि जात।
'ग्वाल' कवि अरकि-अरकि पिय थामैं तऊ,
थरकि-गरकि अग पारे लौं बिखरि जात।
सरनि-सरकि जाय सेज ते सरोजनैनी,
फरकि फरकि केलि फद ते उछरि जात॥

मीन मृग खजन खिसान-भरे मैन बान,
अधिक गिलान-भरे कंज फल ताल के।
राधिका छबीली का छहर छबि छाक भरे,
छैलता के छोर भरे भरे छबि जाल के।
'ग्वाल' कवि आन-भर, सान-भरे, स्यान भरे,
स्यान-भर कछु अलसान-भरे माल के।
लाज-भर, लाग-भरे, लाभ-भरे, लाभ-भरे,
लाली-भरे लाड-भर लोचन है लाल के॥

कहिवे कीं हम तो वियोगिनि निदित नित,
र पर सँजोग ह ते सुमति सुधारी है।
ऊधो ताहि वह इहा कहू न लखाइ पर यो,
साँच ही अलख तोहि भयो गिरधारी है।
'ग्वाल' कवि ह्या तौं यही जाम-जाम धाम धाम,
मूरति मनोहर न नैको होत न्यारी है।
कानन मैं कानन मैं प्रानन मैं आखिन मैं,
अगन में रोम-रोम रसिक-बिहारी है॥

सामन की तीजैं पिय भीजैं वारि-बू दन सौं,
अंग-अग ओढनी सुरगन्रग बारे का।
गावत मलारैं सुनि मुरा की पुकारैं जोर,
झिल्ला झनकारे घन करैं सहजारे की।

'ग्वाल' कवि कन्त विहार हैं उदारता मैं,
पौन हू चलत जहाँ सीतल भकारे की।
घमड घटान की चमक चपलान की,
सु भमर जरी की तामैं रमक हिडार की॥

मान की न चेर सनमान की है चेर प्यारी,
मान रह्यो मेरो मुक भाकि ती भमाके सों।
लहलही चेले डार-डार पर ऐलें हेलें,
मलें पाह नालें लालें छवि के छमाके सों।
'ग्वाल' कवि दूदें दूदें रूदें विरहीन हीन,
नेह का न मूदें ये न मूदें हैं गमाके सों।
घूम आये भूम आये लूम आये भूमि आय
चूमि चूमि आये घन चपलै चमाक सों॥

सीरे सीर नीर भये नदिन के तीर तीर,
सोरे भये चीर धरा सारी सर परि गई।
दसहू दिसा तें दिन रात लागी कुहरान,
पौन सरसान लाक तीर सा निकरि गई।
'ग्वाल' कवि ऐसे या हिमत मैं न आय कंत,
सो तुम्ह न दोष मलसत और ढरि गई।
सूस गये फूल भौंर भौंर उडि गय मानों
काम की कमान की कमान सी उतरि गई॥

आई एक ओर तें अलीन लै किशोरी गोरी,
आयो एक ओर ते किशोर वाम हाल पै।
भाजि चल्यौ ढैल छरी छोड पै, छबीलन ने—
छरी नै उठाय घाय मारी उर माल पै।
'ग्वाल' कवि हो हो कहि चोर कहि चेरो कहि,
बीच मैं नचायो थइ तत् थई ताल पै।
ताल पै तमाल पै गुलाल उडि छाया ऐसो,
भयो एक ओर नँदलाल नँदलाल पै॥

चन्द्रशेखर वाजपेयी—"शेखर"

थोरी-थोरी बैस की किसोरी तन गोरी गोरी,
भोरी-भोरी बातन सों हियरो हरति है।
केतकी तें सरस कही न परै कुन्दन-सी,
चपला तें चौगुनी मरीचिका धरति है।
जगर-मगर होति इन्दु-बदनी की दुति,
सेखर अनाम कों प्रकासित करति है।
मानो मॅज्यो मंजु मैन-मुकुर-महल तामें,
अमल अनूप महताब-सी बरति है॥

आनन अनूप कर चरन सरोज ओज,
कुचन कटाछन कपूर तरसत है।
जपा-की-सी अधर गुलाब-सी चिबुक चारु,
कुन्द-की-सी रदन रदन दरसत है।
मंजु मृगमद-सी सरीर सब सुन्दरी के,
केतकी के पत्र की प्रभा को परसत है।
रूप-गुन-जोबन अनूप गति दूतिका सी,
अंग अंग अमित सुगंध सरसत है॥

रूप को-सो सागर उजागर अनूप सोहै,
जोहै दृग दूरि ही ते करन बसी को है।
मादभरो उदित अमंद दुति आठो जाम,
सौतिन को करत सरोजमुख फीका है।
सुघर सरस रस पानिप अमोल डोल,
मंजु मन सजन मलिन्द बर जी को है।
चन्द हू ते नीको मनमोहन धनी को,
सबही को सुखदैन मुख-चन्द मानती को है॥

चोरदार चित के चलाक हित जोरदार,
कोरदार सरर अस्न पर डोरदार।
दौरदार दीरघ दिमाकभरे, प्रानप्यारी,
ताकि दै री तनक तिहारे नैन तोरदार॥

झारे सटकारे चारु चीकने चमकदार,
चित चकचौंधत निहारि चख थहरैं।
कोमल विमल रुचि सरस रुचिर राजैं,
सहज सुभायन सुगन्धा की लहरैं।
सरस छुजत छूट केस कचलोचनी के,
गोरे-गोरे गातन अनूप छवि छहरैं।
स्वच्छ विधि प्रगट प्रतच्छ करि दीन मनो,
तानन के स्वच्छ उभै पच्छ एक ठहरैं॥

कैधौं धर्‌यो आपही उतारि रङ्गभूमि तामें,
मैन की कमान की अनूप गुन-आज सों।
कैधौं मिल्यो मन मैं उमाह करि राहु ताहि,
लाइ लीयो उर सों मयङ्क मन मौज सों।
रस तम-सार की, कुमार चारु पनगा को
पीवत सुधा को सार सेसर सरोज सों।
गोर मुख भारती के अलक अरूझी किधौं,
छलकै सिंगाररस-धार हेम हौज सों॥

पन्नग के पात मैं मनालन की गाँति ता पै,
पद्दिक की पाँति की प्रभा-सी अभिलाषी है।
कैधौं कालिंदी मैं बह्यो पानी को प्रवाह चाहि,
ता मैं मली कुन्द की कली-सी गहि राखी है।
पाटी पारि प्यारी की सँवारि माँग सदुर सों,
तामैं मंजु मुरतावली यों रचि राखी है।
तमागुन राग्नि मैं रजागुन की रस मानो,
तामैं लिखो सुरुचि सतोगुन की साखी है॥

भूतन की प्रीति है कि नीति अविवेकिन की,
कायर की जीत है की भीति अभिचारी की।
गनिका को नेह किधौं दामिनि की दह कैधौं,
कामिनी को मान जानि काम-उर-चारी की।
सेखर पलास के प्रसून की सुगन्ध कैधौं,
सील कुनटानि को कि सत्य व्यभिचारी की।
पाहन को पंक है कि अरु को अगार किधौं,
रंकन को दान है कि लंक प्रानप्यारी की॥

चारन दिये ते और अरुन लखे मैं,
ये तो सहज सुभाय ही अलौकिक अरुन हैं।
कोमल निमल मंजु कंज-से कहत नीके,
फीके से लगत मुख उपमा करन हैं।
पल्लव पुनीत टटके से नटके से कहै,
सेखर न तेऊ रस-रंचक धरन है।
रसभरे रंगभरे सरस उमंगभरे,
भामती के मृदुल मनोहर चरन है॥

सहज सुभाइन सों भामती सहेलिन में,
सोहत सरूप रासि कंचन-सा गात है।
सकल सिंगार साज, सहित उमंग भरी,
जोबन-तरंग लाल-सोभा सरसात है।
गुरुजन गेह के सोवाय कै सिधारी तहाँ,
बैठो जहँ सेखर पियारा सुखदान है।
जान्यौ अति प्रेम को पयोनिधि अथाह,
तामें लाज-भरो मदन-जहाज चलो जात है॥

प्रान-प्यारी आलिनि, प्रधान प्यारी प्रीतम की,
ठानि न्यारी मिलन निकुंज-गेह मन में।
साज सोहै सील में समान सोहै सखी संग,
लाज सोहै सरस, विलास सोहै तन में।

आस-भरी सेसर हुलास भरी देखी तहाँ,
सेज परी सूनी ह्वै अचेत परी छन में।
नीर छायो नैनन, अधीर छायो बैनन में,
पीर छायी अगन, समीर छायो तन में॥

रस में निमग्न ह्वै के सेसर बिताई रात,
लागे रति-चिन्ह, चारु अंगन अछेह सों।
परत न सूधे पग, आलस-वलित बेस,
आवत बिलोकि और भामती के गेह सों।
आदर सों उठि के सहेलिन सों आगें जाइ,
लागे उर दागन दुराए निज देह सों।
धूर भर प्रीतम के चरन सरोज प्यारी
पोंछे निज अंचल के छोरन सनेह सों॥

अरुन उदोत आयो करिकै बिहार हेरि,
उपट्यौ हिए में हार, हारे रंग रति के।
मान ठानि बैठी, तानि भृकुटी कमान चारु,
लाल भए लोचन लजीले चारु गति के।
सरस समीप जाइ सकुचि सँभारे स्याम,
रंग भरे बसन लली के प्रीति अति के।
उमगि अनंद अनुरागी अति प्रेम भरी,
लागी उर ललकि सलोनी प्रानपति के॥

—॥०॥—

पजनेस

नवला सरूप रूप रावरे रुचिर रूप,
रचना बिरंचि बीन सकुचन लागी है।
भन पजनेस लोल लोयन की लीनी गोल,
गुलफ गोराई लाल सकुचन लागी है।
सुन्दर सुजान सुखदान प्रीत प्रीतम की,
एनी ना परेस अर्ध सकुचन लागी है।
औचक उचन लागी कचुरी रचन लागी,
मकुचन लागी आली मकुचन लागी है॥

चितवत जानी ओर चन्द चकचौंध रौंरि,
भनि पजनेस भानु-बिम्ब मनी-सा है।
छवि प्रतिबिम्ब चन्द्रा छिन है उजागर न,
छाजत छबीली गाते रतन-दरी-सी है।
रौंदा हर लुन्द गुमान सो मधूर भाम,
छुरि-छुरि फनि-मनि आँगन परी-सी है।
आनन अनन्त अरविन्द ते अनन्त अति,
छदन नदन छाया उर्मि परी-सी है॥

कैधों भरि पर्यो है प्रिया के रूप-सागर में,
कैधों तन पजनेस भासत गोपाल को।
कैधों शशि अंक मैं कलंक शशिता के संग,
कैधों मुख-पंकज पै बैठो अलि-बाल को।
कैधों शुक्लपक्ष के समीप परिवा को जान,
कैधों ऋतुराज आज पायो जन्म लाल को।
दरनि सुमर फेरि पूरन रसों ना साधो,
मोहनी को टोना कै डिठौना बाल-भाल को॥

सपुट सरोज कैधों सामा के सरोवर में,
लसत सिंगार के निशान अधिकारी के।
कनि पजनेस लोल चित्त नित्त चारिबे को,
चोर इस ठौर नारि ग्रीव वर धारी के।
मंदिर मनोज के ललित कुम्भ कंचन के,
ललित फलित कैधों श्रीफल निहारी के।
उरज उठौना चक्रवाहन के छौना कैधों,
मदन खिलौना ई सलोना प्रान-प्यारी के॥

न्हान सी कढ़ि आई अगना उघरि गात,
कनि पजनेस छैल छिति पै छहार गो।
उझकि झपाक मुख परि प्यारे रस आर,
हेरि हरि हरसि हिमंचल पै आरि गो।
आधा मुख मलत अनीर ते मुन्म हाय,
नखरस चिह्नित उरोजन पै झरि गो।
माना अर्ध-चन्द्र को प्रकास अर्ध चन्द्रिका पै,
चन्द्र-चूर ह्वै कै चन्द्रचूर पै बगारिगो॥

चौंकि चकी उझकी सी छकी जकी,
छीनि निरीछनि लागी छपावन।
पूरी निवा निधि आधी उसास लै,
चत न्यिो चित चंत सोहावन।

यों मन में कहि कै पननेस,
हमैं उन्हैं केतो चहैं मनभावन।
हा सुघरी पुतरी सी परी,
उतरी चुरी चूमि लगी चटकावन॥

प्यारी रतिरंग सम्जग जीति बैठी प्रात,
अंग सुभटन को इनाम बक्सत है।
आँगी दई कुचन भुजन बाजूबंद दई,
नूपुर पगन बेनी माल सरसत है।
कवि पजनेस नैन अंजन अधर बीरा,
जघन दुकूल कर्नफूल दरसत हैं।
पीछे परे जान तान मोहन कटाछन तें
बार-बार बंधन तें बारन कसत है॥

विधु कैसी कला बधू गैलन मैं,
गसी ठाढो गोपाल जहाँ जुरिगो।
पननेस प्रभाभरी भामिनि पै,
घने फाग के फैलनि सों फुरिगो।
मुरकी करी बंक निलोकत लाल
गुलाल मैं बेंदा सबै पुरिगो।
दिग में दरस्यो है दिनेस मनो,
दिगदाह की दीपति में दुरिगो॥

—*॥०॥*—

द्विजदेव

डोलि रहे विकसे तरु एकै,
सु एकै रहे हैं नवाइ कै सीसहि ।
त्यौं 'द्विजदेव' मरंद के व्याज सों,
एकै अनंद के आँसू बरीसहि ।
कौन कहै उपमा तिनकी,
जे लहैंई सबै विधि संपति दीसहि ।
तैसेंई ह्वै अनुराग भरे,
कर-पल्लव जोरि कै एकै असीसहि ॥

औरै भाँति कोकिल, चकोर ठौर-ठौर बोले,
औरै भाँति सबद पपीहन के वै गए ।
औरै भाँति पल्लव लिए हैं वृन्द-वृन्द तरु,
औरै छबि-पुंज कुंज-कुंजन उनै गए ।
औरै भाँति सीतल, सुगंध मंद डोलैं पौन,
'द्विजदेव' देखत न ऐसें पल द्वै गए ।
औरै रति, औरै रंग, औरै साज औरै संग,
औरै बन, औरै छन, औरै मन ह्वै गए ॥

सुर ही के भार सूधे-सबद सु कीरन के,
मंदिरन त्यागि करैं अनत कहूँ न गौन ।
'द्विजदेव' त्यों ही मधु-भारन अपारन सों,
नैंकु झुकि-झूमि रहे मोगरे मरुअदौन ।
खोलि इन नैननि निहारौं-तौं-निहारौं कहा,
सुखमा अभूत छाइ रही प्रति भौनैं भौन ।
चाँदनी के भारन दिखात उनयौ सो चंद,
गंध ही के भारन बहत मंद-मंद पौन ॥

गुंजन लागीं भौंर-भीरें केलि-कुंजन में,
क्वैलिया के मुख तें कुहूकनि कढ़ै लगीं ।
'द्विजदेव' तैसैं कछु गहन गुलाबन तें,
चहकि चहूँघाँ चटकाहट बढ़ै लगी ।
लाग्यौ सरसावन मनोज निज ओज,
रति-बिरही सतावन की बतियाँ गढ़ै लगीं ।
होंन लागी प्रीति-रीति बहुरि नई सी,
नव-नेह उनई सी मति मोह सौं मढ़ै लगी ॥

हौंते हरे नव अंकुर की छबि,
छाई कछारन में अनियारी ।
त्यों 'द्विजदेव' कदंबन गुच्छ,
नए-ई-नए उनए सुरभारा ।
दीजिये बेगि सनाथ उन्हें,
चलिऐ बन-कुंजन कुंजबिहारी ।
पावस-काल के मेघ नए,
नव नेह नई वृषभानु कुमारी ॥

चूनरी सुरंग सजि सोहत अंग अंगनि,
उमगनि अनंग अंगना लौं उमहति हैं ।
झुकि झुकि झाँकति झरोखन तें कारी घटा,
चौहरे अटा पै बिज्जु-छटा-सी जगति हैं ।
'द्विजदेव' सुनि सुनि मंद पपीहरा के,
पुनि पुनि आँनद पियूष में पगति हैं ।
चारन-चुभी-सी मन-भावन के अंक लगि हैं,
सावन की बूँदें ए सुहावनी लगति हैं ॥

गावौ किन कोकिल, बजावौ किन बेनु-बेनु,
नचौ किन झूँमरि लतागन बन
फेंकि फेंकि मारौ किन निज कर-पल्लव सौं,
ललित लवंग फूल पातन घने

फूल-माल धारौ किन, सौरभ सँवारौ किन,
एहो परिचारक समीर सुग्न सा सनं।
मौर-धरि बैठौ किन चतुर रसाल! आज,
आवत बसत ऋतुराज तुम्हें देखने॥

सॉवन के दिवस सुहावने सलौने स्याम,
जीति रति समर बिराजे स्यामा-स्याम संग।
'द्विजदेव' की सौं तन उघटि चॅहूँधाँ रह्यौ,
चुंबन कौ चहल चुचात चूनरी कौ रंग।
पीत पट तात हरसाने लपटाने लख,
उमहि उमहि घनस्याम-दामिनी का ढंग।
रति-रन भींजे पै न मैन-मद छीजे, अति
रस-बस भीजे तन पुलकि पसीजे अंग॥

फेरि वैसै सुरभि-समीर सरसान लागे,
फेरि वैसे बेलि मधु-भारन उनै गई।
फेरि वैसैं चाह के चकोर चहुँ बोले फेरि,
फेरि वैसी कोइलिया की कूकनि चहूँ भई।
'द्विजदेव' फेरि वैसे गुनी भौंर-भीरें फेरि,
वैसौ ही समय आयो आनँद सुधामयी।
फेरि वैसैं अंगन उमंग अधिकाने,
फेरि, वैसे ही कछूक मति मेरी भोरी ह्वै गई॥

बहि हारे सीतल सुगंधित समीर धीर,
कहि हारे कोकिल सँदेस पंच बान के।
साधन अराधन निसानी ना कछूक जोपैं,
कौन गन भेद पग-सीस-दान-मान के।
'द्विजदेव' की सौं कछु मित्र के बिछोह-काल,
दरनि सकुचौंने दृग-अंबुज अयान रे।
भाजौंई भभरि सो तो मान-मधुकर आली,
आरा ब्यान-ज्वाल-कलित-अँसुवान के॥

धुँधुरित धूरि धुरवाँन की सु छाइ नभ,
जलधर-धारा धग परसन लागी री।
द्विजदेव' हरी-भरी ललित कछारें त्यों,
कन्दन की डारें रस बरसन लागी री।
आलि ही तें देखि वन-वेलिन की बनक,
नवेलिन की मति अति-अरसन लागी री।
लगि लिखि पाती ना सँघाती मनमोहन कों,
पावस अघाती अब-दरसन लागी री॥

उँमडि घुँमडि घन छुडत अखंड धार,
अति ही प्रचंड पौन झूँकन चहतु है।
'द्विजदेव' सदा की कुताहल चहूँघाँ नभ,
सैल न जलाहल की जोग उमहतु है।
वुरि रत थावौ सारें प्रलैनिसा को भय,
जानि करि सुनो बैर आपनो गहतु है।
ए हो गिरिधारी! राखौ, सरन तिहारी अब,
फरि इहि वारी ब्रज बूडन चहतु है॥

'द्विजदेव' तू नैक न मानी तब,
बिनती करी बार हजारन की।
इन माखनचोर के जोर लई,
अरि छीनि सिरी घनसारन की।
लहि ऊँची उसास निमूरै कहा,
लखि सैन घनां घन-भारन की।
दिन द्वैक में पैहै सकेलि सबै,
फल वेलि नई नौ अँगारन की॥

घहरि-घहरि घन! सघन चहूँघाँ घेरि,
छहरि-छहरि बिष बूँद बरसावै ना।
द्विजदेव' की सौं अब चूकि मत दाँव अरे,
पातकी पपीहा तू पिया की धुनि गावै ना।

फेरि ऐसौ औसर न ऐहै तेरे हाथ अरे,
मटकि मटकि मोर ! सोर तू मचावै ना।
हौं तौ बिन प्रान, प्रान चाहति तज्यौई अब,
कत नभचद ! तू अकास चढि धावै ना॥

देखि मधु-मास की इतीक अनरीति,
मधुसूदन जु होते तौ न औते कहौ काहे कौं।
जानि ब्रज बुडत जु होते गिरिधारी तौ पै,
ऊधौ इत तुमहि पठौते कहौ काहे कौं।
'द्विजदेव' प्यारे पिय पीतम जु होते तौ पै,
ब्रज मैं बढौते दुख-सोते कहौ काहे कौं।
बसिकै बिदेस बीजुरी-सी ब्रज बालनि कौं,
होते घनस्याम तौ बरौते कहौ काहे कौं॥

कौन को मान हरै हम यों,
दृग कानन लागि मतौ चहैं जूझन।
त्यों कछु आपुस ही मै उरोज
बसानमी कै-कै चहैं बढि जूझन।
ऐसे दुराज दुहूँ बय के,
सब ही कौ लग्यौ अब चौचँद सूझन।
छूटन लागी प्रभा कढि कै,
बढि केस कनान सौं लागे अरूझन॥

जानक के भार पग परत धरा पै मद,
गध भार कुचन परी हैं छुटि अलकैं।
द्विजदेव तैसिऐ बिचित्र बरुनी के भार,
आधे-आधे दृगनि परी हैं अध-पलकैं।
ऐसी छबि देखि अग-अंग की अपार,
बार-बार लोल-लोचन सु कौन के न ललकैं।
पानिप के भारन सँभारत न गात लंक,
लचि-लचि जाति कच-भारन के हलकैं॥

चित चाहि अबूझ कहैं कितने,
छवि छीनी गयंदन की टटकी।
कवि केते कहैं निज बुद्धि उदै,
यहि सीखी मरालन की मटकी।
द्विजदेव जू ऐसे कुतरकन मैं,
सबकी मति यों ही फिरै भटकी।
वह मंद चलै किन भोरी भटू,
पग लाखन की अँखियाँ अटकी॥

आधी लै उसास मुख आँसुन सौं धोवें रहैं,
जोवैं कहूँ आधे आधे पलन पसारि कै।
नींद भूख प्यास ताहि आधी हू रही न तन,
आधे हू न आखर सकत उचारि कै।
द्विजदेव की सौं ऐसी आधि अधिकानी जा सों,
नैकऊ न तन मन राखति सँभारि कै।
जा दिन तैं जोरि मनमोहन लला तैं डीठि
राधे आधे नैननि न आठ कू निहारि कै॥

मंद-भये दीपक बिलोकि क्यों अनंद होते,
भोरैं चारु चंद के चकोर चित चोरे तें।
होती समताई दिसनागन के भौंरन कन,
चिंतामनि आरसी की आनन अनोखे तैं।
'द्विजदेव' की सौं एती होती उपहास कन,
मानसर हूँ के अरविंद-अति ओखे तैं।
आलिन के संग दीपमाली के बिलोकिबे कौं,
झाँकि उझकि जो न झाँकती झरोखे तैं॥

प्रात सुभाइन हीं गई बाग,
बिलोकि प्रसून की पाँति रही पगि।
ताहि समै तहँ आये गुपाल,
तिन्हैं लखि औरो गयो हियरो ठगि।

पै 'द्विजदेव' न जानि पर्‌यो,
घों कहा तिहि काल परे अँसुवा जगि।
तू जो कहै सखि! लोनों सरूप,
सो मो अँखियाँन में लौनों गई लगि॥

कारी नभ, कारी निसी, कारिऐ डरारी घटा,
भूकन बहत पौन आँनद कौ कद री।
'द्विजदेव' साँवरी सलौनी सजी स्याम जु पैं
कीन्हों अभिसार लखि पावस अनद री।
नागरी गुनागरी सु कैंसे डरै रैनि डर,
जाके सँग सोहैं ए सहाइक अमद री।
बाहन मनोरथ, उँमाहि सँगवारी सखी,
मैन मद सुभट मसाल मुख चंद री॥

दानि दावि दतन अधर छतछत करै,
आपन ही पाँइन कौ आहट सुनति सौन।
'द्विजदेव' लेति भरि गातन प्रसेद अलि,
पातहू की खरक जु होती कहूँ काहू भौन।
कंटकित होत अति उससि उसासनि तैं,
सहज सुवासन सरीर मजु लागैं पौन।
पंथ ही मैं कंत के जु होत यह हाल तो पै,
लाल की मिलनि ह्वै है बाल की दसा धों कौन॥

बाँके, सक हीने, राते कंज छबि छीने, माँते,
झुकि झुकि झूमि झूमि काहू कों कछू गनै न।
'द्विजदेव' की सौं ऐसी बनक बनाइ,
बहु-भाँतिन बगारैं चित चाहन चहूँधाँ चैन।
पेखि परे प्रात जौ पै गातन उछाह भरे,
बार-बार तातें तुम्हें पूछती कछूक बैन।
एहो ब्रजराज! मेरे प्रेम-धन लूटिबे कौं,
बीरा खाइ आए कितै आपके अनोखे नैन॥

उत्तर-रीति

सरदार

संग की सहेली रहीं, पूछत अकेली सिया,
तीर जमुना के बीर चमक चपाई है।
हौं तो आई भागत डरत हियरा तें घर,
तेरे सोच करि मोहि सोचत सवाई है।
नचि है वियोगी योगी जन सरदार,
ऐसी कंठ तें कलित कूक कोकिल कढ़ाई है।
विपिन-समाज में दराज सी अवाज होति,
आज महाराज रितुराज की अवाई है॥

गोरी सी बैस किसोरी सबै,
भरि झोरी अबीर उड़ावती हैं।
कर ताल दै ढोलक की धधकी,
धुनि बाँधि धमार बजावती हैं।
सरदार लिएँ मिथिलेस-कुमारि,
उदार ह्वै भाग सरावती हैं।
मुसिक्याय कै नैन नचाय सबै,
रघुनाथै बसंत बँधावती हैं॥

साहिब मनोज को मुसाहिब बसंत अंत,
मर ना गयो री नाम सुनत नगारे को।
ग्रीषम गरूर पूर छायो लै इमानु भयो,
भेद ते अजान, अग तकत उजारे को।
तिन सरदार ना उपाय, अब एक करै,
तरक तलास लायो अधम अँध्यारे को।
दाबि जग जीवननि जीवन कौं नाह,
हाथ छिन न देत, लेत जारन हमारे को॥

२५७

डरो न अहीरन तें, अगर अबीरन तें,
चार ननी चारु चार ओरन ते धाओ री।
एन हाथ आडी पिचकारी की अगारी मारि,
एक हाथ ओट राखि आँखिन बचाओ री।
करि सरदार आयो बडो सिलदार,
ताहि खेल को सवाद रंग-रंग गन बताओ री।
कीरति-कुमारी क्यों हेरि कै कुमारी कोउ,
ए री गुनचारी, बनचारी बाँधि लाओ री॥

— *॥•॥* —

लछिराम

सामुहे सुमन बरसाइ सुघराई संग,
लछिराम रंग सारदा हू को रितै रहे।
छाती मं लगाइ सूम थाती-सौ कमल कर,
सुकुमारताई को सराहि दुचितै रहे।
अलक लॅयाई, चारु चख चपलाई,
अधरान की ललाई पर हरप हितै रहे।
माइ! मनमोहन, गोराई मुख-मंडल पै,
राई नौन बारि घरी चारि लौं चितै रहे॥

पैंजनी ककन की झनकार सों,
नासिका मोरि मरोरति भौंहैं।
ठाढ़ी रहै पग द्वैक चलै,
सने स्वेद कपोल कछू उघरौंहैं।
यों लछिराम सनेह के संगन,
साँकरे मे पर प्यारी लजौंहैं।
छाकि रह्यौ रस-रंग अभी,
मनमोहन ताकि रह्यौ तिरछौंहैं॥

नौसत सिंगार साजि, कीन्ही अभिसार जाइ,
जोबन बहार रोम रोम सरसत जात।
लछिराम तैसो झनकार पैंजनी की,
कर कंकन खनक चूरी चारु परसत जात।
झरत प्रस्वेद, मुख चूनर सुरंग बीच,
विहँसत मन सारदा कौ तरसत जात।
दामिनी अमंद सोहैं बस रस फंद चंद,
मानों लाल चादर में मोती बरसत जात॥

मौज में आई इतै लछिराम,
लग्यौ मन साँवरो आनँद-कंद में।
सूनो सँकेत निहारत ही,
पर्‌यौ सानरो आनन घूँघट बंद में।
बोलिबे कौ अभिलाख रचै,
पै न बोलै कछू दुख-रासि दुचंद में।
ह्वै रही रैन-सरोज सी प्यारी,
परी मनों लाज मनोज के फंद में॥

चटपटी चाह अंग उपटे अनंग केरी,
रंग रावटी तें काम नट की कुमारी-सी।
कवि लछिराम राज-हंसनि सों मंद-मंद,
परम प्रकासमान चाँदनी सँवारी-सी।
नागरि निकुंज में न हेर्‌यौ नंदचंद,
मुख रस पै सहेली भई आँखें रतनारी-सी।
भौंहन मरोरति, निथोरति मुकुत हार,
छोरति छरा के बंद, रोष-मद ढारी-सी॥

बदल्यो बसन सो जगत बदलोई करै,
आरस में होत ऐसो या में कहा छल है।
छाप है हरा की कै छपाए हौ हरा को,
छाती भीतर भगा के छाई छवि झलझल है।
लछिराम हौं हूँ धाय रचिहौं बनक ऐसो,
आँखिन रचाये पान जात क्यों अमल है।
परम सुजान मनरंजन हमारे कहा,
अँजन अधर म लगाये कौन फल है॥

आए वहूँ अनत निहार करि मंदिर में,
सामुहे झमकि छवि दामिनी की छोरै ह।
आरस-वलित चागो, मरगजी ढीली पाग,
बदन प्रस्वेद भाल भौंहन के कोरै हैं।

भरम रुल्यौ न अंग परसत मोहिनी कौ,
लछिराम सान संग मोहन भरोरे हैं।
लोचन सुरंग हेरि बाल के सरोष मानो
रंगसाज मदन मजीठ रंग-बोरे हैं॥

प्रीति रावरे सों करी, परम सुजान जानि,
अब तौ अजान बनि मिलत सबेरे पै।
लछिराम ताहू पै सुरंग ओढनो लै सीस,
पात-पट देत गुजरैटिन के टेरे पै।
सरासीर छलकैं प्रस्वेद कन, लाल भाल,
मदन मसाल बारौं बदन उजेरे पै।
आपुने कलंक सों कलंकिनी बनी हौं,
छूटि ओर हू को धरत कलंक सिर मेरे पै॥

सजल रहत आप औरन को देत ताप,
बदलत रूप और बसन बरेजे में।
ता पर मयूरन के झुंड मतवारे सालैं,
मदन भरारे महा झरनि मजेजे में।
नि लछिराम रंग साँवरो सनेही पाय,
अरजि न मानैं हिय हरषि हरेजे में।
गरजि गरनि बिरहीन के बिदारै उर,
दरद न आवै, धरै दामिनी करेजे में॥

—:॥०॥:—

हरिश्चन्द्र

पहिले ही जाय मिले गुन में श्रवन फेरि,
रूप-सुधा मधि कीनो नैनहू पयान है।
हँसनि नटनि चितवनि मुसुकनि
सुघराई रसिकाई मिलि मति पय पान है।
मोहि मोहि मोहन मइ री मन मेरो भयो,
हरिचंद भेद ना परत कछु जान है।
कान्ह भये प्रानमय प्रान भये कान्हमय,
हिय में न जानी परै कान्ह है कि प्रान है॥

पिय पै जु हाइ अधिकार तो बिचार कीजै,
लोक-लाज भलो बुरो भलें निरधारिए।
नैन श्रौन कर पग सबै परबस भये,
उतै चलि जात इहें कैसे कै सम्हारिये।
हरिचंद भट सब भांति सों पराइ हम,
इहें नाम नहि कहो कैसे कै निवारिये।
मन में रहै जो ताहि दीजिये बिसारि,
मन आपै बसे जामें ताहि कैसे कै बिसारिए॥

बोल्यो करै नूपुर श्रवन के निकट सदा,
पदतल लाल मन मेरे बिहर्‌यो करै।
बानी करै बसी धुनि पूरि रोम-राम मुख,
मन मुसकानि मद मन ही हँस्यो करै।
हरिचंद चलनि मुरनि बतरानि चित,
छाद रहै छबि जुग दृगन भर्‌यो करै।
प्रानहू ते प्यारो रहे प्यारो तू सदाई,
तेरो पीरो पट सदा जिय बीच फहर्‌या करै॥

देखि घनस्याम घनस्याम की सुरति करि,
जिय में बिरह घटा घहरि-घहरि उठै।
त्यों ही इन्द्रधनु बगमाल देखि बनमाल—
मोतीलर पी की जिय लहरि-लहरि उठै।
हरिचंद मोर पिक धुनि सुनि बंसीनाद,
बाँकी छबि बार-बार छहरि-छहरि उठै।
देखि-देखि दामिनि की दुगुन दमक,
पीत-पट-छोर मेरे हिय फहरि-फहरि उठै॥

गुरुजन बरज रहे री बहु बार मोहिं,
सब तिनहूँ की छोड़ि प्रेम-रंग राँची मैं।
त्यों ही बदनामी लई कुलटा कहाइ कै,
कलंकिनी कहाई ऐसी प्रीति-लीक खाँची मैं।
तजि हरिचंद सब छोड़्यो प्रानप्यारे काज,
याते जग झूठो भयो रही एक साँची मैं।
नेह के बजाय बाज छोड़ि सब लाज आज,
घूँघट उघारि ब्रजराज हेत नाची मैं॥

हौं तो याही सोच में बिचारत रही री काहे,
दरपन हाथ ते न छिन बिसरत है।
त्योंही हरिचंद जू वियोग औ संयोग दोऊ,
एक से तिहारे कछु लखि न परत है।
जानी आज हम ठकुरानी तेरी बात तू तो,
परम पुनीत प्रेम-पथ बिचरत है।
तेरे नैन मूरति पियारे की बसत ताहि,
आरसी में रैन दिन देखिबो करत है॥

पिया प्यारे बिना यह माधुरी मूरति,
औरन को अब पेखिये का।
सुख छाँड़ि कै संगम को तुमरे,
इन तुच्छन को अब लेखिये का।

माच्यो साज गाँव मिलि तीज के हिंडोरना को,
तानि कै वितान लासो फरस बिछायो री।
आईं मिलि गोपी ता पै भीजि झुंड झुंड,
काम-छाप सी लगावैं गावै गीत मन-भायो री।
माहिं जानि पाई परी दरी ते दया कै
हरिचंद [illegible] तारा लिपि पहुँचायो री।
जानि गई [illegible]
[illegible] खायो री॥

आजु वृषभानुराय पौरी होरी होय रही,
दौरी हैं किसोरी सबै जोबन चढाई मैं।
खेलत गोपाल हरिचंद राधिका के साथ,
बुका एक सोहत कपोल की लुनाई मैं।
कैधौं भया उदित मयंक नभ-बीच कैधौं,
हीरा जर्यो बीच नीलमनि की जराई मैं।
कैधौं पर्यो कालिंदी के नीर माँहि छीर कैधौं,
गरक सु गोरी भइ स्याम सुंदराई मैं॥

खेलौ मिलि होरी ढोरो केसर, कमोरी फैंको,
भरि-भरि झारी लाल जिअ में विचारौ ना।
डारौ सबै रंग संग चंग हू बजाओ गाओ,
सबन रिझाओ सरसाओ सक धारो ना।
कहत निहोरि कर जोरि हरिचंद प्यारे,
मेरी बिनती है एक हाहा ताहि टारौ ना।
नैन हैं चकोर मुख-चंद तैं परैगी ओट,
यातैं इन आँखिन गुलाल लाल डारौ ना॥

राखत नैनन में हिय में भरि,
दूर भए छिन होत अचेत हैं।
सौतिन की कहै कौन कथा,
तसबीर हू सों सतराति सहत हैं।
लाग भरी अनुराग भरी,
हरिचंद सबै रस आपुहि लेत हैं।
रूप सुधा इकली ही पियै,
पिय हू को न आरसी देखन देत हैं॥

हौं तो तिहारे दिखाइबे के हित,
जागत ही रही नैन उजार-सी।
आए न राति पिया हरिचन्द,
लिए कर भोर लौं हौं रही मार-सी।

है यह हीरन सों जड़ी,
रंगन तापै करी कछु चित्र चितार-सी।
देखो तू लालन कैसी बनी है,
नई यह सुन्दर कंचन-आरसी ॥

हों तो तिहारे सुखी सों सुखी,
सुख सों जहाँ चाहिए रैन बिताइये।
पै बिनती इतनी हरिचंद,
न रूठि गरीब पै भौंह चढ़ाइये।
एक मतो क्यों कियो तुम सों तिन,
सोऊ न आवै न आप जो आइये।
रूसिबे सों पिय प्यारे तिहारे,
दिवाकर रूसत है क्यों बताइये ॥

आइ आज नित अकुलाई अलसाई प्रात,
रीसैं मति पूछै बात रंग नित ढरिगो।
सोने सो या गात छुवै कै सोनो भयो आप, कै वा
आतप प्रभात ही को प्रगट पसरिगो।
हरिचंद सौतिन की मुख दुति छीनी कै वा,
आपनो बरन कहूँ पाय धाय धरिगो।
नील पट तेरो आज औरै रंग भयो काह,
मेरे जान निठुर पिया तें पीरो परिगो ॥

रोकहिं जो तो अमंगल होय,
औ प्रेम नसै जो कहै पिय जाइये।
जौ कहैं जाहु न तौ प्रभुता,
जौ कछू न कहैं तो सनेह नसाइए।
जौ हरिचंद कहैं तुमरे बिन जी हैं न,
तो यह क्यों पतिआइए।
तासों पयान समै तुमरे हम,
का कहैं आपै हमैं समझाइए ॥

मैं वृषभानुपुरा की निवासिनि,
मेरी रहे वृज वीथिन भाँवरी।
एक सँदेसा कहौं तुम सौं,
पै सुनो जो करो कछू ताको उपाव री।
जौ हरिचंद जू कुंजन में मिलि
जाहि कभी लखि कै तुम बावरी।
बूझी है वाने दया करिकै कहियो,
परसों कब होयगी रावरी॥

हाय दसा यह कासों कहा,
कोउ नाहिं सुनें जो करे हैं निहोरन।
कोऊ बचावनहारो नहीं,
हरिचंद जू यों तो हितू हैं करोरन।
सो सुधि कै गिरिधारन की अब,
धाइ कै दूर करो इन चोरन।
प्यारे तिहारे निवास की ठौर को,
बोरत है अँसुआ बरजोरन॥

रोवैं सदा नित की दुखिया बनि,
ये अँखियाँ जिहि घोत सों लागी।
रूप दिखाओ इन्हें कबहू,
हरिचंद जू जानि महा अनुरागी।
मानिहैं औरन सों नहिं ये,
तुव रंग-रँगी कुल लाजहि त्यागी।
आँसुन को अपने अँचरान सों,
लालन पोंछि करो बड-भागी॥

आजु लौं जौ न मिले तो कहा,
हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं।
मेरो उराहनो है कछु नाहि,
सबै फल आपुने भाग को पावैं।

जो हरिचंद भई सो भई,
अब प्रान चलै चहैं तासों सुनाये
प्यारे जू है जग की यह रीति,
बिदा की समै सब कंठ लगावैं ॥

अब प्रीति करी तो निबाह करो,
अपने जन सों मुख मोरिये ना।
तुम तो सब जानत नेह मजा,
अब प्रीति कहूँ फिरि जोरिये ना।
हरिचंद कहैं कर जोरि यही,
यह आस लगी तेहि तोरिये ना।
जिन नैनन मॉहि बसौ नित ही,
तिन ऑसुन सों अब बोरिए ना॥

इन दुखियान को न चैन सपने हुँ मिल्यो
तासों सदा व्याकुल बिकल अकुलायँगी।
प्यारे हरिचन्द जू की बीती जान औध
प्रान चाहत चले पै ये तो संग ना समायँगी।
देख्या एक बार हू न नैन भरि तोहि यातें
जौन जौन लोक जैहें तहाँ पछतायँगी।
बिना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय
मरे हू पै आँखें ये खुली ही रहि जायँगी॥

मन मोहन तें बिछुरी जब सों
तन ऑसुन सों सदा धोवती हैं।
हरिचन्द जो प्रेम के फन्द परी
कुल की कुल लाजहि खोवती हैं।
दुख के दिन कों कोउ भाँति बितै
बिरहागम रैन सँजोवती हैं।
हम ही अपनी दसा जानैं सखी
निसि सोवती हैं किधौं

॥

पीरो तन पर्‌यो फूली सरसों सरस सोई
मन मुरझानो पतझार मानो लाई है।
सीरी स्वाँस त्रिविध समीर-सी बहति सदा
अँसियाँ बरसि मधु झरि-सी लगाई है।
हरिचन्द फूले मन मैन के मसूसन सों
ताही सों रसाल बाल बदि कै बौराई है।
तेरे बिछुरे ते प्रान कंत के हिमंत अंत
तेरी प्रेम-जोगिनी बसंत बनि आई है॥

कूकै लगीं कोइलें कदंबन पै बैठि फेरि
धोए धोए पात हिलि-हिलि सरसै लगे।
बोलै लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि
देखि कै सँजोगी-जन-हिय हरसै लगे॥
हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी
लखि हरिचन्द फेर प्रान तरसै लगे।
फेरि झूमि-झूमि बरषा की ऋतु आई फेरि
बादर निगोरे झुकि झुकि बरसै लगे॥

घेरि घेरि घन आए, छाए रहे चहुँ ओर
कौन हेत प्राननाथ सुरति बिसारी है।
दामिनी दमक जैसी जुगनू चमक तैसी
नभ मे बिसाल बग पंगति सँवारी है।
ऐसी समै हरिचन्द धीर न धरत नेकु
बिरह बिथा तें होत ब्याकुल पियारी है।
प्रीतम पियारे नन्दलाल बिनु हाय यह
सावन की रात किधौं द्रौपदी की सारी है॥

सिसुताइ अजों न गइ तन तें,
तऊ जोबन जोति बटोरै लगी।
सुनिकै चरचा हरिचन्द की,
कान कछूक दै भौंह मरोरै लगी।

बचि सासु जेठानिन सौं पिय तैं,
दुरि घूँघट में दृग जोरै लगी।
दुलही उलही सब अंगन तैं,
दिन द्वै तें पियूष निचोरै लगी॥

आई गुरु लोग संग न्यौते ब्रज गाँव,
नई दुलही सुहाई शोभा अंगन सनी रही।
पूछे मन मोहन बतायो सखियन यह
सोई राधा प्यारी वृषभानु की जनी रही।
हरिचन्द पास जाय प्यारो ललचायो,
दीठ लाज की घँसी सो मानो हीर की अनी रही।
देखो अन देखो देखा आधो मुख आय तऊ
आधो मुख देखिबे की हौंस ही बनी रही॥

सास जेठानिन सौं दबती रहै
लीने रहै रुख त्यों ननदी को।
दासिन सों सतरात नहीं,
हरिचन्द करै सनमान सखी को।
पीय को दच्छिन जानि न दूसत,
चौगुनो चाउ चढ़ै या लली को।
सौतिन हू को असीसै, सुहाग करै
कर आपने सेंदुर टीको॥

—***—

सो तौ करै कलित प्रकास कला सोरह लौं,
यामैं वास ललित कलानि चौगुनी कौ है।
कहै 'रतनाकर' सुधाकर कहावै वह,
याहि लखैं लगत सुधा को स्वाद फीकौ है।
समता सुधारि औ निसमता निवारि नीकैं,
ताहि उर धारि जो निसद ब्रज-टीकौ है।
चारु चाँदनी कौ नीकौ नायक निहारि कह्यौ,
चाँदनी कौ नाकौ कै हमारौ चाँद नीकौ है॥

जगर-मगर ज्योति जागति जवाहिर की,
पाइ प्रतिबिंब-ओप आनन-उजारी की।
छवि 'रतनाकर' कौ तरल तरंगनि पै,
मानौ जगाजोति होति स्वच्छ सुधाधारी की।
संग मैं सखी-गन के जोबन-उमंग-भरी,
निरखति सोभा हाट-बाट की तयारी की।
जित जित जाति वृषभानु की दुलारी बनी,
तित तित जाति दबी दीपति दिवारी की॥

संग मैं तरैयनि के राका रजनीस चारु,
छोहर छपा पै छटा चलित बिराज्यौ है।
कहै 'रतनाकर' निहारि सो नवेली निज,
आनन सौं करन मिलान ब्यौंत साज्यौ है।
संग लै सयानि सखियानि नियरान चली,
पग-पग नूपुर निनाद मग बाज्यौ है।
ज्यौं ज्यौं मंद-मंद चढ़ी आवति गरूर बनी,
त्यौं त्यौं मद-चूर चंद दूरि जात भाज्यौ है॥

एक ही साँचौ स्वरूप अनूप है,
साँचौ यहै मन एक लकीर।
त्यौं 'रतनाकर' सस कौ भेम,
असेस लसैं भ्रम की भरी भीरैं।
ता बिनु और जो देखि परै,
थिति ताकी सुनौ औ गुनौ धरि धीर।
लोचन द्वैतता दोष लगै
यह एक तैं ह्वै गईं द्वै तसवीरैं॥

नागरी नवेली अरविन्द-मुखी चोप चढ़ी,
कढ़ी जमुना सौं जल बाहिर अन्हाइ कै।
झीनौ नीर भीनौ चीर लपट्यौ सरीर माहिं,
परत न पेखि तन पानिप समाइ कै।
लाल ललचौंहैं तहाँ सौंह आनि ठाढ़े भए,
हेरत हँसहिं अंग-अंगनि लुभाइ कै।
कर उर ऊरुनि दै झुकि सकुचाइ फेरि,
धार जमुना मैं धँसी मुरि मुसुकाइ कै॥

दुख सुख रावरे हमारे ह्वै रहे हैं एक,
सार भेद भाव के पसारैं दरे दत हैं।
कहै रतनाकर तिहारे कजरारे ओठ,
कालकूट नैननि हमारै घर दत हैं।
जावक के दाग रहे जागि रावरैं जा भाल,
सो तो मम अंतर अँगारैं भरे देत हैं।
कठिन करारे कुच उर जो तिहारे अरे,
हिय मैं हमारे सो दरारैं करे देत हैं॥

ज्यौं मनि कै जल तीर धरी,
निरख्यौ त्यौं अधीर ह्वै होत कन्हाइ।
जानै नहीं तिहि ताकनि मैं,
रतनाकर कीनो कहा टुनहाई।

छाई कछू हरुआई सरीर के,
नीर में आइ कछू भरुआई।
नागरी की नित की जो सखी,
सोई गागरी आजु उठै न उठाई॥

ननद जिठानी सास सखिनि सयानी मध्य,
बैठी हुती बाल अलबेली जहाँ आइ कै।
कहै रतनाकर सुजान मनमोहन हूँ,
आए ललचाइ तहाँ कछु मिस ठाइ कै।
चहत बनै न भरि लोचन दुहूँ सौं अरु,
रहत बनै न नार नैंसुक नवाइ कै।
दुरि दुरि औरनि सौं जुरि जुरि तौरनि सौं,
घुरि घुरि जात नैन मुरि मुसुकाइ कै॥

बैठे बन विकल बिसुरत गुपाल जहाँ,
औचक तहाँई बाल जोगी इक आइगे।
कह्यौ रतनाकर उपाय हम ठानै कछु,
जानैं जदि कापै आज एतिक लुभाइगे।
ताही छन छाइगा छलक इत आँस नैन,
चैन उत आनत गरे लौं निरुभाइगे।
पाइगे न जानैं कहा मरम दुहूँ के दुहूँ,
हँसि सकुचाइ धाइ हिय लपटाइगे॥

देखत हमारी हूँ दसा न इठिलानि माहिं,
आपनी तौ बानि ना बिलोकत अठानि मैं।
कहै रतनाकर उपाइ ना बसाइ कछू,
जासौं लखौ भाइ भेद उभय दसानि मैं।
पावतौ कहूँ जौ कोउ चतुर चितेरौ तौ,
दिखावतौ सुभाव सोधि कलित कलानि मैं।
रिझवन-आतुरी हमारी अँखियानि माहिं,
सिझवनि-चातुरी तिहारी मुसकानि मैं॥

जब तैं रची है रूप रावरे रसिकलाल,
तब तैं बनी है बाल बात बरकन की।
कहै रतनाकर रही है रुचि नैननि मैं,
मीन-मुख मंजुल मुकुत ढरकन की।
आठौ जाम वाम मग जोहत मृगी-सी जब,
चौंकै पाय आहट तिनूका खरकन की।
अनुराग-रंजित अनाज सौं कढ़त स्याम,
मानिक तैं मानहु मरीचि मरकत की॥

औचक अकेले मिले कुंज रस-पुंज दोऊ,
मौचक भए औ सुधि-बुधि सब खै गई।
कहै रतनाकर त्यौं बानक विचित्र बन्यौ,
चित्र की सी पलकैं सुभौंहनि मैं ध्वै गई।
नैननि मैं नैननि के बिंब प्रतिबिंबनि सौं,
दोऊ ओर नैननि की पाँति बँधि द्वै गईं।
दोउन कौं दोउनि के रूप लखिबे कौं मनौ,
चार आँख होत ही हजार आँख ह्वै गई॥

राँच्यौ रति-जाग नींद सौंपि कै हमारे भाग,
सो तौ सोध आप ही झपकि ढहि देत हैं।
बाढ़ उहि प्यारी मुख मंजुल सुधाकर सौं,
रस रतनाकर की थाह थहि देत हैं।
पानिप के अमल अगार सुख-सार तऊ,
लाइ उर दुसह दवारि दहि देत हैं।
नैन निज बानी कहि बनिनि बखानी बात,
ये तौ पर सकल कहानी कहि देत हैं॥

चसकौ परै ना मान-रस कौ कहूँ धौं वाहि,
लीजै बात रंचक विचारि हित हानि की।
कहै रतनाकर तिहारे सुबरन पर,
दमक दुलारी रति तमक तबानि की।

राप की रुसाइ रुख आवत सुसीली होति,
मंद मुसकानि लै रसीली अँखियानि की।
होत मृदु मीठे सीठ बचन तिहारे पाइ,
कठ-कोमलाई मधुराई अधरानि की॥

लै लियौ चुम्बन खेलत में कहूँ,
तापै कहा इतनौं सतरानी।
होठनि ही में कछू करि सौंह,
वृथा भरि भौंह कमान हू तानी।
लीजिय फेरि सबेर अबै,
अनहीं तौ मिठासहुँ नाहि सिरानी।
यों कहि सौंहें कियौ अधरा इन,
वे तिरछौंहैं चितै मुसकानी॥

तेरी रोस रुचिर सदोस हू ह्वै हेरन कौं,
लागी मन लालसा न नैकु डगि जाति है।
कहै रतनाकर रसाइ माहिं मान हूँ की,
सहज सुभाव सरसाइ रगि जाति है।
फीकी चितवन हूँ न नीकी भाँति जानी जाति,
तामैं लाल लोचन लुनाइ लगि जाति है।
कहति कछू जो कटु बानि हूँ अठान ठानि,
आनि अधरा सौं मधुराइ पगि जाति है॥

मान कियौ मोहन मनौती मन मौन मानि,
पानि जोरि हारीं जब सखियाँ, मन्यौ नहीं।
तब बरजोरी करि नवल किसोरी भेस,
रचाँई केलि मौन नैकु टेकहि गन्यौ नहीं।
प्यारी बनि प्रीतम सुजनि भरि लीन्यौ उन,
चल छल कीन्यौ रहु जात सु मन्यौ नहीं।
प्रथम समागम सो सब ही कन्यौ पै एक
अंक तैं छटकि छूटि भाजत बन्यौ नहीं॥

दीठि तुम्हें छूवै छली पलट्यो रँग,
दीमत साँवरो सात सनै है।
है रतनाकर रावरे अंगनि,
चेटक पेसि प्रतच्छ परै है।
देति हैं गोरस ठाढे रहौ उत,
रार करैं कछु हाथ न ऐहै।
साँवरे छैल छुवौगे जो मोहि तो,
गातनि मेरे गुराइ न रैहै॥

नाक के चढावत पिनाक भौंह ढीली परै,
चढत पिनाक भौंह नाक मुसुकाइ दे।
कहैं रतनाकर त्यौं मीन हूँ नचाइ लिऐं
मुख तैं टरै न नैन गौरव गवाइ दै।
अनख बढावत अनंग की तरंगें नटैं,
धीरज धरा तें प्रन-पायहि उठाइ दै।
रहति हियें ही हँसि हिय को हमारे हाय,
पैयाँ परौं नैंक मान करिबो सिखाइ दै॥

गूँथन गुपाल बैठे बेनी बनिता की आप,
हरित लतानि कुंज माँहि सुख पाइ कै।
कहै रतनाकर सँवारि निरवारि बार,
धार नार निरख निलाकत निराइ कै।
लाइ उर लेत कबौं फेरि गहि छोर लखैं,
ऐसे रही ग्वालनि मैं लालन लुभाय कै।
का ह गति जानि कै सुजान मन माद मानि,
"करत कहा हौ" ? कह्यौ मुरि मुसुकाइ कै॥

साँझी राधिका मान कियौ,
परि पाँइनि गोरं गुबिंद मनावत।
नैन निचौहिं रहैं उनके नहि,
बैन निनै के न ये कहि पावत।

रोष की रुखाई रस आवत सुसीली होति,
मद मुसकानि तें रसीली अँखियानि की।
होत मृदु मीठे सीठे वचन तिहारे पाइ,
कठ-कोमलाई मधुराई अधरानि की॥

लै लियौ चुम्बन खेलत में रहूँ,
तापै कहा इतनौं सतरानी।
होठनि ही म कछू करि सोह,
वृथा भरि भौंह कमान है तानी।
लीजिय फेरि सबेर अबै,
अनहीं तौ मिठासहूँ नाहि सिरानी।
यों कहि सौंह कियौ अधरा इन,
वे तिरछौंहैं चितै मुसकानी॥

तेरी रोस रुचिर सदौस हू ह्वै हेरन कौं,
रागी मन लालसा न नैकु डगि जाति है।
कहै रतनाकर रसाइ माहि मान हू की,
सहज सुभाव सरसाइ खगि जाति है।
फीरी चितवन हू न नीकी भाँति जानी जाति,
तामें लोल लोचन लुनाइ लगि जाति है।
कहति कछू जो कटु बानि हूँ अठान ठानि,
आनि अधरा सों मधुराई पगि जाति है॥

मान कियौ मोहन मनीसी मन मौन मानि,
पानि जारि हारी जब सखियाँ, मन्यौ नहीं।
तब बरजोरी करि नवल किसोरी भेस,
रचाई केलि भौन नैकु टेकहि गन्यौ नहीं।
प्यारी चनि प्रीतम भुजनि भरि लायौ उर,
पल छिन बीचौ बहु जात सु मन्यौ नहीं।
प्रथम समागम सो सब ही बन्यौ पै एक
अब तैं उटकि छूटि भाजत बन्यौ नहीं॥

दीठि तुम्ह छूवै छली पलट्यो रँग,
दीसत साँवरो साज सनै है।
है रतनाकर रावरे श्रंगनि,
चेटक पेखि प्रतच्छ परै हैं।
देति हैं गोरस ठाढे रहौ उत,
राग करै कछु हाथ न ऐहै।
साँवरे छैल छुवौगे जो मोहि तो,
गातनि मेरे गुराइ न रैहे॥

नाक के चढावत पिनाक भौंह ढीली परैं,
चढत पिनाक भौंह नाक मुसुराइ दे।
कहै रतनाकर त्यौं ग्रीव हूँ नवाइ लिएँ
मुख तैं टरै न नैन गौरव गराइ दे।
अनख चढावत अनग की तरगें बढ़ें,
धीरज धरा तैं प्रन-पायहिं उठाइ दे।
रहति हियें ही हाँस हिय का हमारे हाय,
पैयाँ परौं नैंक मान करिबौ सिखाइ दै॥

गूँथन गुपाल बैठे बेनी बनिता की आप,
हरित लतानि कुंज माहि सुख पाइ कै।
कहै रतनाकर सँवारि निरखाणि बार,
बार बार निरख निलोकत सिराइ कै।
लाए उर लेत क्यौं फेरि गहि छोर लरैं,
ऐसे रहीं ग्वालनि मैं लालन लुभाय कै।
याह गति जानि कै सुजान मन मोद मानि,
"करत कहा हौ" ? कह्यौ मुरि मुसुराइ कै॥

साँवरी राधिका मान कियौ,
परि पाँइनि गोरे गुविंद मनावत।
नैन निचौंहिं रहैं उनके नहिं,
बैन विनै के न ये कहि पावत।

हारी सखी सिख दै रतनाकर,
आन न माइ सुभाइ पै छावत।
टानि न आवत मान उन्है,
इनकौ नहिं मान मनावन आवत ॥

नींद लौ हमारो हूँ दुनींदे ह्वै सुनींदे सोए,
सुनत पुकार नाहिं परी हौं चहल मैं।
कहै रतनाकर न ऐसी परितीति हुती,
प्रीति-रीति हाय हियें जानी हौ सहल मैं।
देखत हीं आपने दृगनि हितहानी करी,
अब पछितातिं परी ताहि की दहल मैं।
नार मैं अजान बलबीरहिं निरास दियौ,
नीर-सिचे तरुनी उसीर के महल मैं ॥

जानति हौं जैसे तुम छलके निधान कान्ह,
ताहू पर मोहिं प्रम-पूरन पगे लगौ।
कहै रतनाकर कपोलनि लौं पीक-लीक,
मोकौं तुम मेरे अनुरागहि रँगे लगौ।
जैसैं दरपन मैं दिखात उलटोइ सब
सूधौ पर जानि जात जब लखिबे लगौ।
मेरे मन-मुकुर अमल स्वच्छ माहिं त्यौं हीं,
रपट निरे हूँ प्यारे निपट भले लगौ ॥

नमुना रुआरनि पै बन-द्रुम डारनि पै,
और कछू मनु मधुराई फिरि जाति है।
कहै रतनाकर त्यौं नगर अगारनि पै,
नारनि पै कनक निकाइ फिरि जाति है ॥
नर-पसु पच्छिनि की चरचा चलावै कौन,
पौन-पानीहू मैं सरसाई फिरि जाति है।
जहाँ जहाँ बाँसुरी बजावत कन्हाइ बीर,
तहाँ तहाँ मदन-दुहाइ फिरि जाति है ॥

बीति जाति बातनि मैं सुखद सँजोग राति,
अंतर थिरात नाहिं साँझ औ सबेरे मैं।
कहै रतनाकर कुलिस-हिय धारी भारी,
करत अकाज आप नाम हू ह्वै हेरे मैं।
मिलि घनस्याम सौं तमकि जो वियोग माहिं,
चमकि चमक उपजाइ उर मेरे मैं।
ताके बदले कौं दुख दुसह बिचारि आज,
गरक गई ह्वै मनौ बीजुरी अँधेरे मैं॥

आइ अठखेलनि सौं अमित उमंग भरैं,
जिनके प्रसंग सौं तरुनि-अंग थहरैं।
जीवन जुड़ावैं रसधाम रतनाकर कौ,
मानस मैं जिनसौं तरंग मंजु छहरैं।
अंग लागि मेरैं मिलि बाधक सुखेन सोइ,
ऐसी करैं भाग-पुंज होहिं कुंज ढहरैं।
दंद हरैं हीतल कौ, कौन नँद-नंद ? नाहिं,
सीतल सुगंध मंद मारुत की लहरैं॥

सोई फूल सूल से भए हैं सुख-मूल अबै,
तापप्रद चंदन अनंद-कंद ही भयौ।
कहैं रतनाकर जो फनि-फुफकार हुतौ,
सन सुकुमार मलयानिल वही भयौ।
फरकि हमारे बाम अंग की फरक ही सो,
बाम सौं सुदच्छिन प्रभाव सबही भयौ।
काल्हि ही भयौ हा बीर बिषम बिषाकर कौ,
आज सो सुधाकर सुधाकर सही भयौ॥

होरी खेलिबे कौं करी केसरि कमोरि घोरि,
उमगति आनँद की तरल तरंग मैं।
कहैं रतनाकर महर की लड़ैती छैल
रोकी गैल आनि हुरिहारनि के संग मैं।

मो तन निहारि धारि पिचकी-अधार अंक,
मारी मुसुकाय धारी उरज उतंग मैं।
सोई पिचकारी रँगी सारी लाल रंग माहिँ,
सोई रँगी अँखियाँ हमारी स्याम-रंग मैं॥



बिरह बिथा की कथा अकथ अथाह महा,
कहत बनै न जो प्रबीन सुकबीनि सौं।
कहै रतनाकर बुझावन लगे ज्यौं कान्ह,
ऊधौ कौं कहन हेत ब्रज-जुवतीनि सौं।
गहबरि आयौ गरौ भभरि अचानक त्यौं,
प्रेम पर्यौ चपल चुचाइ पुतरीनि सौं।
नैंकु कही बैननि, अनेक कही नैननि सौं,
रही सही सोऊ कहि दीनी हिचकीनि सौं॥

प्रेम-भरी कातरता कान्ह की प्रगट होत,
ऊधव अवाइ रहे ज्ञान-ध्यान सरकै।
कहै रतनाकर धरा कौ धीर धूरि भयौ,
भूरि भीति भारनि फनिंद-फन करकै।
सुर-सुरराज सुद्ध-स्वारथ-सुभाव-सनै,
ससय-समाए धाए धाम बिधि हर के।
आइ फिरि ओप ठाम-ठाम ब्रज-गामनि के
बिरहिनि बामनि के बाम अंग फरकै॥

आए हौ सिखावन कौं जोग मथुरा तैं,
तोपै, ऊधौ ये बियोग के बचन बतरावौ ना।
कहै रतनाकर दया करि दरस दीन्यौ,
दुख दरिबे कौं तोपै अधिक बढ़ावौ ना।
टूक टूक ह्वै है मन-मुकुर हमारौ हाय,
चूकि हूँ कठोर बैन-पाहन चलावौ ना।
एक मनमोहन तौ बसिकै उजार्यौ मोहिं,
हिय मैं अनेक मनमोहन बसावौ ना॥

जोगिनि की भोगिनि की विकल वियोगिनि की,
जग में न जागती जमातैं रहि जाइँगी।
कहै रतनाकर न सुख के रहे जो दिन,
तौ ये दुख द्वंद्व की न रातैं रहि जाइँगी।
प्रेम-नेम छाँड़ि ज्ञान छेम जो बतावत सो,
भीति ही नहीं तौ कहा छातैं रहि जाइँगी।
घातैं रहि जाइँगी न कान्ह की कृपा तैं इती,
ऊधौ कहिबे कौं बस बातैं रहि जाइँगी॥

ढोंग जात्यौ ढरकि परकि उर-सोग जात्यौ,
जोग जात्यौ सरकि सकंप कँखियानि तैं।
कहै रतनाकर न लेखते प्रपंच ऐंठि,
बैठि धरा लेखते कहूँ धौं नखियानि तैं।
रहते अदेख नाहिं वेष वह देखत हूँ,
देखत हमारी जान मोर पँखियानि तैं।
ऊधौ ब्रह्म ज्ञान कौ बखान करते ना नैंकु,
देख लेते कान्ह जौ हमारी अँखियानि तैं॥

चाहत निकारन तिन्हैं जो उर-अंतर तैं,
ताकौं जोग नाहिं जोग-मंतर तिहारे मैं।
कहै रतनाकर बिलग करिबै मैं होति,
नीति विपरीत महा, कहति पुकारे मैं।
तातैं तिन्हैं ल्याइ लाइ हिय तैं हमारे वेगि,
सोचिये उपाय फरि चित्त चेतवारे मैं।
ज्यौं ज्यौं बस जात दूरि दूरि प्रिय प्रान-मूरि,
त्यौं त्यौं धँस जात मन-मुकुर हमारे मैं॥

थाती राखि रूप की हमारी हाय छाती माहिं,
बाल कौं मँघाती घाती बनि बिलगायौ है।
कहै रतनाकर सो सूधौ ब्यार हौ तौ ऊधौ,
मधुपुरी माहिं जो अरूप सौ लखायौ है।

परम अनूप एक कूबरी निरूप छाँडि,
रूपवती जुवती न कोऊ मोहि पायौ है।
तातैं तुम्हें अब मनभावन सरूप सोई,
हिय तैं हमारे काढि ल्यावन पठायौ है॥

हरि-तन-पानिप के भाजन दृगंचल तैं,
उमगि तपन तैं तपाक करि धावै ना।
कहै रतनाकर त्रिलोक-ओक-मंडल मैं,
बेगि ब्रह्मद्रव उपद्रव मचावै ना।
हर कौं समेत हर-गिरि के गुमान गारि,
पल मैं पतालपुर पैठन पठावै ना।
फैलै बरसाने मैं न रावरी कहानी यह,
बानी कहूँ राधे आधे कान सुनि पावै ना॥

रहति सदाई हरिआइ हिय-घायनि मैं,
ऊरध उसास सो झकोर पुरवा की है।
पीव-पीव गोपी पीर-पूरित पुकारति हैं,
सोई रतनाकर पुकार पपिहा की है।
लागी रहै नैननि सौं नीर की झरी औ,
उठै चित मैं चमक सो चमक चपला की है।
बिनु घनस्याम धाम-धाम ब्रजमंडल मैं,
ऊधौ नित बसति बहार बरसा की है॥

हाल कहा बूझत बिहाल परी बाल सबै,
बसि दिन द्वैक देखि दृगनि सिधाइयौ।
रोग यह कठिन, न ऊधौ कहिबे के जोग,
सूधौ सौ सँदेस याहि तू न ठहराइयौ।
औसर मिलै औ सरताज कछु पूछहिँ तौ,
कहियौ कछू न दसा देखी सो दिखाइयौ।
आह कै कराहि नैन नीर अवगाहि कछू,
कहिबे कौं चाहि हिचकी लै रहि जाइयौ॥

धाई जित तित तैं बिदाई हेत ऊधव की,
गोपी भरीं आरति सँभारति न साँसु री।
कहै रतनाकर मयूर-पच्छ कोऊ लिए,
कोऊ गुंज-अंजली उमाहै प्रेम आँसु री।
भाव-भरी कोऊ लिए रुचिर सजाव दही,
कोऊ मही मंजु दाबि दलकति पाँसुरी।
पीत पट नंद जसुमति नवनीत नयौ,
कीरति-कुमारी सुरबारी दई बाँसुरी॥

कोऊ जोरि हाथ कोऊ नाइ नम्रता सौं माथ,
भाषन की लाख लालसा सौं नहिं जात हैं।
कहै रतनाकर चलत उठि ऊधव के,
कातर ह्वै प्रेम सौं सकल महि जात हैं।
सबद न पावत सो भाव उमगावत जो,
ताकि ताकि आनन ठगे-से ठहि जात हैं।
रंचक हमारी सुनौ रंचक हमारी सुनौ,
रंचक हमारी सुनौ कहि रहि जात हैं॥

—✻—

हरिऔध

मद माती मुदित मयूर-मंडली के काज,
पारत पियूस कौन घन की थहर मैं।
मनु सुर मत्त या कुरंगन के हेत कौन,
घेरतीं भरत बेनु बधिक-निकर मैं।
हरिऔध होति जो न मोह मैं महानता,
तो बँधत मिलिंद कैसे कंज के उदर मैं।
मन कैसे रमत चकोर औ मरालन कौ,
मोदकारे मंजुल मयंक मानसर मैं॥

सरिता-सलिल है बहत कल-कल नाहिं,
सिलसिल हँसि है हुलास-पगो हुलसत।
दारिम-फलन दंत-राजि है निकसि लसि
खोलि मुँह निरुच सुमन-वृन्द सरसत।
हरिऔध हरि हेरि राका रजनी को हास,
मुदित दिगंत है विकास-भरा बिलसत।
हँसि हँसि लोटि-लोटि जात चारु चाँदनी है,
मंजुल मयंक अहै मंद मंद बिहँसत॥

दोऊ दुहूँ चाहें दोऊ दुहुन सराहें सदा,
दोऊ रहें लोलुप दुहून छवि न्यारी के।
एकै भये रहें नैन मन प्रान दोहुँन के,
रसिक बने रहें दोऊ रस क्यारी के।
हरिऔध केवल दिखात द्वै सरीर ही हैं,
नातो भाव दासी है महेस गिरिधारी के।
प्रान-प्यारे चित मैं निवास प्रानप्यारी करै,
प्रानप्यारो बसत हिये मैं प्रानप्यारी के॥

नैन मदमाते बैन कछु अलसाते कढ़,
उर मैं उमंग अधिराने की दुहाइ है।
रूप होत गात ना समात कचुकी में कुच,
आनन लसात तेरे अजर लुनाइ है।
हरिऔध हेतु वीर चातरी वनी-सी डोलै
घराते न धीर कैसी करति ढिठाई है।
रंग-ढंग दीसे बूझि परत कुरंग-नैनी,
आन तेरे अगन अनंग की चढ़ाई है॥

बयन सुधा में सनि सनि सरसन लागे,
कान परसन लागे नयन नवेली के।
आँगुरी की पोरन में लालिमा दिपन लागी,
गुन गरुआन लागे गरब गहेली के।
हरिऔध हरि हेरि हियरो हरन लागी,
चाहि चितवन लागी कोरक चमेली के।
मंजु छवि छिति-तल पर छहरान लागी,
छुअन छवान लागे केस अलबेली के॥

कुंज में रावति ही मुरली मंजु ते
केवल कानन की छवि औगुनो।
बात बहै तहाँ तो लौं भइ
नहिं जाहि रही मन माहि क्यों गुनी।
चौंकि परी हरिऔध को चाहि,
उमाहि चली बनि आतुल चौगुनी।
नौगुनी चावमयी चपला भइ,
लोचन-चंचलता भई सौगुनी॥

मधुराइ मनोहरता मुसुकानि मैं,
औचक आइ समानी नइ।
रस की रतिआन हूँ मैं हरिऔध,
अनेक गुनी निपुनाइ ठई।

हरिऔध

मद माती मुदित मयूर-मंडली के काज,
पारत पियूस कौन घन की थहर में।
मंजु सुर मत्त या कुरङ्गन के हेत कौन,
बेनसी भरत बेनु बधिक-निकर में।
हरिऔध होति जो न मोह में महानता,
तो बँधत मिलिंद कैसे कंज के उदर में।
मन कैसे रमत चकोर औ मरालन कौ,
मोदवारे मंजुल मयंक मानसर में॥

सरिता-सलिल है बहत कल-कल नाहि,
सिलसिल हँसि है हुलास-पगो हुलसत।
दारिम-फलन दंत-राजि है निरखि लसि
खोलि मुँह निकसि सुमन-वृन्द सरसत।
हरिऔध हरि हेरि राका रजनी को हास,
मुदित दिगंत है विकास-भरो विलसत।
हँसि हँसि लोटि-लोटि जात चारु चाँदनी है,
मंजुल मयंक अहै मंद मंद बिहँसत॥

दोऊ दुहूँ चाहें दोऊ दुहुँन सराहैं सदा,
दोऊ रहें लोलुप दुहून छबि न्यारी के।
एकी भये रहें नैन मन प्रान दोहुँन के,
रसिक चनेइ रहैं दोऊ रस क्यारी के।
हरिऔध केवल दिखात द्वै सरीर ही हैं,
नातो भाव दोरो हैं महस गिरिधारी के।
प्रान-प्यारे चित में निवास प्रानप्यारी रखै,
प्रानप्यारा बसत हिये में प्रानप्यारी के॥

नैन मदमाते बैन कछु अलसाते कढ़,
उर में उमंग अधिराने की दुहाई है।
रूप होत गात ना समात कचुकी में कुच,
आनन लसात तेर अजन लुनाई है।
हरिऔध हेतु नीर बावरी बनी-सी डोलै
धरति न धीर कैसी करति ढिठाई है।
रंग-ढंग दीसे बूझि परत कुरङ्ग-नैनी,
आज तेर अगन अनंग की चढ़ाई है॥

नयन सुधा में सनि सनि सरसन लागे,
कान परसन लागे नयन नवेली के।
आँगुरी को पोरन में लालिमा दिपन लागी,
गुन गरुआन लागे गरब गहेली के।
हरिऔध हरि हेरि हियरो हरन लागी,
चाहि चितवन लागी कोरक चमेली के।
मनु छबि छिति-तल पर छहरान लागी,
छुअन छवान लागे प्रेम अलबेली के॥

कुञ्ज में राजति ही मुख मंजु ते
कै कल कंजन की छबि औगुनी।
बात यह तहाँ तौ लों भई
नहिं जाहि रही मन माँहि करौं गुनी।
चौंकि परी हरिऔध को चाहि,
उमाहि चली धनि आकुल चौगुनी।
नौगुनी चारुता चपला भई,
लोचन-चंचलता भइ सौगुनी॥

मधुराई मनोहरता मुसुकानि मैं,
औचक आइ समाती नई।
रस की चतुराई हूँ में हरिऔध,
अनेक गुनी निपुनाई ठई।

मद छाके छबीली बिलासन हैं,
सुबिलासिता की वर बेलि वई।
छलरी मा छुटा अँखियान परैं,
छवि आननहूँ पैं कपूनी छई॥

श्रीफल कहे ते सुख होत सपने हूँ नाहिं,
तोख होत न्यि मैं न कदुक बखाने से।
कंचन कलस का कथान को उठावै कौन,
रति को सिधोरा कहे रहत लजाने से।
हरिऔध जामें बसि मत्त मन-भृंग मेरो,
कढ़त न दाने अजौं कौन हूँ बहाने से।
सोभा सने साहें सोहैं ससि लौं सु आनन के,
सरस उरोज ए सरोज सकुचाने से॥

छवि रावरी हेरि छबीली छकी,
सिगरे छल-छदन छोरै लगी।
अलबारली लाल निहारी लखे,
कुल कानि हूँ ते मुख मोरै लगी।
हरिऔध निहारि कै नैन सुहावनै,
देरन हूँ को निहोरै लगी।
तरुनाई तिहारी निहारि तिया,
उकतान भगी तून तोरै लगी॥

बान ए बान करै फिर क्यों,
सुनि तानन ही इन बानि बिगारी।
मोहि गयो मन मोहन पै तो,
नई तन हूँ मन सों मन वारी।
पै हयें बूझि परी ना अजौं,
हरिऔध की मौ रतियाँ यह न्यारी।
बावरी जैस रँगी रँग लाल मैं
मो अँखियान की पूतरी कारी॥

सुधियै नीकी लगै सब को भला,
वक्रता मोहन की कत दीजत।
नूतन लालिमा लाभ किये कत,
गोल कपाल की है छबि छीजत।
चूक परो न चलै हरिऔध पै,
नाहक ही इतनो कत खीजत।
लाल हौं यों ही निहाल भई,
अब लाल कहा अँखियान को कीजत॥

जीवन है सिगरे जग को,
लखि जीवत तेरे ही आनन ओर है।
प्रान है कामिनि को हरिऔध पै,
हेर्‌यो करै तव आँखिन कोर है।
भाग है कैसो तिहारो भटू,
इतनो पत जीवत मान मरोर है।
है घनश्याम पै तेरो पपीहरा,
है मन-चंद पै तेरो चकोर है॥

बैठी हुती मंदिर में कलित कुरंग नैनी,
जाको लखि काम कामिनी को मान हिलिगो।
क्यों हूँ कढ्‌यो तहाँ आइ साँवरो छबीलो छैल,
जाको गान तानन ते ताके कान पिलिगो।
मुख खोलि उझकि झरोखे हरिऔध झाँकि,
लाल सुंदरी को मंजु रूप ऐसो खिलिगो।
नीलिमा गगन में मगन ह्वै गयो कलंक,
आनन-उजास में मयंक निर मिलिगो॥

चलन चहत प्रान-प्यारो परदेश आली,
आतुर ह्वै हियरा हमारो सुधि लेवै ना।
चकि-चकि रहत चहूनिन चितै कै चित्त,
बदन बिरस ह्वै कै सुरति सरेसै ना।

हरिऔध प्यारे संग गवन पयारा ही मैं,
आपनी भलाइ पापी प्रान हूँ परेसै ना।
बिलखि बिलखि भरि-भरि बार बार बारि
नैनहूँ निगोरो आज नैन भरि दरसै ना॥

बावरी ह्वै जाती बार बार कहि बेदन को,
बिलखि बिलखि जो बिहार धरा रोती ना।
पीर उठे हियरा हमरो टूक टूक होत,
प्यारे प्राननाथ जो कसक निज खोती ना।
हरिऔध प्यारे के पधारि गये परदेस,
नैन नसि जात जो सपन संग सोती ना।
तन जरि जातो जो न अँसुआ ढरत आली,
प्रान कढ़ि जातो जो प्रतीति उर होती ना॥

चूमि चूमि प्यार ते उचारती बचन ऐसे,
जाते प्रेम प्रीतम को तोपै भूरि छाजतो।
मोहित ह्वै तेरे चोंच मोहि चारु चामीकर,
हरिऔध हीरा हरि हिय पै लगावतो।
ए रे कीर बोलत कहा है कमनीय बैठि,
मंजुल मनोज तेरे चरन जरावतो।
नैनन को तारो जौंन बड़ो अँखियान-वारो,
प्यारो प्रान वारो जो हमारो बैन आवतो॥

भोर भये पै पधारे कहा भयो,
मेरी सदा सुख ही की घरी है।
ए री कछू हरिऔध करे,
हमें तो उनकी परतीति खरी है।
बूझि बिचारि कहै किन बावरी,
पीर ही में कत जाति मरी है।
साँवरे प्रेम पगीनि परी नहिं,
मो अँखियाँ अँसुआन भरी हैं॥

रंग पिचकारी कर माँहि लीने आवत हैं,
ब्रज मैं जनात तू तो निपट हठीलो है।
नेकु मेरी बातन को भूलि ना करत कान,
होरी के गुमान मैं गजब गरबीलो है।
हरिऔध कहा लाभ अनरस कीने होत,
सुनम रस हूँ मन कैसो तू लजीलो है।
ऐ हो लाल या पै रंग डारिबो फबत नाँहिं,
गात-रंग ही सों बाको बसन रंगीलो है॥

नीर बरसानो छोरि गोकुल गई ही आज,
जान्यो ना गोपाल ऐसो ऊधम मचाय है।
सारी बोरि दीनी सारी गात करि लीनो लाल,
जैसो छल कीनो ताहि कैसे बतराय है।
हरिऔध अब तो न आपने रहे हैं नैन,
करि कै उपाय कौन इन्हैं समझाय है।
अंग-लाग्यो रंग तो सलिल सों छुड़ाय लैहैं,
नेह संग लाग्यो तासों कैसे छूटि पाय है॥

डारो रंग चाव सों हमारे इन अंगन पै,
कबहूँ कछू ना लाल भूलि हम कहि हैं।
बोरि दीनै सिगरी हमारी सारी केसर में,
मन में निनाद मानि मौन साधि रहि है।
हरिऔध अँखियाँ छकी हैं रावरी छबि मैं,
इन पै दया ना कीने क्यों हूँ ना निबहि हैं।
परिबो पलक को तो कैसहूँ सहत प्यारे,
परिबो गुलाल को गोपाल कैसे सहि हैं॥

ताकि कै मारत हो पिचकारी,
तऊ मन में तनकौ नहिं खीजत।
रंग में सारी भिगोय दई हम,
तासों उराहनो हूँ नहिं दीजत।

पै इतनी विनती हरिऔध,
मया करि क्यों हमरी न सुनीजत।
साँवरे रंग रँगी अँखियान कों,
प्यारे गुलाल ते लाल क्यों कीजत ॥

— ॥०॥ —